'जायसवाल जागृति'

संरक्षक

स्व. श्री हरिश्चन्द्र जायसवाल, दिल्ली
श्री जवाहर लाल जायसवाल, पूर्व सांसद
श्री अजय कुमार जायसवाल, नयी दिल्ली
श्री मती कविता जायसवाल, नोएडा
श्री पी. जायसवाल, नई दिल्ली
श्री रामप्यारे गुप्त, नई दिल्ली
श्री दयाशंकर जायसवाल, नई दिल्ली
श्री लोटन प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री हरिश्चन्द जायसवाल, बाली नगर, दिल्ली
श्री ओम प्रकाश आर्य, नई दिल्ली
स्व. श्री एस.पी गुप्त, नई दिल्ली
श्री त्रियुगी नारायण गुप्त, नोएडा
श्री जगराम जायसवाल, दिल्ली
स्व. श्री रामेश्वर दयाल कर्णवाल, नजीबाबाद
श्री भोला प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री पन्नालाल जायसवाल, अहमदाबाद
श्री सुधीर कुमार 'मनहर' जायसवाल, दिल्ली
श्री जयनारायण चौकसे, श्यामला हिल्स, भोपाल
स्व. श्री बी.डी. दखने, उद्योगपति, नागपुर
श्री आनन्द कुमार भमोरे, अमरावती (महाराष्ट्र)
श्री सत्यनारायण जायसवाल (सरपंच), नवाबगंज
श्री छोटेलाल गुप्त जायसवाल, दिल्ली
श्री शंकरलाल जायसवाल, दिल्ली
डा. सत्यप्रकाश जायसवाल, दिल्ली
श्री विजय वालिया, (फरीदाबाद)
स्व. श्री कुंदनलाल जायसवाल, गोरखपुर
श्री ललित जायसवाल, गाजियाबाद
श्री प्रकाश चौधरी, बड़ी सादड़ी, (चित्तोड़गढ़)
श्री राधेश्याम जायसवाल, गाजियाबाद
स्व. श्री गोवर्धनलाल जायसवाल, शामगढ़ (म.प्र.)
श्री रमेश जायसवाल, दिल्ली
श्री मेघराज प्रसाद, दिल्ली
श्री माखन चौधरी, (नोएडा)
श्री सुरेन्द्र कुमार किशनलाल जायसवाल (नांदेड़)
श्री संजीव कुमार चौधरी, दिल्ली
श्री स्वामीनाथ जायसवाल (छत्तीसगढ़)
श्री राजीव कुमार जायसवाल (कटिहार, बिहार)
स्व. श्री बद्रीप्रसाद जायसवाल, (गोरखपुर)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (गुड़गांव)
श्री प्रदीप कुमार जायसवाल (द्वारिका, दिल्ली)
श्री मुकेश रंजन जायसवाल (साहिबाबाद)
श्री किशोर जायसवाल (दिल्ली)
डॉ. अरुण कुमार गुप्ता (बंगलौर)
डॉ. श्रीमती आभा गुप्ता एवं श्री नितिन जी एन.आर.आई. (अमेरिका)
डॉ. अशोक चौधरी, संचालक, जनकल्याण एवं अध्यक्ष, इनटक
श्री विश्वमोहन प्रसाद (महाप्रबन्धक, एन.टी.पी.सी. नोएडा)

(शेष पृष्ठ 4 पर)

मूल्य 5 रु० प्रति

'जायसवाल जागृति'

(अखिल भारतीय संस्था के रूप में पंजीकृत सामाजिक संस्था 'जायसवाल जागृति', का सर्वाधिक लोकप्रिय त्रैमासिक मुख-पत्र)

वर्ष:29 श्रावण-आश्विन विक्रमी सम्वत् 2080 जुलाई-सितम्बर 2023 अंक: 2

अनुक्रमणिका

1.	प्रधान सम्पादक की लेखनी से "उपलब्धियों का त्रैमासिक"		4-5-6
2.	श्री माखन चौधरी जी को अतिरिक्त दायित्व	–बृज मोहन जायसवाल	6
3.	राजराजेश्वर श्री सहस्त्रबाहु कार्तवीर्यार्जुन का परिचय	साभार –कलचुरिआदि से अब तक	7-13
4.	एशियन गेम्स में भोपाल की कलार समाज की बेटी ने किया नाम रोशन	प्रधान सम्पादक	14
5.	प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने के उपाय	देशराज	14-15
6.	तुलसी	–शरत चन्द्र अग्रवाल	15
7.	घुटनों के दर्द के उपाय	साभार –योग दृष्टि	16
8.	आसनों का महत्त्व	–वेद प्रकाश	17-18
9.	योगासनों में आहार की भूमिका	–कुन्दन लाल	18-19
10.	क्या मैं शरीर का स्वामी हूँ	–योग मंजरी	19
11.	ज्ञान या विवेक	अवधेन्द्र कुमार	20
12.	दक्ष ने क्यों दिया नारद को शाप	आशुतोष गर्ग	20-21
13.	रामायण की प्रश्नोत्तरी	–मीनू गुप्ता जायसवाल, कार्यकारी सम्पादक	21-22
14.	कितनी तरह के श्राद्ध	साभार –अमर उजाला	22-24
15.	हम तो प्रकृति के उपासक हैं	–राघवेन्द्र	24-26
16.	'जल नहीं, तो कल नहीं' ये बात दिमाग में बैठा लीजिए	साभार –डॉ रमेश ठाकुर	26-27
17.	सबसे सुन्दर क्या है?	साभार –योग मंजरी	27
18.	दिशा	–संतोष कुमार तनेजा, परामर्शदाता, संकल्प	28
19.	युवाओं के लिए प्रेरणादायक संदेश	अजय जायसवाल-(युवा सचिव, जायसवाल जागृति)	29-30
20.	सीईओ की पाठशाला	–सत्या नडेला	30-31
21.	हिंदी: निज भाषा उन्नति अहे...	–दिवाकर पाण्डेय	31-32
22.	हिन्दी बोलकर देखिए-अच्छा लगेगा	साभार –अंजान	32-34
23.	अपनी हिन्दी	–बद्री प्रसाद पंचौली	34
24.	महिला को पूर्णता प्रदान करता है 'सिंदूरदान'	साभार –पूनम चौधरी गुप्ता अध्यक्ष	35
25.	दया करो: माँ: मुझे मत मारो	–सुरजीत सिंह	35
26.	बेटियों की पुकार, मैं स्त्री हूँ	साभार –योग मंजरी	36-37
27.	कहां हूं मैं	–अवधेन्द्र कुमार	37
28.	मानव मन को बुद्ध करें हम	साभार –संकल्प	38
29.	पथिक हूं मैं, हार नहीं मंजूर है	साभार –संकल्प	38
30.	श्री हरि किशन- जायसवाल समाज के प्रति सर्मपित एक व्यक्तित्व	प्रधान सम्पादक	39
31.	आजीवन सदस्यता आवेदन पत्र		40
32.	कुर्यात सदामंगलम (वैवाहिकी)		41-49
33.	जायसवाल जागृतिः महत्वपूर्ण सूचनाएं		50

सम्पादक-मंडल

मार्गदर्शन व आशीर्वादः स्वर्गीय श्री पन्नालाल जायसवाल जी
प्रधान सम्पादकः नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल
कार्यकारी संपादकः मीनू गुप्ता जायसवाल एवं अनिल कुमार जायसवाल
सम्पादक मण्डलः के.के. भगत व शिव प्रसाद जायसवाल, वैवाहिकी प्रभारी,
पत्रिका प्रेषण विज्ञापन व समन्वय प्रभारी : बृजमोहन जायसवाल
साहित्य प्रभारी : राधेश्याम बन्धु
समन्वय सहप्रभारी : जुगल किशोर गुप्ता

पंजीकृत कार्यालय
19-C, MIG, DDA FLATS, GULABI BAGH
NEW DELHI-110007 दूरभाष 011-41687467
(M 9818426123)

पत्रिका में प्रकाशित किसी लेख/रचना का उत्तरदायित्व स्वयं लेखक/रचनाकार का है, सम्पादक-मंडल अथवा प्रकाशक का नहीं।

श्री मदन भाई जायसवाल (अहमदाबाद)
श्री संजय जायसवाल (अहमदाबाद)
श्री कमल नारायण - सरलादेवी जायसवाल (इंदौर)
डॉ. ए.के. जायसवाल (एम्स दिल्ली)
श्री दीपक जायसवाल (नागपुर-महाराष्ट्र)
श्री हुकुमचंद गिरधारीलाल जायसवाल (इंदौर)
श्री ब्रजेश कुमार (एडवोकेट, दिल्ली)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (वरिष्ठ एडवोकेट, पटना)
श्री राजीव रंजन राजेश (एडवोकेट, दिल्ली)
श्रीमती सरला गुप्ता अ.भा.जा. सर्व. महिला अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता (अध्यक्ष, नेपाल कलवार कल्याण महासंघ)
श्री सुरेश प्रसाद चौधरी (गाजियाबाद)
श्रीमती सुनीता अखिलेश सुवालका (उदयपुर)
श्री नवीन प्रकाश जायसवाल (अलवर)
श्री सुनील कुमार जायसवाल (सांवेर रोड, इन्दौर)
श्री राकेश रमन जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजय कुमार जायसवाल (इलाहाबाद)
डा. एन. शिवासुबहनण्यन (तमिलनाडु)
श्रीमती रीता जायसवाल (वाराणसी)
न्यायाधीश डॉ. संतोष कुमार जायसवाल (मुंबई)
डॉ. अनिल कुमार जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजयपाल सिंह अहलूवालिया (सफीदों-हरियाणा)
श्री राजकुमार गुप्त (लखनऊ)
श्री मोहन सिंह अहलूवालिया (ग्वाला गद्दी, खेड़ी, रायपुररानी, पंचकुला)
श्री रमेश कुमार अहलूवालिया (रिवजराबाद, यमुनानगर, हरियाणा)
श्री अमृत गुप्ता पुत्र श्रीमती मंजू गुप्ता (दिल्ली)
श्री सत्य देव गुप्त,(जायसवाल) पटना
श्री के.डी. चौधरी (दिल्ली)
श्री नन्द लाल गुप्ता (दिल्ली)
श्री शंकर चौधरी, दिल्ली
स्व. श्री पन्नालाल जायसवाल, दिल्ली
स्व. श्री राजाराम जायसवाल, दिल्ली
श्री शिवकशोर जायसवाल, दिल्ली
श्री मनोज कुमार शाह, फरीदाबाद
श्री अशोक जायसवाल, कौशांबी
श्री कृष्ण कुमार भगत, वैशाली

अधिष्ठाता

स्व श्री मोतीलाल जायसवाल, नई दिल्ली
श्री विक्रमजीत सिंह, अहलूवालिया, नई दिल्ली
सरदार अजीत सिंह, अहलूवालिया
स्व श्री रमाकांत जायसवाल, मुम्बई
स्व श्री हंसराज जायसवाल, दिल्ली
श्री गुलाब सिंह एवं श्री अरुण कुमार जायसवाल, दिल्ली
श्री शिवनाथ गुप्ता, दिल्ली
श्री दीपनारायण जायसवाल, लखनऊ
स्व. श्री जवाहर लाल जायसवाल, नई दिल्ली
(स्वामी हरिहरानंद) श्री हरिश्चंद्र धनेटवाल

सम्पादकीय

आदरणीय सुधी पाठकगण,

सादर अभिवादन,

प्रधान सम्पादक की लेखनी से "उपलब्धियों का त्रैमासिक" जुलाई से सितम्बर का यह अंक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए हमेशा याद किया जाएगा। 23 अगस्त 2023 को भारत का चन्द्रयान चन्द्रमा के कक्ष में प्रवेश किया, 8 व 9 सितम्बर को भारत में आयोजित जी-20 समिट में अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, इटली, कनाडा तथा मिश्र सहित विश्व के 20 राष्ट्रध्याक्षों ने उपस्थित होकर जी-20 समिट में सम्मिलित सभी देशों का सामूहिक घोषणा पत्र की घोषणा की गयी जो कि अपने आप में भारत की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि का घोतक है। जी-20 समिट का भारत के विभिन्न राज्यों के पचास शहरों में 200 विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होना तथा सफल होना भारत की दूरदृष्टि तथा प्रबंधकीय क्षमता को दर्शाता है। जी-20 समिट के आयोजित महत्त्वपूर्ण तीन सेशन-वन अर्थ, वन फेमिली तथा वन फ्युचर पूरे विश्व को भारत की एक अलग पहचान बनाने में तथा विश्व गुरु बनने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। यह सभी तीनों सेशन जी-20 समिट के समापन कार्यक्रम नई दिल्ली में नव निर्मित सभी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित तथा परिपूर्ण "भारत मण्डपम" में आयोजित हुए जिसमें भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अध्यक्षता की तथा

रात्रिभोज सभी राष्ट्राध्यक्षों के लिए भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मु जी ने आयोजित किया। कार्यक्रम के माध्यम से भारत ने विश्व को "बसुधैव कुटुम्बकम्" का संदेश देने का सफल प्रयास किया।

अपनी विरासत की पहचान को आगे बढ़ाते हुए नयी "संसद भवन" का रिकार्ड समय में निर्माण कराकर 19 सितम्बर 2023 गणेश चतुर्थी के शुभ दिवस पर उद्घाटन करा कर देश में गुलामी के कालखण्ड से बाहर निकलने के लिए सराहनीय तथा सार्थक प्रयास किया। यह संसद भवन भविष्य की आवश्यकताओं को पूर्ण करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। संसद भवन सभी आधुनिक संचार यंत्रों, सुविधाओं तथा सुरक्षा यंत्रों से सुसज्जित है। नई संसद भवन निश्चितरूप से इतिहास के स्वर्णीम अध्याय के रूप में जुड़ गया।

चौथी उपलब्धि सबके लिए आश्चर्यजन तथा समाज की विषमता को दूर करने वाली ऐतिहासिक उपलब्धि है। जिस देश में नारियों को सम्मान देने का इतिहास रहा है, नारी को 'देवी' के रूप में पूजा जाता रहा है, उन्हीं के लिए पीछले 27-28 वर्षों से लम्बित आरक्षण के प्रस्ताव को नई संसद भवन में पहले प्रस्ताव के रूप में नारी शक्ति वंदन विधेयक 2023 प्रस्तुत किया गया जिसको लोक सभा ने बहुमत से तथा राज्यसभा ने सर्वसम्मति से पास किया। इस विधेयक को राष्ट्रपति जी ने भी त्वरित गति से स्वीकृति प्रदान कर दी। इस प्रकार नारी शक्ति वंदन अधि नियम 2023 के पारित होने के पश्चात् 33% महिला आरक्षण की व्यवस्था लोकसभा में हो गयी। यह अधिनियम एक ऐतिहासिक निर्णय हैं जिससे महिला सशक्तिकरण की राह पर महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा। वर्तमान लोकसभा में 15.21 प्रतिशत जबकि राज्य सभा में 13.02 प्रतिशत महिला सांसद हैं। लोकसभा में कुल 82 महिला सांसद ही है। इस विधेयक के पास होने के पश्चात् 181 सांसद लोकसभा में हो जाएंगी। राज्यों में 15 प्रतिशत से अधिक महिला विधायक नहीं हैं। यह राजनीति का चेहरा बदलने में भी सहायक होगा।

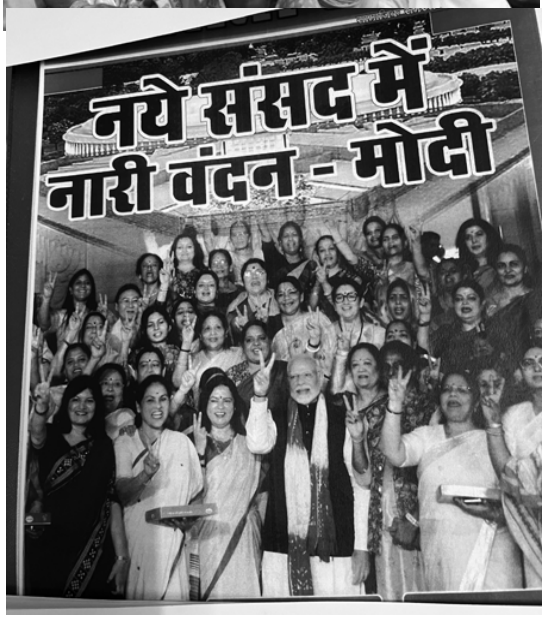

हमें राजनीति से उपर उठकर सोचना होगा, समाज को जागरूक करना होगा। बच्चों को अच्छी व उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करना होगा। आने वाला समय बदलाव व परिवर्तन का है। यदि हम सपनें देखते है तो सपनों को पूरा करने के लिए प्रयास भी करने होंगे, सोते-जागते हमेशा यह सोचना होगा कि कैसे आगे बढ़ना है।

चांद पर तिरंगा लहराना एक अनुठी उपलब्धि है, चांद के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला पहला देश भारत है, 23 अगस्त 2023 इतिहास का स्वर्णीम दिन बन गया! अब 23 अगस्त को प्रत्येक वर्ष **"अंतरिक्ष दिवस"** के रूप में मनाया जाएगा। चन्द्रयान-3 को चन्द्रमा पर उतरने के हम सभी साक्षी बनें, यह सभी के लिए गर्व का विषय है। जी-20 समिट का भारत वर्ष में सफल आयोजन कर देश के नेतृत्व ने सभी भारतीयों में एक नया विश्वास उत्पन्न किया है। नये संसद भवन का रिकार्ड समय में निर्माण व सभी आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण करना हमारे श्रमिकों तथा अभियंताओं की कार्यशैली व लगन को दर्शाता है। पुराने संसद भवन का निर्माण वर्ष 1921 में प्रारम्भ होकर 1926 में पूर्ण हुआ था तथा देश की स्वतंत्रता के पश्चात् वर्ष 1952 में संसदीय चुनाव में जीते नये सांसदो को संसद भवन के भारत के भाग्य निर्माण का अवसर प्राप्त हुआ। नये संसद भवन में पहला विधेयक नारी शक्ति वंदन विधेयक 2023 का पास होना, समाज में नारी शक्ति का विशेष सम्मान है। यह देश प्राचीन काल से ही मातृशक्ति का सम्मान करता रहा है। यह विधेयक अधिनियम का स्थान ग्रहण कर एक नयी सामाजिक क्रांति उत्पन्न करेगा।

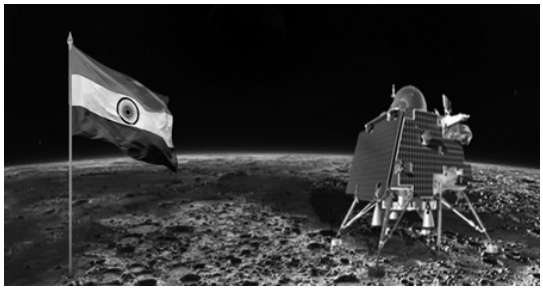

जायसवाल जागृति पत्रिका समाज के शैक्षणिक व आर्थिक दृष्टि से कमजोर व पिछड़े वर्ग के सर्वागीण विकास व उत्थान के लिए समर्पित है तथा इस संस्था की स्थापना इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया गया है अतः हम सभी का परम कर्तव्य है कि राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए समाज को नयी दिशा देने वाले कार्य करें।

जायसवाल जागृति के सभी सुधि पाठकों से विनम्र निवेदन है कि परिवार की महिलाओं तथा नये युवक व युवतियों को प्रेरित करने का कष्ट करें ताकि समाज व देश को नयी दिशा दी जा सके।

आप सभी सुधि पाठकों तथा शुभ चिन्तको से यह भी विनम्र अनुरोध है कि इस पत्रिका में प्रकाशित समाचारों, काव्य, सूचनाओं के सम्बन्ध में अपने महत्वपूर्ण विचारों से अवश्य अवगत कराने की कृपा करें ताकि इस पत्रिका में तदनुसार संशोधन, परिवर्तन करते हुए समाज के लिए और अधिक उपयोगी व सार्थक बनाया जा सके। आप के सुझावों से मुझे प्रेरणा भी प्राप्त होगी।

–नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल
प्रधान सम्पादक

श्री माखन चौधरी जी को अतिरिक्त दायित्व

श्री पंकज जायसवाल, कोषाध्यक्ष, जायसवाल जागृति की नौकरी में महत्त्वपूर्ण कार्यों तथा पारिवारिक में व्यस्तता के कारण आयकर रिटर्न तथा नए सदस्यों की सदस्यता शुल्क इत्यादि के समायोजन में विलम्ब हो रहा था। श्री पंकज जायसवाल जी के विशेष अनुरोध को ध्यान में रखते हुए श्री माखन चौधरी जी को वर्तमान उपाध्यक्ष दायित्व में जायसवाल जागृति के लेखा-जोखा के रख-रखाव का कार्य भी अस्थाई रूप से विशेष बैठक में दिया गया। श्री माखन चौधरी जी बहुत ही विनम्र, सरल तथा कार्यों के प्रति समर्पित व्यक्ति है, इन्होंने कई वर्षों तक कोषाध्यक्ष की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी को निभायी है तथा जायसवाल जागृति संस्था के कार्य-कलापों का गहन अनुभव भी है। मेरा विश्वास है कि अतिरिक्त दायित्व का निर्वहन भी पूर्ण निष्ठा से निभाएंगे।

–बृज मोहन जायसवाल
महासचिव

राजराजेश्वर श्री सहस्त्रबाहु कार्तवीर्यार्जुन का परिचय

ब्रह्म पुराण के श्लोक 171-174 में महर्षि नारद ने श्री सहस्त्रार्जुन का गुणगान करते हुए कहा है- "यज्ञ, दान, तप, पराक्रक व शास्त्र-ज्ञान में कृतवीर्य के पुत्र सहस्त्रार्जुन की गति को कोई राजा प्राप्त नहीं कर सकता है। ढाल, तलवार, धनुष-बाण धारण कर, रथ में स्थित हो, द्वीपदीपान्तर में विचरण करते हुए, योगी अर्जुन को सातोद्वीपों के मनुष्यों द्वारा देखा जाता है। प्रजा का पालन धर्मपूर्वक करते हुए महाराजा अर्जुन का द्रव्य कभी क्षय नहीं होता, अनेक रत्नों के धारणकर्त्ता चक्रवर्ती राजा के रूप में पशुपालक, क्षेत्रपाल थें। योग के प्रताप से वही मेघ रूप होकर वर्षा भी करते थे। उनके समय कोई रोग नहीं सताता था, न, ही कोई भ्रम में पड़ता था।"

मार्कण्डेय पुराण के अध्याय 17 के श्लोक 34 व 35 में महर्षि अंगिरा ने कहा है कि:- "न, तो कोई राजा सहस्त्रार्जुन के समान हुआ है, यज्ञ, दान, तप व युद्ध, चेष्टा किसी विषय में भी उनके समान होगा।"

हरिवंश पुराण के तैवीसवें अध्याय में श्लोक 41 में श्री सहस्त्रार्जुन की प्रशंसा में कहा गया है कि:- "अर्जुन सहस्त्र भुजाओं से युक्त थे सातों द्वीपों के चक्रवर्ती सम्राट हुए। उन्होने अकेले ही सूर्य के समान तेजस्वी रथ द्वारा सम्पूर्ण पृथ्वी को जीत लिया था।"

पद्म पुराण के अनुसार:- "राजा सहस्त्रार्जुन ने सातों द्वीपों व सातों महासागरों से घिरी, पूरी पृथ्वी को "क्षत्रियधर्म" अनुसार जीत लिया था। महाबली सहस्त्रार्जुन के सभी यज्ञों में पर्याप्त दक्षिणा बाँटी जाती थी, सब में स्वर्ण के स्तम्भ व वेदियाँ बनायी जातीं थीं, सब देवतागण सजधज कर विमानों में बैठकर प्रत्यक्ष दर्शन देते थे, "योगी" होने के कारण सहस्त्रार्जुन समय समय पर मेघ का रूप धारण कर वर्षा द्वारा प्रजा को सुख पहुँचाते थे।"

वायु पुराण में वर्णित है कि:- "मनुष्य योनि में पैदा होने वाला कोई भी, महाराजा कार्तवीर्य के यश, तपस्या, दान, पराक्रम, पांडित्य आदि में समानता नहीं कर सकता। उनके राज्य में किसी का द्रव्य नष्ट नहीं होता था, न, ही किसी को शोक, संताप होता है, अपने राज्य में वे स्वयं प्रजा, पशुओं, खेतों की देखभाल करते थे, योगबल से वर्षा करते थे, साथ ही समुद्र के वेग को रोकते थे।"

श्री वाल्मीकि निर्मित आर्षरामायण "आदिकाव्य" के उत्तराखण्ड के इकत्तीसवें सर्ग के (44 श्लोकों), बत्तीसवें सर्ग के (77 श्लोकों) व तैंतीसवें सर्ग के (23 श्लोकों) में विस्तृत वर्णन इस प्रकार किया गया है- "सुदूर रामायण काल में निमाड़ में एक शक्तिशाली राजा होने का पता चलता है, उसकी (कार्तवीर्य) की राजधानी माहिष्मती थी। यहां के महापराक्रमी शासक सहस्त्रार्जुन ने, उस रावण को, जिसने कुबरे, यम, व वरूण को जीता था परास्त कर बन्दी बना लिया, जिसे महर्षि पुस्तकालय के अनुरोध पर मुक्त किया"।

महाभारत के हरिवंश पर्व में- वैशम्पायन जी महाराजा परीक्षित को कार्तवीर्यार्जुन के यश के विषय में बताते हैं कि- "जो प्रतिदिन कार्तवीर्यार्जुन के जन्म का वृतान्त कहता या सुनता है, उसके धन का नाश नहीं होता, उसकी खोयी हुयी वस्तु भी मिल जाती है।"

श्रीकृष्ण भी राजराजेश्वर सहस्त्रबाहु कार्तवीर्यार्जुन के विषय में युधिष्ठिर से कहते है कि "सहस्त्रार्जुन, महाबली, पराक्रमी धर्मप्रिय, प्रजा, पशु, पालक, महानता का द्योतक है।" इसी तरह योगवशिष्ट के वर्णन से भी स्पष्ट होता है कि- "सहस्त्रार्जुन अपने घर में रहते हुये, अपने योगबल से सबके भय, कष्ट दूर करते थे।" श्री कृष्णदास खेमराज द्वारा प्रकाशित श्री हनुमान ब्रह्द उपासनाध्याय के पृष्ठ 50 पर श्लोक 51 व 52 में पवनपुत्र श्री हनुमान जी व कार्तवीर्य अर्जुन में समानता दर्शाते हुये कहा गया है कि- **"जो लोग श्री माहष्मिती नाथ श्री कार्तवीर्य एवं श्री हनुमान जी के बीच भेद मानते हैं, वह प्राणी कष्टमय जीवन बिताकर सहस्त्रों पाप के भागी होते हैं।"** जैन ग्रंथों में सहस्त्रार्जुन को **"सहस्त्रकिरण"** नाम से संबोधित किया गया है, जैन ग्रन्थ **"पउमचरिय"** (प्राकृत) के दसवें उद्देश्य में माहेश्वर महानगर के राजा सहस्त्रकिरण की जलक्रीड़ा का बहुत विस्तृत वर्णन किया गया है। एक अज्ञात लेखक ने श्री कार्तवीर्यार्जुन को **"अवधूत"** कहा है। जिसका अर्थ होता है- **"वह श्रेष्ठ पुरुष जो सांसारिक मोह-माया से दूर हो, अजर-अमर ब्रह्म का चिंतन**

करे, सुख-दु:ख, लाभ-हानि, हार-जीत जैसी भावनाओं से ऊपर उठकर सब के कल्याण की भावना रखे, कार्तवीर्यार्जुन भी ऐसे ही "संत सम्राट" थे, जिन्होंने पूरी पृथ्वी जीतकर धर्म का शासन चलाया।"- अज्ञात

जहां तक ओर समस्त धार्मिक ग्रंथों व पुराणों में कार्तवीर्य अर्जुन का यशगान, गुणगान मिलता है, वहां दूसरी ओर उनके विचारों की **"दृढ़ता"** व वचन के प्रति **"प्रतिबद्धता"** भी स्पष्ट झलकती है, ऐसे ही प्रकृति प्रेम, बड़ों के प्रति सम्मान, स्वाभिमान, वचनबद्धता की स्पष्ट छाप भी देखने को मिलती है जो उनके चरित्र के कुछ प्रसंगों से स्पष्ट होती है:-

महर्षि वशिष्ठ का श्राप एवं सहस्त्रार्जुन द्वारा स्वीकारोक्ति

एक बार सूर्य देव को अपने "तेज" नष्ट होने की चिंता हुई, उस समय संसार में कष्ट निवारण हेतु श्री सहस्त्रबाहु अर्जुन ही समक्ष थे। सूर्य देव ब्राह्मण का रूप रखकर, उनके पास पहुंचे किन्तु श्री सहस्त्रबाहु ने उन्हें पहचान लिया। सूर्यदेव ने भी श्री सहस्त्रबाहु से अपने तेज बढ़ाने हेतु भोजन स्वरूप **"खाण्डव वन"** की समस्त वनस्पति, वृक्ष व जड़ी-बूटियां आदि अग्नि में भस्म कर देने को कहा, किन्तु श्री सहस्त्रबाहु जी ने यह करते हुए मना कर दिया कि- "यही सारी वन सम्पदा मेरे द्वारा रक्षित है, मैं इसे नहीं जला सकता हूँ।" इसके उत्तर में सूर्यदेव ने कहा कि- "हे धर्म रक्षक प्रजा पालक प्रकृति प्रेमी महाराजा मैं आपको एक ऐसा दिव्य बाण प्रदान करता हूँ, जो मेरे तेज से स्वमेव जल उठेगा, जिससे समस्त वन-सम्पदा जल जायेगी, इससे मेरी तृप्ति हो जायेगी।" एक बार पुन: महाराजा श्री सहस्त्रबाहु ने निवेदन किया कि- "हरे-भरे सुन्दर वनों को जलाना विनाशकारी होगा।" किन्तु सूर्यदेव ने स्पष्ट कहा कि- "हे राजन मेरी तृप्ति भी संसार हित में कल्याणकारी है, मेरा तेजस्वी बना रहना तुम्हारी प्रजा व संसार के लिए आवश्यक हितकारी है, अत: तुम मेरे द्वारा प्रदत्त बाण से अपने धर्म का पालन करते हुये मेरी तृप्ति करो।" तब विवश होकर श्री सहस्त्रबाहुत ने सम्पूर्ण खाण्डव वन के ग्राम, नगर, आश्रम, तपोवन को दूसरे स्थान पर बसाया, समस्य जीव-जन्तु, वन प्राणियों को अपने तपोबल से दूसरे वन में स्थापित कर खाण्डव वन को सूर्यदेव द्वारा दिये गये बाण से जलाकर राख कर दिया, सूर्यदेव द्वारा चाहे गये भोजन से उन्हें तृप्त कर, चिन्ता मुक्त किया। किन्तु इस खाण्डव वन महर्षि वशिष्ठ का आश्रम भी था, जो अग्नि में जल गया। जब महर्षि वशिष्ठ अपनी तपस्या पूर्ण कर जल से निकले व अपने आश्रम को श्री सहस्त्रबाहु द्वारा जलाया हुआ जानकर क्रोधित होकर श्राप दे दिया कि- "राजन तुम्हें इसका दण्ड मिलेगा, भृगुकुल में उत्पन्न एक तपस्वी ब्राह्मण तुम्हारी सहस्त्र भुजायें काटेगा या फिर तुम्हारा वध करेगा।"

श्राप देने के पश्चात जैसे ही महर्षि को अपने तपोबल से विदित हुआ कि सूर्यनारायण की हठ से उनकी तृप्ति हेतु श्रीसहस्त्रबाहु ने लोक कल्याण हेतु खाण्डव वन जलाया था व श्री सहस्त्रबाहु श्री विष्णु के सुदर्शन चक्र अवतारी हैं, तो महर्षि वशिष्ठ को बहुत पछतावा हुआ और व श्राप वापिस लेने लगे। तब महाराजा श्री सहस्त्रबाहु ने विनम्रतापूर्वक महर्षि वरिष्ठ को भगवान दत्तात्रेय से प्राप्त उस वरदान का स्मरण कराया, जिसके अनुसार "अपनी मृत्यु अपनी अपेक्षा श्रेष्ठ पुरुष के हाथों मांगी थी, अत: मुझे क्षत्रिय धर्म की परम्परा का पालन करने के लिए यह श्राप स्वीकार करने दीजिये।" इस प्रकार श्री सहस्त्रबाहु ने महर्षि वशिष्ठ का श्राप स्वीकार किया।

राजधर्म का पालन व जमदग्नि ऋषि का वध

महर्षि जमदग्नि (जो परशुराम जी के पिताश्री थे) हैहय वंश के कुल पुरोहित थे, उनके पास एक कपिला कामधेनु (गाय) थी, एक बार सहस्त्रबाहु जी उनके आश्रम में उनके अतिथि बने, उन्हें कामधेनु पसंद आ गयी जिसे प्राप्त करने की अभिलाषा महर्षि जमदग्नि से व्यक्त की, जमदग्नि मुनि ने कामधेनु न देते हुये सहस्त्रबाहु का राज्य में विरोध आरम्भ कर दिया व पूर्णत: राजा के शत्रु हो गये। जमदग्नि के राज्य द्रोह से क्रोधित हो श्री सहस्त्रबाहु जी ने उन्हें कल पुरोहित के पद से हटा दिया साथ ही उन्हें राज्य की सीमा से बाहर जाने के आदेश दिया। लेकिन महर्षि जमदग्नि ने क्रोधित हो अपनी विज्ञान युक्त दिव्य मंत्र शक्तियों से हैहय "प्रजाजनों" के संहार की चेतावनी दी, इससे क्रोधित हो श्री सहस्त्रबाहु जी ने राजद्रोह के दण्ड में जमदग्नि का सिर काटकर अपने "राम-धर्म" का पालन किया।

जबकि "गणेश पुराण" में वर्णित है कि श्री सहस्त्रबाहु जमदग्नि को कपिला कामधेनु की मांग करते समय बताते हैं कि- "वह पृथ्वी के राजा हैं, पृथ्वी पर विद्यमान वस्तुओं के स्वामी हैं।" साथ ही यह चेतावनी भी देते हैं कि राजा की आज्ञा की अवहेलना करने पर मृत्यु दण्ड ही दिया जाता है। किन्तु जमदग्नि नहीं माने, तो राजा ने पुनः दूत भेजकर चेतावनी दी किन्तु फिर भी नहीं माने, और कपिला कामधेनु के पास जाकर रोने लगे तो कामधेनु ने मुनि से कहा कि- "मुनिवर संसार में दान की प्रथा युगों-युगों से है, यदि आप स्वेच्छापूर्वक मेरा दान करते हैं तो मैं राजा के साथ चली आऊँगी, नहीं तो कोई भी मुझे बलपूर्वक नहीं ले जा सकता है। मैं तुम्हें ऐसी सेना दूंगी जो राजा की सेना को परास्त कर सकती है।" साथ ही कामधेनु ने यह भी समझाया कि- "आप मोहमाया में न पड़े, मैं तुम्हारी कौन हूँ? तुम मेरे कौन हो? यह सम्बन्ध काल (समय) द्वारा बनाया जाता है, जब तक संयोग दृढ़ हैं, तभी तक आप मेरे और मैं आपकी हूँ। मन जिस पदार्थ को अपना मानता है, उससे दूर होने पर दुःख होता है, क्योंकि उस पदार्थ में प्राणी अपना अधिकार व स्वत्व मानता है। अतः मुनिवर आप जैसी आज्ञा करें।" मुनिवर ने कहा कि- "मैं स्वेच्छा से तुम्हें नहीं छोड़ सकता हूँ।" अर्थात सेना चाहिये। कपिला कामधेनु ने करोड़ों की संख्या में त्रिशूलधारी, धनुषधारी, गदाधारी सैनिकों की सेना प्रदान की। इस सेना व राजा की सेना के मध्य भीषण युद्ध हुआ, जिसमें श्री सहस्त्रबहु की सेना परास्त हो गयी।

श्री सहस्त्रबाहु जी पराजय के बाद श्री हरि की पूजा कर, पुनः सेना एकत्रित कर, कामधेनु लाने के उद्देश्य से मुनि ने आश्रम में प्रवेश करते हैं, उस समय कपिला कामधेनु द्वारा दी गई कोई सेना मुनि के पास नहीं थी। जैसे ही राजा ने बलपूर्वक कामधेनु को ग्रहण किया, वैसे ही मुनि युद्ध के विचार से आगे बढ़ते हैं, मुनि को युद्ध में आया देख राजा असमंजस में पड़ जाते हैं, सोचते हैं कि तपस्वी ब्राह्मण पर शस्त्र उठायेंगे तो लोक निन्दा होगी। वह सोच ही रहे थे कि जमदग्नि ने मन्त्रसिक्त शरों (बाणों) का आश्रम के चारों ओर कवच पेदा कर दिया, सहस्त्रबाहु की सेना को भी ऐसे ढक दिया कि सेना को सामने का कुछ भी दिखाई न दे।

श्री सहस्त्रबाहु जी ने जमदग्नि को सामने देखा तो रथ से उतरकर प्रमाण किया, आशीर्वाद लिया, पुनः रथ पर आ गये। युद्ध आरम्भ हुआ, दोनों ओर से भयंकर प्रहार हुये, लेकिन कोई भी सफल नहीं हुआ। अंततः श्री सहस्त्रबाहु ने भगवान दत्तात्रेय को स्मरण कर, श्री विष्णु, ब्रह्म, महेश के तेज का आह्वान किया, (जिसे आह्वान करने की शक्ति श्री विष्णु से दत्तात्रेय जी को व दत्तात्रेय जी से राजा श्री सहस्त्रबाहु जी को प्राप्त हुई थी।) सभी देवताओं ने देखा कि त्रिदेवों के तेज से बनी "महाशक्ति" मुनि को ओर बढ़ी उसने मुनि के वक्षस्थल में प्रवेश किया, जिससे मुनिवर के प्राण पखेरू उड़ गये। जब कपिला कामधेनु ने यह देखा तो वह विलाप करने लगी व अदृश्य हो गो-लोक चली गयी, उधर राजा ने कामधेनु की खोज की पर उसका पता नहीं लगा, राजा भी निराश हो वापिस चला गया।

श्री सहस्त्रबाहु एवं परशुराम युद्ध

अपने पिता जमदग्नि के वध का समाचार जब परशुराम जी को प्राप्त हुआ, तो उन्होंने श्री सहस्त्रबाहु जी को अपना शत्रु घोषित कर दिया। "ब्रह्म वैवत पुराण" के अनुसार परशुराम जी ने अपना दूत सहस्त्रबाहु जी के दरबार में भेजकर सूचित करवाया कि "भृगु अपने भ्राताओं समेत नर्मदा तट पर स्थित हैं, अतः अपने जाति बंधुओं समेत वहां चलकर युद्ध करो, वे 21 बार पृथ्वी को निर्भूप करेंगे।"

(श्लोक 3-4 "ब्रह्म वैवत पुराण")

यह चेतावनी जब सहस्त्रबाहु जी की धर्मपत्नी महारानी मनोरमा को विदित हुई तो उन्होंने अपने पति से आग्रह किया कि- "महाराज, भगवान परशुराम महाबली व श्री नारायण के अंश हैं, सृष्टि का संहार करने वाले जगत स्वामी शंकर जी के शिष्य हैं, उस परशुराम के साथ युद्ध की बात छोड़ दो।"

(श्लोक 43-44 "ब्रह्म वैवत पुराण")

किन्तु स्वाभिमानी व दृढ़ निश्चियी महाराजा ने महारानी को समझाते हुये कहा कि- "भगवान परशुराम नारायण का अंश व महाबली हैं, 21 बार पृथ्वी को निर्भूप करेंगे, यह उनकी प्रतिज्ञा कभी विफल नहीं हो सकती, अतः मेरा अंत उन्हीं के द्वारा होगा, यह सुनिश्चित है। सब जानकर भी में

उनकी शरण में कैसे जा सकता हूँ? क्योंकि स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए "अयश" मरण से भी अधिक दु:खप्रद होता है।"

(श्लोक 74, 75, 76 "ब्रह्म वैवत पुराण")

उधर परशुराम जी ने क्षत्रियों का नरसंहार प्रारम्भ कर दिया, जिस कारण परशुरामजी व सहस्त्रबाहु के मध्य भीषण युद्ध हुआ, अनेकों बार श्री सहस्त्रबाहु के तीव्र प्रहारों से वीर परशुराम आहत हुये, मन ही मन सहस्त्रबाहु जी की प्रशंसा की। युद्ध काल में ही महाराजा श्री सहस्त्रबाहु जी ने विचार किया कि यदि मैं निरन्तर युद्ध करता रहा तो युद्ध कभी समाप्त नहीं होगा, इससे न तो महर्षि वशिष्ठ जी का मन में स्मरण किया, उन्हें प्रणाम कर अपनी भुजाओं की प्रबलता को स्वयं ही कम कर दिया। लम्बे युद्ध के बाद परशुराम जी ने अपने दिव्य शक्ति से युक्त फरसे से श्री सहस्त्रबाहु जी की भुजाएं काटना प्रारंभ कर दिया, स्वयं स्वीकारे गये श्राप के प्रभाव व स्वयं द्वारा मांगे गये वरदान के कारण श्री सहस्त्रबाहु जी की भुजाएं सरलता से कटकर गिरने लगीं।

हजार भुजाओं के कटते ही महाबली श्री सहस्त्रबाहु जी के शरीर से एक "दिव्य ज्योति" प्रकट हुई, जिसका प्रकाश तीनों लोकों में फैल गया, जिसकी चमक से देवताओं की आंखें बंद हो गई, पलक झपकते ही वह ज्योति भगवान श्रीविष्णु के शरीर में लुप्त हो गई। लेकिन वायु पुराण के अनुसार, वह ज्योति माहिष्मती (महेश्वर) में स्थित श्री राजराजेश्वर सहस्त्रबाहुजी के समाधि स्थल पर विराजित "शिव-लिंग" में लुप्त हो गई। परशुराम जी भौचक्के होकर यह दृश्य देखते रहे फिर उन्होंने अपना दिव्य फरसा कंधे पर रखा, महाराजा श्री सहस्त्रबाहु को प्रणाम करते हुये वन की और प्रस्थान कर तपस्या में लीन हो गये।

परशुराम एवं श्री सहस्त्रबाहु के मध्य युद्ध का एक और अन्य कारण, जो कि डॉ. डी.आर. शर्मा ने- "परशुराम एक नई शोध दृष्टि" में उल्लेखित किया है कि- "श्री सहस्त्रबाहुजी अपनी कुशाग्र बुद्धि, स्वाभिमान निष्पक्षता के साथ शासन संचालित करते थे, जिसमें उनके स्वयं द्वारा लिये गये निर्णय अधिक होते थे"। इससे भृगुवंशियों की उस चाह को जरूर धक्का लगा, जिससे वे सहस्त्रबाहु अर्जुन को अपने हुकुम का गुलाम बनाकर रखना चाहते थे। इसलिये कपिला कामधेनु एक बहाना बनाया गया, वास्तविक कारण श्री सहस्त्रबाहु के प्रति भृगुवंशियों, (विशेषता: परशुराम जी) का द्वेष था। इसके पूर्व भी भृगुऋषियों ने अपने हुकुम न मानने वाले राजा बने, राम पुरूरवा, राजा नहुष आदि को राजपद से अलग किया था, किन्तु संभवत: वे श्री सहस्त्रबाहु के साथ ऐसा करने में समर्थ नहीं थे, यही "द्वेष-भाव" युद्ध का वास्तविक कारण रहा होगा।

राजराजेश्वर सहस्त्रार्जुन अपने युग के सर्वाधिक प्रतापी व लोकप्रिय सम्राट थे तथा लगभग सभी पुराणों में उनकी महिमा का गुणगान किया है। तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था में ब्राह्मण व क्षत्रिय ही समग्र समाज व साम्राज्य के नियंता होते थे, अत: इनके मध्य वर्चस्व की प्रतिस्पर्धा स्वाभाविक थी। ब्राह्मणों का सदैव यह प्रयास रहता था कि राजकाज व सामाजिक व्यवस्था उनके नियंत्रणाधीन रहे। उस समय श्री सहस्त्रार्जुन नृप-श्रेष्ठ थे और उनकी कीर्ति तीनों लोकों में फैली हुई थी जो भृगुवंशियों के लिए असह्य थी। चूँकि ज्यादातर पौराणिक गाथाएँ भृगुवंशी ब्राह्मणों ने लिखि हैं अत: उन्होंने महाप्रतापी सहस्त्रार्जुन की तुलना में परशुराम की श्रेष्ठता प्रमाणित करने के लिए सहस्त्रार्जून वध की काल्पनिक गाथा विकृत रूप में जोड़ दी है। संस्कृत साहित्य में अनेक विद्वानों ने प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में समय-समय पर नए अध्याय जोड़ने की बात कही है। अनेक विद्वानों ने कामधेनु गाय चुराना व जमदग्नि ऋषि के वध की घटना को असत्य व अतिरंजित माना है।

महाभारत में "अनुशासन पर्व" में उल्लेखित किया गया है कि जब सहस्त्रार्जुन श्री दत्तात्रेय की से वरदान प्राप्त कर लौट रहे थे तब देववाणी वायु ने सचेत किया कि-"ब्राह्मणों से सावधान रहें। कोई ब्राह्मण श्राप देगा। भृगुवंशियों से बड़ा खतरा है।" अर्थात भृगुवशी परशुराम से युद्ध की स्थिति पूर्व से निर्धारित थी जो सहस्त्रार्जुन के विष्णु लोक गमन की पूर्वपीठिका तय करती थी।

डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल की पुस्तक "हैहय वंश की गौरव गाथा" खण्ड-प्रथम में लिखित है कि कार्तवीर्यार्जुन का जन्म ऐसे समय हुआ जब ब्राह्मण राष्ट्र विरोधी तथा ध र्ममार्ग से च्युत होकर पाप कर्म में लीन हो गए थे। वे वेद शास्त्र की मर्यादा छोड़कर यज्ञ कर्म को अपनी जीविका

का साधन समझ कर दक्षिणा में धन का मोह करने लगे थे। सहस्त्रार्जुन से विवाद का कारण यह भी था।

लेकिन कुछ विद्वानों का मत है कि परशुराम जी व श्री सहस्त्रबाहु जी में कभी युद्ध हुआ ही नहीं इसकी पुष्टि देवी भागवत पुराण व महाभारत में आये प्रसंगों से होती है, महाभारत में यह उल्लेख है कि कृतवीर्य के पश्चात (सम्भवत: श्री सहस्त्रबाहु कार्तवीर्य अर्जुन के काल के बाद, क्योंकि उन्हें प्राप्त वरदान के अनुसार, उनके राज में कभी भी धन नष्ट नहीं होता था) आगे किसी काल में हैहयों को धन की आवश्यकता पड़ी तो उन्होंने अपने कुल पुरोहितों भृगुओं से धन की मांग की, किन्तु भृगुओं ने ध न देने से यह कहते हुये इंकार कर दिया कि उनके पास धन नहीं है, तदन्तर में किसी हैहय वंशी क्षत्रिय ने धरती खोदते समय किसी भृगुवंशी के घर से गढ़ा हुआ धन पा लिया। तब सभी क्षत्रियों ने क्रोधित होकर, भृगु वंशियों को अपमानित किया व यमलोक पहंचा दिया। यहां तक की भृगुवंशियों के गर्भस्थ बालकों की हत्या भी कर दी गई, जिससे भयभित होकर भृगुवंशी पन्तियां हिमालय की दुर्गम गुफाओं में जा छुपी।

"देवी-भागवत पुराण" में भी उल्लेख है कि परशुराम व श्री सहस्त्रबाहु के मध्य कभी यद्ध ही नहीं श्री सहस्त्रबाहु के परलोकवासी होने के बाद धन की खींचतान को लेकर "हैहय-भार्गव" संघर्ष का सूत्रपात हुआ। जिसमें अनेकों भृगुओं का संहार हुआ। यहाँ तक की महर्षि जमदग्नि का वध भी श्री सहस्त्रबाहुजी के पुत्रों द्वारा किया गया, यह तथ्य श्रीमद्भगवत पुराण में वर्णित है।

विभ्रम उत्पन्न करने वाली बातों का समाधान-

यह तो सत्य है कि परशुराम व हैहय वंशियों के बीच एक लम्बा निर्णायक युद्ध हुआ, जिसमें परशुराम विजयी हुये, इस युद्ध से कुछ भ्रामक प्रश्न व तथ्य भी बने, जिस पर स्पष्टीकरण आवश्कय है:-

1. क्या श्री सहस्त्रबाहु का वध हुआ?

लोगों की एक मान्यता व भ्रम यह भी है कि श्री सहस्त्रबाहु अर्जुन का परशुराम जी ने वध किया, इसलिये वे इससे आगे सोचते ही नहीं, किसी भी प्रसंग में अन्तिम निष्कर्ष श्री सहस्त्रबाहु का वध बताकर कथा समाप्त कर देते हैं, किन्तु वास्तव में युद्ध में श्री सहस्त्रबाहु परशुराम के हाथों मारे नहीं गये, अपितु वशिष्ठ जी के श्राप व दत्तात्रेय भगवान के वरदान की रक्षा हेतु स्वयं ने विष्णु लोक गमन किया। जिसकी पुष्ठि अग्रलिखित अनेक तथ्यों से होती है:-

(अ) कबी के "बीजक ग्रंथ"के आठवें शब्द की ग्यारहवीं पंक्ति में वर्णित है- "परशुराम क्षत्री नहीं मारे हूँ छल माया कीन्हा" अर्थात परशुराम ने छल, छदम, मायाजाल आदि अनुचित या मायावी उपाय करने के बाद भी क्षत्रिय (क्षत्रिय का अर्थ उस काल में राजा था इसलिये राजा सहस्त्रबाहु) को पराजित नहीं कर सके। वर्तमान में इसका साक्ष्य महेश्वर स्थित श्री राज राजेश्वर स्थिति श्री राज राजेश्वर की समाधि का मन्दिर है, इसे समाधि (वह स्थान जहां कोई अपनी इच्छा से मृत्यु या अन्त चुने) कहा जाता है, स्मारक (वह स्थान जहां किसी की मृत्यु उपरान्त अन्तिम संस्कार किया जाये, व उसकी स्मृति में स्मारक बनाया जाये) नहीं कहा जाता। इससे स्पष्ट है कि श्री सहस्त्रबाहु जी ने अपने पुत्र जयध्वज को राज्याभिषेक के बाद तपस्या आदि करने के उपरान्त यहां "योग समाधि" ली थी इसीलिये यह समाधि स्थाल पूजनीय मन्दिर कहलाता है, हिन्दू धर्म में स्मारक को पूजने की परम्परा नहीं है।

(ब) श्री सहस्त्रबाहु के संहार की मान्यता का खण्डन महाकवि कालीदास द्वारा लिखित- "रघुवंश" महाकाव्य का इंदुमति स्यंवर प्रसंग है, इसके पद 6/42 में कहा गया है जिसका भावार्थ है कि- "क्षत्रियों ने (राजा सहस्त्रबाहु ने) परशुराम के फरसे की तीखी धार को भी अग्नि देव की सहायता से, "कमल पत्र" की कोमल धार के तुल्य माना" क्योंकि इनकी राजधानी महेश्वर की रक्षा अग्निदेव सदा करते हैं, महेश्वर सूर्य देव (अग्नि) की पत्नी "स्वाहा" को तपोभूमि भी है, अत: महेश्वर में भी सहस्त्रबाहु को पराजित करना असंभव था।

(स) श्री सहस्त्रबाहु के संहार नहीं होने का तीसरा उदाहरण वायु पुराण का अप्रकाशित खण्ड माहिष्मती महात्म के अध्याय 13 में है- "जब सहस्त्रबाहु जी के 4 भुजाएं कटना शेष थीं तब उन्होंने सब देवताओं की प्रार्थना की व भगवान शंकर की आज्ञानुसार महाराजा सहस्त्रबाहु ने नर्मदा में स्नान किया, वहां उपस्थित भगवान शिव को प्रणाम कर, वहां स्थित शिवलिंग में समा गये"।

(द) श्री सहस्त्रबाहु का वध नहीं हुआ, इसका प्रमाण

तुलसीदास कृत रामायण के बालखण्ड में सीता स्यंवर में परशुराम जी के स्वयं उस कथन से मिलता है जब वह अपना फरसा दिखाते हुये लक्ष्मण जी से कहते है

-**"सहस्त्रबाहुभुज छेदन हारा। फरसु विलोक महीप कुमारा"**। इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि उनकी भुजाएं फरसे से काटी गयीं थी न कि उनका वध किया गया था।

(य) "ब्रह्म वैवर्त पुराण" अनुसार युद्ध में श्री सहस्त्रार्जुन ने परशुराम को अपने पराक्रम से अनेक बार मूर्छित किया। श्री विष्णु जी एवं शिवजी ने परशुराम को जीवित किया। श्री सहस्त्रार्जुन की दाहिनी भुजा पर हमेशा सिद्ध सुरक्षा कवच बंधा रहता था जिसके कारण श्री सहस्त्रार्जुन का संहार सम्भव ही नहीं था। शंकर जी द्वारा ब्राह्मण वेश ध ारण कर कवच दान में मांग लिया गया जिसके कारण से सहस्त्रार्जुन का बल कम हुआ।

उपर्युक्त तथ्यों से पूर्णत: स्पष्ट है कि परशुराम एवं श्री सहस्त्रबाहु के युद्ध में श्री सहस्त्रबाहु ने महर्षि वशिष्ठ के श्राप को पूरा करने एवं दत्तात्रेय भगवान से प्राप्त वरदान के फलस्वरूप दिव्य लोक को गमन किया।

2. क्या परशुराम ने 21 बार धरती को क्षत्रियों से विहीन किया?

डॉ. डी.आर.शर्मा- "परशुराम एक नई शोध दृष्टि" नामक ग्रंथ में लिखते हैं कि "पुराणों एवं महाभारत में बार-बार कहा गया है कि परशुराम ने 21 बार (अनेक बार) पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन कर दिया था।" इस कथन ने तत्कालीन भासिक (भाषा) प्रयोग को न समझने वाले लोगों को भ्रमित कर दिया है, उनके द्वारा क्षत्रिय का अर्थ "क्षत्रि" जाति मानकर यह कह देना कि- परशुराम ने 21 बार क्षत्रियों का संहार किया है। ऐसा सोचना अर्थ का अनर्थ होगा, वास्तव में शास्त्रों के अनुसार "क्षत्रिय" और "राजा" दोनों पर्यायवाची (समानार्थी) हैं, क्योंकि त्रेता युग में अथवा मनु स्मृति के अनुसार क्षत्रिय ही राजा हो सकता था, वेद एवं मनु स्मृति में अनेक प्रयोगों में क्षत्रिय को राजा के अर्थ में सम्बोधित किया गया है। किसी भी श्लोक में जहां क्षत्रिय संहार का वर्णन आया है, वहां "दुष्ट क्षत्रिय" शब्द का प्रयोग हुआ है। इसकी पुष्टि भागवत के प्रथम स्कंध में विष्णु भगवान के 24 अवतारों का वर्णन दिया गया है, उसमें परशुरामजी के वर्णन में लिखा गया है कि उन्होंने राजाओं को छत्र विहीन किया, जो ब्रह्म से दूर हो गये थे अथवा जिन्होंने स्वयं को ब्रह्म घोषित कर दिया था। वेद व्यास भी उनका उल्लेख दुष्ट, पापियों में करते हैं।

अत: पुराणों में अथवा महाभारत में जहां कहीं भी कहा गया है कि परशुराम ने पृथ्वी को अनेकों बार क्षत्रिय विहीन कर दिया, वहां यही समझना चाहिये कि श्री विष्णु-अवतार के रूप में, परशुराम ने दुष्ट, पापी, अत्याचारी, राक्षस स्वरूप, प्रजा घातक राजाओं का अनेक बार संहार किया था न कि क्षत्रियों (क्षत्रिय जाति) का। इसकी पुष्टि ब्रह्म वैवत पुराण के श्लोक 3 एवं 4 में इस वर्णन से होती कि "परशुराम 21 बार पृथ्वी को निर्भूप करेंगे" न कि "क्षत्रिय-जाति" विहीन करेंगे।

श्री सूर्यकांत बाली जो कि भारतीय संस्कृति के अध्ययनकर्ता व नव भारत टाईम्स के स्थानीय सम्पादक दिल्ली ने अपनी "भारत गाथा" पुस्तक में वर्णित किया है कि- "हमारी स्मृतियों के इतिहास में दर्ज यह हो गया है कि परशुराम ने भारत भूमि को 21 बार क्षत्रियों रहित कर दिया। क्या क्षत्रियों का 21 बार विनाश कोई एक योद्ध कर सकता है? क्या यह सम्भव है? नहीं-नहीं"

अत: समस्त पुराणों/वाल्मीकी रामायण, महाभारत श्रीदम भागवत गीता आदि ग्रंथों में भी श्री सहस्त्रबाहु जी की कर्तव्य परायणता, स्वाभिमान, राजधर्म पालन, प्रकृति प्रेम, वचन बद्धता, आदर भाव, वीरता की अनेक वर्णित घटनाएं उनके महान चरित्र को दर्शाति हैं।

इसलिए ही उपासना पद्धति सम्बंधी प्रसिद्ध ग्रन्थ महोदधि , जिसमें विभिन्न देवी, देवताओं जैसे शंकरजी, विष्णुजी, गणेशजी, हनुमानजी, देवी सरस्वती आदि के पूजन विधान व उससे प्राप्त होने वाले पुण्य का सविस्तार वर्णन है। उसी महोदधि ग्रन्थ के सत्रहवें तरंग (अध्याय) के सभी 117 श्लोक श्री सहस्त्रार्जुन की महानता सिद्ध करता है।

अत: सबको महोदधि के बारहवें श्लोक में वर्णित विद्यमान के अनुसार अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु, यह ध्यान करना चाहिए कि- "उदीयमान सूर्य जैसी आभा वाले, सब राजाओं से वंदित, अपने पाँच-पाँच सौ हाथों में धनुष बाण धारण करने वाले, कण्ठ से सोने की माला से सुशोभित, रथ में विराजमान, सुदर्शन चक्र के अवतार चक्रवर्ती महाराजा कार्तवीर्यार्जुन मेरी रक्षा करें।"

इसी अध्याय में श्लोक 116 व 117 में कहा गया है कि कार्तवीर्यार्जुन को दीप प्रिय हैं, अत: कार्तवीर्यार्जुन के

मंत्रोच्चर, पूजन के साथ दीपदान अवश्य करें, इस दीपदान का फल श्लोक 113 व 115 में इस प्रकार बताया है:-

"जो व्यक्ति प्रतिदिन अपने घर में दीप दान करता है, उसके समस्त विध्न एवं शत्रु दूर से नष्ट हो जाते हैं, वह सदैव विजयी होता है, पुत्र, पौत्र, धर्म, यश प्राप्त करता है।" आराध्य देव की पूजन, मंत्रोच्चर कर दीप-दान अवश्य करें।

श्री सहस्त्रार्जुन के परवर्ती वंशज

पुराणों में कार्तवीर्यार्जुन श्री सहस्त्रबाहु के सौ पुत्र बताए गये हैं। परशुराम से युद्ध में पाँच पुत्रों को छोड़कर शेष सभी वीरगति को प्राप्त हुए। ये पाँच पुत्र जयध्वज, शूरसेन, शूर, वृषण और मधु थे जो बल बलवान पराक्रमी व ध र्मात्मा थे। जयध्वज का पुत्र तालजंघ महाप्रतापी सम्राट था जिसकी महारानी का नाम सत्यभू था एवं माहिष्मती राजध ानी थी। इनके पुत्र "तालजंघों" के नाम से विख्यात हुए। कालान्तर में हैहयवंशी तालजंघ के पुत्र पाँच प्रमुख समूह में विभक्त हो गए। इनमें वीतिहोत्र, तुण्डिकेय (जिसे तुण्डकेर या शौंडिक्य भी कहा गया है), स्वयंजात, भोज और अवंति प्रसिद्ध थे। अवंति ने अवंतिका (उज्जैन) बसाया था। वीतिहोत्र की महारानी सुभद्रा (शुभगा) थी जिनके दो पुत्र मधु व अनन्त थे। कुछ ग्रन्थों में वीतिहोत्र के नौ पुत्र बताए गए हैं, किन्तु प्रमुख मधु व अनन्त ही माने गए। अनन्त के पुत्र दुर्जय, दुर्जय के पुत्र सुप्रतीक थे। सुप्रतीक के बाद की जानकारी अस्पष्ट है किन्तु इसी वंश परम्परा में कुछ पीढ़ियों के बाद राजा सिन्धुदेव (विष्णु देव) हुए जिनकी महारानी रिसुकी थी। आगे चलकर इनकी पीढ़ी में सरीश्रृप, सुषेण, सुकर्मा, कीर्ति, कौपण सेन व सुद्युम्न (इन्द्रनील) हुए। सुद्युम्न (इन्द्रनील) की रानी कृपावती थी। 'गर्ग संहिता' अश्वमेघ खण्ड अध्याय 14 में नीलध्वज के पिता के रूप में इन्द्रनील का नाम आया है। इन्द्रनील के तीन पुत्र नीलध्वज, हंसध्वज व मयूरध्वज थे जिनका गौरव प्राचीन ग्रन्थों में आख्यापित हुआ है। नीलध्वज का समय 3350 वि.सं. पूर्व (सन् 3407 ईस्वी पूर्व) माना गया है। राजा नीलध्वज की कुछ पीढ़ियों के बाद महाराजा सुबन्धु हुआ इनका समय 472 वि.सं (सन् 415-16 ईस्वी) बताया गया है। सुबन्धु के पुत्र काकवर्ण हुये (सन् 509 ईस्वी) और काकवर्ण के पुत्र कृष्णराज (सन् 550-575) थे। "श्री राजराजेश्वर कार्तवीर्यार्जुन पुराण" के भाग पाँच के अनुसार नीलध्वज के वंशजों में महान प्रतापी सम्राट कृष्णराज ने माहिष्मती और कालिंजर में कलचुरि राजवंशों की स्थापना की है।

इस प्रकार आराध्य देव श्री सहस्त्रबाहुजी ने चन्द्रवंश के हैहय वंश में जन्म लेकर, "धर्म" की स्थापना की। हैहय वंश के प्रमुख 18 वंशों में एक "कलचुरि वंश" (चेयदी वंश) के कलार, कलाल, कलवार समाज व उनके 1000 में से, अब तक प्राप्त 556 वर्गों, उपवर्गों, उपनामों के साथ विश्व में अनेक समाजों व देशों में भगवान श्री सहस्त्रबाहुजी को पूजते व मानते हैं, इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि- चीनी अपने को चन्द्रवंशी मानते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि उनके अराध्य (यू) की उत्पत्ति, उनकी माता के किसी "तारे" से समागम के कारण हुई है, सम्भत: ये बुध व इला ही होंगे। चीनी अपने को हैहयवंशी भी मानते हैं, हमारे हैहय वंश के जन्मदाता हैहय है (जिन्हें चीनी "ह्यु" कहते हैं) को अपना पूर्वज मानते हैं, इसकी पूर्णत: पुष्टि चीन में मिली भगवान सहस्त्रबाहु की प्रतिमा से होती है।

इसी तरह जापान में भी संस्कृत विद्वान निकी मिथुराका के अनुसार- प्राचीन वेदकालीन देवता सहस्त्रार्जुन को दया का देवता माना जाता है, उनका जापानी नाम (क्वानोन) है। जापान में इनकी कई सुन्दर व भव्य मूर्तियाँ हैं, जिनमें निक्को व नारा स्थित मन्दिरों की मूर्तियाँ दर्शनीय हैं, नारा स्थित संगतसुदों के मन्दिर में क्वानोन (श्री सहस्त्रबाहुजी) की 11 मुख वाली प्रतिमा है, इस मन्दिर को मार्च 733 ई. में जापान के सम्राट शोमू ने पूरा करवाया। इसी तरह टोक्यो जनपद में अशाकुंभ नामक स्थान पर स्थित क्वानोन (श्री सहस्त्रबाहु) का मन्दिर जापान का प्रमुख तीर्थस्थल है। नेपाल के अमलेशगंज मार्ग पर परवानीपुर सेमरा के बीच लगभग 8 किमी. पूर्व की और राजराजेश्वर कार्तवीर्यार्जुन का प्राचीन मन्दिर भी उनकी व्यापकता को दर्शाता है।

इन प्रमाणों से स्पष्ट होता है कि हमारे आराध्य श्री सहस्त्रबाहु कार्तवीर्यार्जुन न केवल अपने कार्यकाल में 14 द्वीपों के विजेता चक्रवर्ती सम्राट थे, बल्कि आज भी विश्व के अनेक भागों में पूज्य हैं, इसलिये कह सकते हैं कि-

कार्तवीर्य दीपक नहीं, वे थे दिनकर दिव्य।
जिनकी किरणों से हुआ, आलोकित सारा विश्व।

साभार –कलचुरि-आदि से अब तक

एशियन गेम्स में भोपाल की कलार समाज की बेटी ने किया नाम रोशन

पदम चौकसे की पुत्री आशी चौकसे के द्वारा चीन में सम्पन्न हुए एशियाई गेम्स में, दो सिल्वर मेडल एवं एक कांस्य मेडल जीतकर भोपाल ही नहीं संपूर्ण देश और परिवार एवं कलार समाज को गौरांवित किया। इस अवसर पर उनके भोपाल आगमन पर राजा भोज एयरपोर्ट पर कलार समाज के सामाजिक सदस्यों ने भारी संख्या में पहुंचकर उनका भव्य स्वागत किया व बधाई शुभकामनाएं दीं और उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उक्त जानकारी सुधारकर राऊत कलार समाज भोपाल ने एक विज्ञप्ति में दी। आशी चौकसे की उपलब्धि हमारे समाज के नए युवको व युवतियो के लिए एक प्रेरणा है। हमें अपने बच्चों को खेल के प्रति उत्साहित करना चाहिए साथ ही उन्हें यह अवसर प्रदान करने के लिए अच्छे सुस्सजित खेल स्टेडियम में प्रवेश करानें का प्रयास करना चाहिए। अध्ययन के साथ ही साथ यदि बच्चें खेल स्पर्धाओं में भाग लेते हैं तो उन्हें राष्ट्रीय स्तर के खेलों में अपना हुनर दिखाने का निश्चित रूप से अवसर मिलेगा। पीछले दस वर्षों से भारत सरकार के खेल मंत्रालय द्वारा खेलों के प्रति काफी उत्साहवर्धक कार्य कर रही हैं। चाहे एशियन गेम हो या कॉमन वेल्थ गेम हो या पैरा-ओलम्पिक गेम हो, सभी खेलों में देश के युवा खिलाड़ियों ने अपनी पूरी उर्जा लगाकर खेलों में भाग लिया तथा ढेर सारे गोल्ड, सिल्वर व ब्रोन्ज मेडल भी जीतकर भारत देश का नाम रौशन किया है।

प्रधान सम्पादक

प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने के उपाय

शरीर की रोगों से लड़ने की शक्ति को प्रतिरोधक शक्ति कहते हैं। बाहरी वातावरण में बदलाव आने पर शरीर में प्रवेश करने वाले विषाणुओं, कीटाणुओं या वायरस पर आक्रमण कर उन्हें नष्ट करने वाली शक्ति प्रतिरोधक शक्ति कहलाती है। हमें यह शक्ति जन्म से प्राप्त होती है। इसे हम सुरक्षा-तंत्र भी कहते हैं।

इसके अन्तर्गत, हमारे शरीर की त्वचा, शरीर में बनने वाले कई प्रकार के स्राव, एन्जाइम्स, श्वेत रक्त कणिकाएं, कुछ विशेष प्रकार के प्रोटीन में प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। जैसे ही बाहर से शरीर में विजातीय तत्व प्रवेश करते हैं, हमारे शरीर की प्रतिरोधक शक्ति उस पर आक्रमण कर देती है, जिसका शरीर से उत्सर्जन प्रणाली द्वारा निष्कासन कर दिया जाता है और इस प्रकार हम स्वास्थ्य को प्राप्त करते हैं।

प्रतिरोधक शक्ति में सबसे अधिक योगदान श्वेत कणिकाओं में उपस्थित न्यूट्रोफिल्स तथा मोनोसाइट का होता है।

हमें स्वस्थ रहने के लिए अपनी प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाना होगा। आज का व्यक्ति जिस गति से अपनी जीवनी-शक्ति का व्यय करता है, वह उसे उस गति से अर्जित नहीं करता है, जिसके कारण उसकी जीवनी-शक्ति घटने लगती है। जब शरीर के अंगों में जीवनी-शक्ति घटने लगती है, तो शरीर में विजातीय पदार्थ संचित होने लगते हैं, जो शरीर में रोगों का कारण बनते हैं।

यदि हम प्राण ऊर्जा का अपव्यय रोक दें तथा यम, नियम, आसन, प्राणायाम आदि का नियमित अभ्यास करें तो हमारी प्रतिरोधक क्षमता मजबूत बन सकती है। प्रतिरोध क शक्ति को बढ़ाने के लिए एक व्यक्ति नीचे दिए गए उपाय अपना सकता है –

1. आराम व सुव्यवस्थित जीवन - भाग-दौड़ व प्रतिस्पर्धा के जीवन में बनने वाले तनाव से प्रतिरोधक शक्ति कमजोर होती है। यदि हम तनाव रहित होकर सुव्यवस्थित जीवन जीते हैं, जिसमें कार्य करने के साथ उचित विश्राम का भी स्थान हो तो हमारी प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है।

2. निद्रा - प्रगाढ़ नींद प्रतिरोधक क्षमता का प्रतीक है। नींद स्वयं एक औषधि है। प्रगाढ़ नींद में हमारी प्रतिरोधक शक्ति का विकास होता है। एक व्यक्ति को 6 से 7 घंटे की नींद लेनी चाहिये तथा सोने के घंटे मध्य रात्रि से पूर्व व पश्चात् के बराबर-बराबर होने चाहिए। योग नींद को प्रगाढ़ बनाने में सहायक है।

3. धूप - प्रतिरोधक शक्ति को अर्जित करने का दूसरा प्रमुख साधन धूप है। जिस प्रकार पौधे को अंधेरे कमरे में रखने पर वह मुरझा जाता है, उसी प्रकार, जब शरीर को बन्द कमरों, ए.सी. कार या ए.सी. दफ्तर में ही रखा जाता है अर्थात् उसे धूप से बचाया जाता है तो ऐसा करने पर शरीर की प्रतिरोधक शक्ति घटने लगती है। प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने के लिए प्रतिदिन धूप का सेवन करना अनिवार्य है। प्रतिदिन 20 मिनट की धूप शरीर को स्वस्थ रखने में सहायक है। जब हमारी त्वचा सीधे धूप के सम्पर्क में आती है तो शरीर में विटामिन डी का निर्माण उचित मात्रा में होता है, जो हमारी हड्डियों को स्वस्थ रखते हुए हमारी प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने में सहायक है।

4. वायु - वायु शरीर से कार्बन व अन्य विजातीय पदार्थों को बाहर निकाल कर हमारी प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाती है। अतः हमें खुले वातावरण में शरीर को वायु स्नान कराते रहना चाहिये। जैसे ढीले वस्त्र पहनना, मकान के खिड़की दरवाजे खुले रखना, पार्क में सैर करना, रात्रि में बन्द कमरे में न सोना। ऐसा करने पर हमारी प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है।

5. जल - जल प्रतिरोधक शक्ति का एक श्रेष्ठ साधन है। जल शरीर से मल व अन्य विजातीय पदार्थों को बाहर निकाल कर हमारी प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाता है। प्रातःकाल उषा पान करना, प्रतिदिन 10 से 12 गिलास जल का सेवन करना, भोजन से एक घंटा पहले व एक घंटा बाद पानी का सेवन करना आदि शरीर की प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने में सहायक हैं। शरीर की प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने में सहायक हैं। शरीर की बाहरी शुद्धि में भी जल से स्नान करके आरोग्यता व स्फूर्ति को प्राप्त किया जाता है। यदा-कदा शुद्ध साधारण जल या औषधीय जल का एनीमा लेने से भी शरीर की प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है।

साभार –देशराज

तुलसी

तुलसी का पौधा (Holy Basil Plant) धार्मिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है। इसे पवित्र और लाभकारी माना गया है। आयुर्वेद में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। तुलसी के पौधे में एक प्रकार का तेल होता है, जो वायुमंडल में हवा के बहाव से घर की दूषित वायु को युद्ध करने में सहायक होता है। मान्यता है कि तुलसी का पौधा लगाने से घर में सुख-समृद्धि आती है। मॉरीशस में घर के प्रेवश द्वार पर लगा तुलसी का पौधा इस बात का प्रतीक है कि वह एक सुसंस्कृत घर है। मन्दिरों में तुलसी-युक्त जल, प्रसाद के रूप में दिया जाता है। कहीं-कहीं, देह छोड़ने पर तुलसी-युक्त जल मृतक के मुँह में डाला जाता है।

तुलसी के औषधीय गुण

- तुलसी में शक्तिशाली ऑक्सीडेंट होते हैं, जो हमारे रक्तचाप के स्तर और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रण में रखने में मदद कर सकते हैं। अतः तुलसी का नियमित सेवन हृदय को स्वस्थ रखने में सहायक है।
- तुलसी के पत्तों में शरीर को डीटॉक्स करने के अर्थात् शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने के गुण हैं।
- तुलसी से रक्तशर्करा के स्तर को कम करने में मदद मिलती है। अतः तुलसी का उपयोग मधुमेह रोग में लाभकारी है।
- तुलसी के पत्ते विटामिन ए, सी, के कैल्शियम, मैग्नीशियम, जिंक, फॉस्फोरस, लोहा और पोटाशियम जैसे खनिजों से भरपूर होते हैं। इसमें फाइबर भी अच्छी मात्रा में होता है। अतः तुलसी हमें अनेक रोगों से बचाने में सक्षम है।
- तुलसी में एंटी-बैक्टीरियल, एंटी वायरल और एंटी-फंगल गुण होते हैं, जो हमें कई तरह के संक्रमणों से बचाते हैं।
- खांसी, जुकाम और बुखार में तुलसी के पत्तों का रस, अदरक का उस और काली मिर्च के पाउडर को शहद में मिलाकर चाटना निश्चित रूप से लाभकारी पाया गया है।
- तुलसी और अदरक उबालकर पीने से थकान और तनाव दूर होते हैं।

साभार –शरत चन्द्र अग्रवाल

घुटनों के दर्द के उपाय

आज के आधुनिक युग में हर व्यक्ति अपने को बहुत व्यस्त मानता है, भले ही वह सुबह 11 बजे सोकर उठता है। उसे अपने स्वास्थ्य के बारे में चिंता तो है कि मैं कैसे स्वस्थ रहूँ लेकिन आलस्य व पैसे के लालच की आकांक्षा उसे स्वास्थ्य के बारे में सोचने का आभास नहीं होने देते हैं। और वह धीरे-धीरे बीमारियों का शिकार हो जाता है। तब उसे महसूस होता है कि काश मैं सुबह उठकर टहल रहा होता या योग करता तो आज मेरी यह हालत न होती है।

इन्हीं सब बीमारियों में उसको घुटने का दर्द भी सताने लगता है जिससे उसको चलने-फिरने, काम करने में, बैठने में, सीढ़ियों पर चढ़ने-उतरने में पेरशानी होने लगती है। आखिर वह पेरशान होकर डॉक्टर की शरण में जाता है। पहले तो डॉक्टर उसको अनेक टैस्ट कराने के लिए कहते हैं फिर उसको बताते हैं कि आपके घुटनों में जो ग्रीस (कार्टिलेज) है, वह धीरे-धीरे खत्म हो रही है और उसको घुटनों का ऑपरेशन कराने की सलाह देते हैं। कहावत है कि मरता क्या नहीं करता उसको घुटनों का ऑपरेशन कराना ही पड़ता है। लेकिन वह जिंदगी की वास्तविक सुविधाओं से वंचित हो जाता है। वैसे तो घुटनों में दर्द होने के बहुत से कारण हैं। जिनमें कुछ का विवरण इस प्रकार है:-

1. आलसी जीवन। शारीरिक परिश्रम न के बराबर करना।
2. अनियमित खाना व सोना। तला, भुना भोजन नित्य करना।
3. रात को सोते समय टांगों को मोड़कर सोना।
4. जंक फूड खाना।
5. एक ही जगह कई घंटो तक बैठे रहना।
6. शरीर का ज्यादा वज़न।
7. घुटनों में कैल्शियम का कम होना।
8. वृद्धावस्था।

उपाय व आसन :-

1. टांगों की रोज सूक्ष्म क्रियाएं करें जैसे टांगों को सीधाकर बैठें फिर अलग-अलग टांगों को साइकिल की तरह चलाएं।
2. उपरोक्त क्रिया आप लेटकर भी करें जिससे आपकी नसें पूरी तरह प्रभावित हो जायें।
3. मकरासन के कई प्रकार हैं इन आसनों को भी आप विधि अनुसार करें तो घुटनो के दर्द में आराम मिलेगा। गति वाले आसन, उत्कट (कुर्सी) आसन करें। मेरू आकर्षण आसन, त्रिकोणासन करें। खड़े होकर ताड़ासन करें।
4. शुरू-शुरू में आलथी-पालथी लगाकर बैठें फिर धीरे-धीरे वज्रासन में बैठने का अभ्यास करें।
5. कैल्शियम की कमी को दूर करने के लिए रोज दूध का सेवन करें।
6. नित्य चार-पांच अखरोट (छीलें) खायें। क्योंकि अखरोट में विटामिन ई ज्यादा होता है।
7. रात को सोते समय टांगों को सीधा करके सोयें।
8. सात्विक, हल्का, कम मिर्च मसाले का भोजन करें।
9. घुटनों पर सरसों का तेल लगाकर मालिश करें तथा ठंडे गर्म का सेंक करें। दो बर्तनों में से एक में ठंडा और दूसरे में गर्म पानी रखें। उनमें दो तौलिए डाल दें। तीन मिनट गरम तौलिया तथा एक मिनट ठंडा तौलिया घुटनों पर रखें। अन्त में ठंडे तौलिये को रखकर समाप्त करें। यह 15-20 मिनट तक करें। लाभप्रद होगा।

साभार -योग दृष्टि

आसनों का महत्त्व

आसन शब्द का अर्थ है और सुख-पूर्वक स्थिति। स्थिर सुखम् आसनम्। शरीर की स्थिर स्थिरता शरीर और मन की आवश्यकता है तथा इसे गुण के रूप में देखना चाहिए। मन अपनी चंचलताओं के कारण घुमक्कड़ प्रवृत्ति का है, जो शरीर को स्थिर नहीं रहने देता। शरीर और मन एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। यदि शरीर यंत्र है तो मन उसका नियंत्रक है। ये दोनों परस्पर संबंधित हैं। आसनों के अभ्यास से शरीर की दृढ़ता और स्थिरता प्राप्त होती है। मन की घुमक्कड़ प्रवृत्ति धीमी पड़ती है।

स्वस्थ मन एवं शरीर के अभाव में कुछ भी नहीं किया जा सकता। मानसिक तनावों और शारीरिक अस्वस्थता के कारण ही रोग उत्पन्न होते हैं। आसन शरीर तथा मन की दशा सुधार कर शरीर को रोगों से लड़ने की क्षमता प्रदान करते हैं। शरीर में बहुत कुछ स्वयं का उपचार कर लेने की क्षमता होती है। अगर शरीर अस्वस्थ है और मन तनावपूर्ण है, तब शरीर की रोग-निरोधक शक्ति कम हो जाती है। आसनों के अभ्यास से ही मानसिक व भावनात्मक स्थिरता बनने लगती है।

जीवन में अत्यधिक मूलभूत एवं महत्वपूर्ण वस्तु उत्तम स्वास्थ्य है। उत्कृष्ट स्वास्थ्य के तीन घटक हैं-शरीर, मन और चेतना। योगाभ्यास एकमात्र ऐसी प्रणाली है, तो तीनों को एक साथ प्रभावित करती है। इसलिये यौगिक क्रियाएं व्यापक रूप से स्वास्थ्य प्रदान करने हेतु प्रभावकारी हैं। अत: आसनों को केवल शारीरिक व्यायाम समझें। वास्तव में इनका प्रयोजन अत्यन्त विशाल आसन जीवन का विज्ञान है, जिसके अभ्यास से और, मन और चेतना में स्थिरता और एकता विकसित होती है तथा साधना की दिशा निर्दिष्ट होती है।

1. आसन विज्ञान में सबसे प्रथम है आकुंचन-संकुचन अर्थात् शरीर को खींचना और ढीला करना। खींचने की सभी क्रियाएं श्वास भरकर तथा सिकोड़ने की क्रियाएं श्वास निकाल कर करनी होती हैं। इससे शरीर के जोड़ों, मांसपेशियों, नस-नाड़ियों में ऐंठन और अकड़न दूर होती है तथा वे लचीली बनती हैं। आसन मांसपेशियों का खिंचाव करके उन्हें स्वस्थ बनाते हैं तथा शरीर से जहरीले पदार्थ बाहर निकालते हैं।

2. दूसरा, आसनों से शरीर की विभिन्न प्रणालियों-जैसे रक्त परिसंचरण, स्नायु-तंत्र, श्वसन, पाचन- निष्कासन, अन्त: स्रावी प्रणाली में सामंजस्य स्थापित होता है। शरीर की प्रत्येक प्रणाली में अनेकों अंग मिलकर कार्य करते हैं। आसनों के अभ्यास से शरीर के अंगों और प्रणालियों में तादात्म्य स्थापित होता है। प्रणालियों में एकरूपता बन जाने से शरीर के कार्य सरलता से पूरे हो पाते हैं।

3. तीसरा, अन्त:स्रावी और पाचन प्रणाली में अनेकों ग्रन्थियां शरीर में स्राव छोड़ती हैं। ये सभी ग्रन्थियाँ अपने स्त्राव शरीर में निश्चित मात्रा तथा निश्चित समय पर उत्पन्न करती हैं। इन प्रणालियों के आपसी रस-स्रावों में और इनके कार्य-कलापों में सामंजस्य का होना जरूरी है। शरीर की ये प्रक्रियाएं अत्यन्त जटिल हैं। इनमें किसी तरह की अव्यवस्था आ जाने से प्रणाली के सारे कार्य-कलाप अस्त-व्यस्त हो जाते। हैं। लेकिन आसनों के अभ्यास से प्रत्येक ग्रन्थि संतुलित हो जाती है। वे न तो निष्क्रिय होने पाती है और न ही आवश्यकता से अधिक सक्रिय।

4. चौथी बात यह है कि आसनों से श्वसन प्रक्रिया में परिवर्तन आता है। तेज और अनियमित श्वास शरीर और मन के तनावों के संकेत हैं। गहरी, धीमी व लयबद्ध श्वास शरीर और मन को स्वस्थ करती है। आसनों के अभ्यास से धीमी और गहरी श्वास की आदत बनती है। इससे प्राणायाम और मानसिक लाभ होता है और भावनात्मक संतुलन प्राप्त होता है।

5. आसनों का अभ्यास प्राणों का प्रवाह अबाधित बना देते हैं। यह आसनों का अति सूक्ष्म प्रभाव होता है। हमारे संपूर्ण शरीर में तथा उसके चारों ओर ऊर्जा का एक क्षेत्र रहता है। यह ऊर्जा शरीर के अन्दर और उसके चारों ओर निश्चित मार्गों पर घूमती है। जब प्राणिक नाड़ियां बाधित हो जाती हैं, तब शारीरिक और मानसिक गड़बड़ियां उत्पन्न होती हैं। इससे शरीर और मन दोनों रोगी हो जाते हैं।

6. हमारे दृष्टिकोण और भावनाएं हमारी शारीरिक क्रियाओं में झलकती हैं। जैसे, क्रोध आने पर हमारे कंधों की गति का असामान्य होना, परेशानी में त्यौरियां चढ़ जाना, उत्तेजित होने पर श्वास जल्दी-जल्दी लेना और प्रसन्न होने पर शरीर का हल्का और लचीला हो जाना। ये सभी हमारे भावनात्मक और मानसिक दृष्टिकोण हैं, जो

हमारे शरीर पर झलकते हैं। शरीर और मन एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं। आसनों के अभ्यास से शरीर और मन मजबूत, हल्के, लचीले और पीड़ा मुक्त होते हैं।

7. आसनों के अभ्यास में जागरूकता का बहुत महत्व है। आसन करते समय इस बात का पूरा-पूरा पता होना चाहिए कि आप क्या कर रहे हैं। मन इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए। उचित ढंग से सांस लेना और मन को चिन्ताओं से मुक्त रखना चाहिए। आसन, शरीर और मन को रोग मुक्त रखने के लिये आवश्यक और उपयोगी हैं।

उपर्युक्त सभी बातें एक-दूसरे से संबधित हैं। आसनों के नियमित अभ्यास से साधक अपने शरीर और मन का स्वामी बन जाता है। भारतीय योग संस्थान की योग साध ना पद्धति विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। इस पद्धति को अष्टांग योग के हरेक पहलू को ध्यान में रखकर अनेक वर्षों के अनुभव से विकसित किया गया है। आसनों का प्रतिदिन क्रमबद्ध अभ्यास एक साधारण व्यक्ति को योगाभ्यासी बना देता है।

–वेद प्रकाश

योगासनों में आहार की भूमिका

सभय, सेहत और संबंध इन तीनों पर कीमत का लेबल नहीं लगा होता। लेकिन जब हम इन्हें खो देते हैं, तब जाकर हमें इनकी सही कीमत का अहसास होता है। कहते हैं, पहला सुख निरोगी काया और इस सुख को प्राप्त करने के लिए इंसान को दु:ख पहुंचाने वाले कारणों को त्याग देना चाहिए। दु:ख पहुंचाने वाले वे कारण क्या हैं? मेरा रात को देर से सोना, सुबह देर से उठना, निष्क्रिय जीवन, गलत आहार, योग न करना। इनमें सबसे मुख्य है मेरा गलत आहार क्योंकि 80% रोग शरीर में केवल गलत आहार के कारण होते हैं। जीवन में हम जो कुछ भी खाते हैं, उसके एक-तिहाई हिस्से पर जीते हैं, बाकी हिस्से पर डॉक्टर जीते हैं।

प्रात: उठने के बाद से रात को सोने तक सारे दिन में जो भी हम खाते हैं, उसकी योगासनों को सिद्ध करने में अहम भूमिका है। योगासनों में आहार की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है। गीता में भी भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि उपयुक्त आहार किए बिना योगाभ्यास का लाभ नहीं होता। आजकल के हालात को देखते हुए योग मानव जाति के लिए एक जरूरत बन गया है क्योंकि योग केवल रोगों को दूर करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि सर्वांगीण विकास करने वाली एक पद्धति है। इससे हमारा शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास होता है। योग का आशय शरीर के समस्त रोगों को दूर कर, मस्तिष्क को तनाव मुक्त कर, आत्मा का ईश्वर से सम्बंध स्थापित करना है। अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान के अनुसार, हम अपनी कार्य क्षमता का 1/3 हिस्सा, मात्र योग साधना से बढ़ा सकते हैं। लेकिन यह तभी संभव होगा, जब हमारा आहार संतुलित होगा, समय पर होगा, सुपाच्य होगा, सात्विक होगा और शुद्ध होगा।

हम भोजन के रूप में जो भी ग्रहण करते हैं, पाचन संस्थान द्वारा उसके पोषक तत्वों को रस के रूप में अलग करके अन्य सभी अंगों तक रक्त-भ्रमण प्रणाली द्वारा वितरित कर दिया जाता है। भोजन पचने के बाद प्राप्त होने वाला रस ही हमारे शरीर में ऊर्जा के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। इसी से शरीर स्वस्थ, लचीला व पुष्ट होता है। अत: योगाभ्यास का हमें भरपूर लाभ मिलता अगर भोजन हमारा गरिष्ठ होगा।

तला भुना होगा, मैदा युक्त होगा, तो उससे शरीर में कड़ापन आएगा, जिस कारण हमें आसनों में सिद्धता प्राप्त नहीं होगी। आज से 50-60 वर्ष पूर्व हमारा आहार शुद्ध था, जंक फूड या बाहर के खाने का प्रचलन नहीं था, लोग घर का बना खाना ही खाते थे।

आहार मुख्यत: तीन प्रकार का होता है-तामसिक, राजसिक और सात्विक। क्या आप जानते हैं कि आहार से ही हमारा शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है और शरीर में ऊर्जा उत्पन्न होती है, हमारे शरीर का संतुलित विकास होता है और रोगों से लड़ने की शक्ति प्राप्त होती है। भोजन के विषय में यहां तक कहा गया है कि जैसा खाए अन्न, वैसा होए मन।

पहला है तामसिक भोजन। **तामसिक भोजन** तमोगुण प्रधान होता है, जिसका मतलब है आलस्य । तामसिक भोजन शरीर में आलस्य उत्पन्न करता है अर्थात योगाभ्यासी के लिए तामसिक भोजन वर्जित है। यह भोजन हमारे शरीर को कम पौष्टिकता प्रदान करता है। ठंडा भोजन, बासी भोजन, डिब्बा बन्द भोजन, माँस, मछली, अंडा और ठंडे पेय पदार्थ इसी श्रेणी में आते हैं। जहाँ तक हो सके, हमें तामसिक भोजन से परहेज करना चाहिए क्योंकि यह साध ना में बाधक बनता है।

दूसरा है **राजसिक भोजन** जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि जो भोजन राजा-महाराजा खाते थे। ऐसा भोजन मसालो द्वारा तथा तेल में तल भून कर बनाया जाता है। यह भोजन खाने में स्वादिष्ट तथा गरिष्ठ होता है। लेकिन यह पचने में कठिन होता है। अतः योगाभ्यास करने वालों के लिए तामसिक भोजन की तरह राजसिक भोजन भी उचित नहीं माना गया है क्योंकि यह शरीर में भारीपन लाता है तथा पाचन संस्थान पर अनावश्यक बोझ बढ़ता है, जिसके कारण लिवर में खराबी होने का भय रहता है। **सात्विक आहार** के अंतर्गत हर तरह के मौसमी फल, सब्जियां, विशेषकर हरी पत्तेदार सब्जियां, सलाद आते हैं। इनमें आंवला विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह एकमात्र ऐसा फल है, जिसे पकाने से इसके गुण नष्ट नहीं होते और एक आंवले में नींबू से 7 गुणा ज्यादा विटामिन C होता है। इसे किसी भी रूप में खा सकते हैं। इसका मुरब्बा, अचार, चटनी या पाउडर के रूप में भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इसी तरह सहजन (मोरिंगा) के पत्तों को आटे में गूंथ कर रोटी बनाएं। इन पत्तों में दूध से 17 गुणा ज्यादा कैल्शियम होता है। दालों में छिलके वाली साबुत दालें खाएं।

सर्दियों में बाजरे के आटे तथा मक्की के आटे की रोटी खाए। बाजरे के आटे में भरपूर मात्रा में आयरन होता है, जो हड्डियों के लिए बहुत ही बढ़िया है। हड्डियां मजबूत बनती हैं, शरीर को ऊर्जा मिलती है। मशरूम, अलसी और अंकुरित अनाज का सेवन करें।

अंकुरित अनाज में आपको भरपूर मात्रा में विटामिन ए, बी, सी व ई मिल जाता है। अलसी में फाइबर प्रचुर मात्रा में होता है, जो शरीर की शुगर और फैट को आत्मसात (absorb) करने में मदद करता है। तो सात्विक आहार में भी आपको सभी पोषक तत्व जैसे आयरन, विटामिन, फाइबर, पोटाशियम, फॉलिक एसिड, कैल्शियम, विटामिन डी आदि मिल जाएंगे। हर तरह के ये मौसमी फल और मौसम के सलाद में भी मिलते है।

अतः सात्विक भोजन बहुत अधिक महत्व रखता है तथा योगाभ्यासी के लिए सबसे उत्तम माना जाता है क्योंकि सात्विक भोजन करने से हमारी सोच सकारात्मक बनती है तथा विचार शुद्ध व परहित सोचने वाले बनते हैं। हम सेवा, साधना तथा समर्पण में अपना जीवनयापन करते हैं। अतः शरीर रूपी गाड़ी को ऊर्जावान करने के लिए सात्विक आहार लें तथा नियमित योग साधना करें क्योंकि योग ही एकमात्र ऐसी सम्पूर्ण पद्धति है, जो मनुष्य को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली बनाती है। अगर जीवन को जीने का सर्वोत्तम तरीका कोई है तो वह है योग तथा सात्विक आहार।

–कुंदन लाल

क्या मैं शरीर का स्वामी हूँ?

क्या आप अपनी मर्जी से संसार में आ-जा सकते हैं? आप सबमें से कोई भी ऐसा नहीं होगा, जो हजारों वर्ष या युं कहें कि हमेशा-हमेशा के लिए संसार में नहीं नहीं रहना चाहता है परन्तु वास्तविकता यह है कि हम एक सांस भी फालतू नहीं ले सकते। मेरे पास यह शरीर किसी की अमानत है। मुझे कोई अधिकार नहीं है कि मैं अमानत में खयानत करूँ। यह शरीर तो ईश्वर का मंदिर है, इसको गलत खान-पान, गलत द्य आदतों से रोगी बनाने का मुझे कोई अधिकार नहीं है।

क्या आपके शरीर में रक्त भ्रमण आपकी इच्छा के अनुसार हो रहा है? क्या श्वास-प्रश्वास क्रिया पर आपका नियन्त्रण है? क्या पाचन तथा निष्कासन आदि क्रियाएं आप की मर्जी से होती हैं?

क्या आपने चाहा था कि आपका बालपन जो आप अपनी मां की गोद से निर्भीकता एवं स्वतन्त्रता से बिता रहे थे, वह किशोर अवस्था में बदल जाये? क्या आपने किशोर अवस्था से युवावस्था में आने की इच्छा की थी? क्या आप चाहते थे कि आप की युवावस्था समाप्त होकर प्रौढ़ता आ जाये? आपके बाल सफेद हो जाएं? आंखों की रोशनी कम हो जाये? मुंह पर झुर्रियां पड़ जाये, दांत भी टूटने लगें? यदि नहीं तो- गहन विचार करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यह शरीर मेरा नहीं है-यह तो केवल सदुपयोग के लिए मिला है। फिर, इस शरीर द्वारा किये गये कार्य पर मुझे यह विचार क्यों आता है कि मैंने इतना धन उपार्जन किया, यह अट्टालिका मैंने खड़ी की है, परिवार का लालन-पालन मैं कर रहा हूँ, यदि मैं न होता तो ये सब भूखे मर जाते। ऐसा सोचना मेरे अन्दर का अहं बोलता है। 'मैं' का दूसरा नाम अहंकार है। अहंकार का अन्त पतन है। क्या आप पतन चाहते हैं या आनन्द? आनन्द के लिए 'मैं' छोड़नी होगी। हमारा संसार में आने का उद्देश्य आनन्द की प्राप्ति ही है। आनन्द के लिए तो 'मैं' छोड़नी होगी। हमारा संसार में आने का उद्देश्य आनन्द की प्राप्ति ही है।

साभार –योग मंजरी

ज्ञान या विवेक

एक बार मुख्य चुनाव आयुक्त श्री टी. एन. शेषन उत्तर प्रदेश के दौर पर थे। साथ में उनकी पत्नी भी थीं। रास्ते में जब वह एक जगह रुके तो उनकी श्रीमती जी ने देखा कि पास ही तालाब के किनारे बया पक्षियों के सुराहीनुमा सुंदर घोंसले लटक रहे थे। उनका कलाकार मन एक-दो घोंसले अपने साथ ले जाने के लिए मचल उठा।

उन्होंने साथ चल रहे सुरक्षाकर्मी से अपनी चाहत व्यक्त की। इच्छा को आदेश समक्ष सुरक्षाकर्मी ने पास ही गाय चरा रहे लड़के को पुकारा और पास बुला कर उससे दो घोंसले निकाल लाने के लिए कहा और यह भी कहा कि उसे एक घोंसले के लिए दस रुपये मिलेंगे। लड़के ने ऐसा करने से मना करने के लिए इनकार में सिर हिला दिया। सुरक्षाकर्मी ने कहा कि अरे यह बहुत बड़े साहब हैं, तुम घोसला तोड़ लाओ। वह फिर भी टस से मस नहीं हुआ। शेषन जो सुरक्षाकर्मी और उस लड़के की बात सुन रहे थे, ने लड़के से कहा कि अरे हम तुम्हें एक घोंसले के लिए पचास रुपये देंगे।

वह लड़का बोला ''साहब आप चाहे हमको जितना रुपया दो हम घोंसला नहीं तोड़ सकते। घोंसले में चिड़िया के छोटे-छोटे बच्चे हैं। शाम को जब चिड़िया बच्चों के लिए खाना ले कर आएगी और उसे उसके बच्चे नहीं मिलेंगे तो उसका रोना हम नहीं सुन सकते हैं।'' शेषन और उनकी पत्नी उस अबोध लड़के की हृदयस्पर्शी बात को सुन कर आवाक रह गए। शेषन को लगा कि उनका इतने उच्च पद पर होना निरर्थक है। श्रीमती शेषन ने घोंसला ले जाने का अपना विचार त्याग दिया।

ज्ञान (Knowledge) से आप विशद जानकारी एकत्र कर पद, प्रतिष्ठा और धन अर्जित कर सकते हैं जबकि विवेक (Wisdom) और सहृदयता से ही परम आनंद की प्राप्ति हो सकती है।

- अवधेन्द्र कुमार

दक्ष ने क्यों दिया नारद को शाप

भगवान ब्रह्मा ने अनेक मानस-पुत्र हुए। उनमें एक थे दक्ष। दक्ष की दो पत्नियां थीं- प्रसूति और असिवनी। ब्रह्म के आदेश पर सृष्टि को बढ़ाने का कार्य दक्ष को सौंपा गया। दक्ष और असिवनी ने पांच हजार पुत्रों को जन्म दिया। ये संयुक्त रूप से 'हर्यश्व' कहलाए।

दक्ष ने हर्यश्व पुत्रों को पृथ्वी पर शासन करने तथा प्रजनन प्रक्रिया जारी रखने का निर्देश दिया। दक्ष ने यह भी कहा कि वे कर्तव्य पूरा करके वापस लौट आएं। सभी सिंधु नदी के तट पर एकत्रित हुए। वहां उनकी भेंट देवर्षि नारद से हो गई।

नारद भी ब्रह्मा के मानस-पुत्रों में हैं। इस नाते, वह दक्ष के भाई हुए। देवर्षि नारद को जब हर्यश्व पुत्रों की मंशा पता लगी तो उन्हें शरारत सूझी। वह बोले, 'आप लोग ब्रह्मा के पौत्र हैं, इसलिए आपको पहले ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इसी से मुक्ति का मार्ग, खुलता है। अतः आप लोग प्रजनन-कार्य में न फंसकर, तप कीजिए।'

इस पर दक्ष के पुत्र तप के मार्ग पर चल पड़े। काफी समय बीत जाने पर जब हर्यश्व पुत्र नहीं लौटे, तो दक्ष को बहुत दुख हुआ। दक्ष और असिवनी ने फिर एक हजार पुत्रों को जन्म दिया।

उनका संयुक्त नाम 'शबलाश्व' था। दक्ष ने इन पुत्रों भी वही आदेश दिया, जो हर्यश्व पुत्रों को दिया था। शबलाश्व पिता की आज्ञा पाकर निकल पड़े। देवर्षि नारद शबलाश्व के पास पहुंच गए और उनसे भी वही कहा, जो हर्यश्व पुत्रों से कहा था। शबलाश्व भी नारद की बातों में आ गए और तपस्या करने निकल पड़े।

प्रजापति दक्ष प्रतीक्षा कर थक गए, किंतु शबलाश्व भी लौटकर नहीं आए। तब दक्ष को पता लगा कि यह नारद की शरारत थी। उनके पूछने पर नारद ने कहा, 'मैंने आपके पुत्रों को मुक्ति का मार्ग दिखाया था। उस पर चलने का निर्णय तो उन्हीं का था।'

दक्ष जानते थे कि नारद ने यह अपने चंचल स्वभाव के कारण किया था। इसलिए दक्ष ने नारद को शाप दिया, 'नारद, तुमने, सृष्टि के रचना-कर्म में बाधा डाली है और मेरे पुत्रों को भटकाने का अपराध किया है, इसलिए मैं तुम्हें शाप देता हूँ कि तुम भी अनंत काल तक भटकते रहोगे और तुम्हें कहीं स्थायी आश्रय नहीं मिलेगा।' दक्ष ने इसी शाप के कारण नारद का कोई स्थायी धाम नहीं है और वह तीनों लोकों में घूमते रहते हैं।

इसके बाद दक्ष और असिवनी ने फिर साठ पुत्रियों को जन्म दिया। उनमें से सत्ताईस नक्षत्र-रूप थीं, जिनका विवाह चंद्रदेव से हुआ। दस कन्याओं का विवाह धर्मदेव से और तेरह का विवाह कश्यप से हुआ। कश्यप और दक्ष की तेरह कन्याओं में से एक का नाम अदिति था। अदिति, देवताओं की माता बनी। **दिति से दैत्य हुए दनु** से दानव और अरिष्टा से गंधर्व उत्पन्न हुए। **मुनि नामक कन्या ने अप्सराओं** को, काष्ठा ने यक्षों को और कद्रू ने नागों को जन्म दिया। चूंकि दक्ष, इन तेरह कन्याओं के पिता थे और उन्हीं से प्राणियों की उत्पत्ति हुई। इसलिए, दक्ष को समस्त प्राणियों (प्रजा) का स्वामी, यानी प्रजापति कहा जाता है।

–आशुतोष गर्ग

रामायण की प्रश्नोत्तरी

1 - लंका में राम जी = 111 दिन रहे।
2 - लंका में सीताजी = 435 दिन रहीं।
3 - मानस में श्लोक संख्या = 27 है।
4 - मानस में चौपाई संख्या = 4608 है।
5 - मानस में दोहा संख्या = 1074 है।
6 - मानस में सोरठा संख्या = 207 है।
7 - मानस में छन्द संख्या = 86 है।
8 - सुग्रीव में बल था = 10000 हाथियों का।
9 - सीता रानी बनीं = 33वर्ष की उम्र में।
10 - मानस रचना के समय तुलसीदास की उम्र = 77 वर्ष थी।
11 - पुष्पक विमान की चाल = 400 मील/घण्टा थी।
12 - रामदल व रावण दल का युद्ध = 87 दिन चला।
13 - राम रावण युद्ध = 32 दिन चला।
14 - सेतु निर्माण = 5 दिन में हुआ।
15 - नलनील के पिता = विश्वकर्मा जी हैं।
16 - त्रिजटा के पिता = विभीषण हैं।
17 - विश्वामित्र राम को ले गए =10 दिन के लिए।
18 - राम ने रावण को सबसे पहले मारा था = 6 वर्ष की उम्र में।
19 - रावण को जिन्दा किया = सुखेन बेद ने नाभि में अमृत रखकर।

श्री राम के दादा परदादा का नाम क्या था?
नहीं तो जानिये-

1. ब्रह्मा जी से मरीचि हुए,
2. मरीचि के पुत्र कश्यप हुए,
3. कश्यप के पुत्र विवस्वान थे,
4. विवस्वान के वैवस्वत मनु हुए.वैवस्वत मनु के समय जल प्रलय हुआ था,
5. वैवस्वतमनु के दस पुत्रों में से एक का नाम इक्ष्वाकु था, इक्ष्वाकु ने अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया और इस प्रकार इक्ष्वाकु कुलकी स्थापना की।
6. इक्ष्वाकु के पुत्र कुक्षि हुए,
7. कुक्षि के पुत्र का नाम विकुक्षि था,
8. विकुक्षि के पुत्र बाण हुए,
9. बाण के पुत्र अनरण्य हुए,
10. अनरण्य से पृथु हुए,
11. पृथु से त्रिशंकु का जन्म हुआ,

12. त्रिशंकु के पुत्र धुंधुमार हुए,
13. धुन्धुमार के पुत्र का नाम युवनाश्व था,
14. युवनाश्व के पुत्र मान्धाता हुए,
15. मान्धाता से सुसन्धि का जन्म हुआ,
16. सुसन्धि के दो पुत्र हुए- ध्रुवसन्धि एवं प्रसेनजित,
17. ध्रुवसन्धि के पुत्र भरत हुए,
18. भरत के पुत्र असित हुए,
19. असित के पुत्र सगर हुए,
20. सगर के पुत्र का नाम असमंज था,
21. असमंज के पुत्र अंशुमान हुए,
22. अंशुमान के पुत्र दिलीप हुए,
23. दिलीप के पुत्र भगीरथ हुए, भागीरथ ने ही गंगा को पृथ्वी पर उतारा था.भागीरथ के पुत्र ककुत्स्थ थे।
24. ककुत्स्थ के पुत्र रघु हुए, रघु के अत्यंत तेजस्वी और पराक्रमी नरेश होने के कारण उनके बाद इस वंश का नाम रघुवंश हो गया, तब से श्री राम के कुल को रघु कुल भी कहा जाता है।
25. रघु के पुत्र प्रवृद्ध हुए,
26. प्रवृद्ध के पुत्र शंखण थे,
27. शंखण के पुत्र सुदर्शन हुए,
28. सुदर्शन के पुत्र का नाम अग्निवर्ण था,
29. अग्निवर्ण के पुत्र शीघ्रग हुए,
30. शीघ्रग के पुत्र मरु हुए,
31. मरु के पुत्र प्रशुश्रुक थे,
32. प्रशुश्रुक के पुत्र अम्बरीष हुए,
33. अम्बरीष के पुत्र का नाम नहुष था,
34. नहुष के पुत्र ययाति हुए,
35. ययाति के पुत्र नाभाग हुए,
36. नाभाग के पुत्र का नाम अज था,
37. अज के पुत्र दशरथ हुए,
38. दशरथ के चार पुत्र राम, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न हुए।

इस प्रकार ब्रह्मा की उन्चालिसवी (39) पीढ़ी में श्रीराम का जन्म हुआ। इन महत्त्वपूर्ण सूचना को एक-दूसरे से साझा करें ताकि हर हिंदू इस जानकारी को जाने..।

यह जानकारी महीनों के परिश्रम के बाद आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

–मीनू गुप्ता जायसवाल, कार्यकारी सम्पादक

कितनी तरह के श्राद्ध

धर्मशास्त्रों में श्राद्ध के कई प्रकार बताए गए हैं। कहीं तीन श्राद्ध की चर्चा है तो कहीं पांच की। कुछ धर्मशास्त्रों में तो बारह श्राद्ध बताए गए हैं। श्राद्ध के कुल 96 अवसरों का भी उल्लेख मिलता है।

धर्मशास्त्रों में श्राद्ध के अनेक भेद बताए गए हैं, लेकिन कुछ अत्यंत आवश्यक माने गए हैं। मत्स्य पुराण में तीन तरह के श्राद्ध-नित्य, नैमित्ति एवं काम्य तो यम स्मृति में पांच प्रकार के श्राद्धों का उल्लेख मिलता है- नित्य, नैमित्तिक, काम्य, वृद्धि और पार्वण। इसमें प्रतिदिन तर्पण करना और भोजन करने से पहले गौ ग्रास निकालना ही नित्य श्राद्ध है। इसमें विश्वदेव नहीं होते और अशक्तावस्था में केवल जल प्रदान से भी श्राद्ध की पूर्ति हो जाती है।

किसी निमित्त विशेष किया जाने वाला श्राद्ध नैमित्तिक या एकोदिष्ट श्राद्ध कहलाता है। इसमें भी विश्वदेव नहीं होते। यह पांच प्रकार का होता है- और्ध्य, दैविक, वार्षिक, पार्वण महालय और तीर्थश्राद्ध। इसमें व्यक्ति की मृत्यु के समय पिंडदान से लेकर तेरहवीं तक की संपूर्ण अंत्येष्टि की क्रिया और्ध्वदेहिक श्राद्ध कहलाती है। जिस दिन व्यक्ति की मृत्यु प्रतिवर्ष किया जाने वाला श्राद्ध वार्षिक श्राद्ध कहलाता है। किसी कामना की पूर्ति के निमित्त किए जाने वाले श्राद्ध को काम्य श्राद्ध कहते हैं।

वृद्धिकाल में पुत्र जन्म और विवाह आदि मांगलिक कार्य में जो श्राद्ध किया जाता है, उसे वृद्धि श्राद्ध कहते हैं। पितृपक्ष अमावस्या या पर्व की तिथि पर विश्वदेव सहित जो श्राद्ध किया जाता है, उसे पार्वण श्राद्ध कहते हैं। सप्तमी आदि तिथियों में विशिष्ट हविष्य द्वारा देवताओं के निर्मित जो श्राद्ध किया जाता है, उसे दैविक श्राद्ध कहते हैं। अयोध्या, हरिद्वार और गया आदि तीर्थस्थानों पर किया वाला श्राद्ध तीर्थ श्राद्ध कहलाता है।

विश्वामित्र स्मृति और भविष्य पुराण में नित्य, नैमित्तिक, काम्य, वृद्धि, पार्वण, सपिंडन, गोष्ठी, शुद्धिअर्थ, कर्मांग तीर्थ, यात्रार्थ, पुष्टिअर्थ, ये बारह प्रकार के श्राद्ध बताए गए हैं। जिस श्राद्ध में प्रेत पिंड का पितृ पिंडों में सम्मेलन किया जाए, उसे सपिंडन श्राद्ध कहते हैं। समूह में जो श्राद्ध किया जाता है, उसे गोष्ठी श्राद्ध कहते हैं।

शुद्धि के निमित्त जिस श्राद्ध में ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है, उसे शुद्धिअर्थ श्राद्ध भोजन कराया जाता है, उसे शुद्धिअर्थ श्राद्ध कहते हैं। गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन एवं पुंसवन आदि संस्कारों में जो श्राद्ध किया जाता है, उसे कर्मांग श्राद्ध कहते हैं। तीर्थ के उद्देश्य से देशांतर जाने के समय घृत द्वारा जो श्राद्ध किया जाता है, उसे यात्रार्थ श्राद्ध कहते हैं। शारीरिक अथवा आर्थिक उन्नति के लिए जो श्राद्ध किया जाता है, वह पुष्टिअर्थ श्राद्ध कहलाता है। मुंडन, उपनयन, विवाह आदि विशेष अवसर पर किए जाने वाले श्राद्धों को विशेष श्राद्ध कहते हैं। इस प्रकार के श्राद्धों में नांदिमुख, नाग बलि, नारायण बलि और त्रिपिंडी आदि श्राद्ध प्रसिद्ध हैं। उपर्युक्त सभी प्रकार के श्राद्ध श्रौत और स्मार्त भेद से दो प्रकार के होते है। पिंडपितृयाग को श्रोत्त श्राद्ध कहते हैं और एकोदिष्ट, पार्वण तथा तीर्थ श्राद्ध से लेकर मरण तक के श्राद्ध को स्मार्त श्राद्ध कहते हैं।

श्राद्ध के 96 अवसर

बारह महीनों की बारह अमावस्याएं, सतयुग, त्रेता आदि युगों के प्रारंभ की चार युगादि तिथियां, मनुओं के आरंभ की चौदह मनवादि तिथियां, बारह संक्रांतियां, बारह वैधृति योग, बारह व्यतिपात योग, पंद्रह महालय श्राद्ध (पितृपक्ष), पांच अष्टका, पंच अन्वष्टका तथा पांच पूर्वाधुः- ये कुल श्राद्ध के 96 अवसर हैं।

मुक्ति तो गया में ही

मान्यता है कि गया तीर्थ में श्राद्ध कर्म पूर्ण करने के बाद भगवान विष्णु के दर्शन करने से मुनष्य पितृ, माता और गुरु के ऋण से मुक्त हो जाता है।

गयासुर नाम के एक असुर ने घोर तपस्या करके भगवान से आशीर्वाद प्राप्त किया। फिर वह आशीर्वाद का दुरूपयोग करके देवताओं ने भगवान विष्णु से प्रार्थना करने लगा। देवताओं ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की कि वे गयासुर से देवताओं की रक्षा करें। भगवान विष्णु ने गदा से गयासुर का वध कर दिया। बाद में उन्होंने गयासुर के सिर पर एक पत्थर रखकर उसे मोक्ष प्रदान किया। कहते हैं, गया स्थित विष्णुपद मंदिर में वह पत्थर आज भी मौजूद है। भगवान विष्णु द्वारा गदा से गयासुर का वध किए जाने से उन्हें गया तीर्थ में मुक्तिदाता माना गया। गया तीर्थ में पितरों का श्राद्ध और तर्पण किए जाने के बारे में इस प्राचीन कथा का उल्लेख पुराणों में मिलता है।

धर्मशास्त्र के अनुसार गया की 54 वेदियों में विष्णु पद प्रथम है। इसके दर्शन मात्र से पितर नारायण रूप हो जाते हैं। गया की फल्गु नदी में स्नान और तर्पण करने से पितरों को देव योनि प्राप्त होती है। हिंदू समाज का दृढ़ विश्वास है कि गया में श्राद्ध पिंडदान करने से उनकी सात पीढ़ियों के पितरों को मुक्ति मिल जाती है। कहा जाता है कि गया में यज्ञ, श्राद्ध, तर्पण और पिंड दान करने से मनुष्य को स्वर्गलोक एवं ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। गया के धर्म पृष्ठ, ब्रह्म सप्त, गया शीर्ष और अक्षय वट के समीप जो कुछ भी पितरों को अर्पण किया जाता है, वह अक्षय होता है। गया के प्रेतशिला में पिंडदान करने से पितरों का उद्धार होता है। पिंडदान करने के लिए काले तिल, जौ का आटा, खीर, चावल, दूध, सत्तु आदि का प्रयोग किए जाने का विधान है। अगर किसी मनुष्य की मृत्यु, संस्कार रहित दशा में अथवा किसी पशु, चोर, सर्प या जंतु के काटने से हो जाती है, तो गया तीर्थ में उस मृत व्यक्ति का श्राद्ध कर्म करने से वह बंधनमुक्त होकर स्वर्ग को गमन करता है। गया में दिया या रात में किसी भी समय श्राद्ध कर्म और तर्पण किया जा सकता है।

विज्ञान सम्मत है श्राद्ध-कर्म

शोधकर्ताओं के अनुसार, पितरों के डीएनए का विस्तार ही हमारा अस्तित्व है। प्रत्येक शिशु का जुड़ाव उसके पूर्वजों से ही बना रहता है।

आत्मा अजर-अमर हे, शरीर के न रहने पर भी आत्मा का अस्तित्व रहता है। आत्मा कभी न नष्ट होने वाली ऊर्जा है, जो मोक्ष प्राप्त होने पर ईश्वर की अनंत ऊर्जा में समाहित हो जाती है। विज्ञान के अनुसार, ऊर्जा हमेशा संरक्षित रहती है। यह एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित हो जाती है। इसीलिए धर्मशास्त्र में कहा गया है कि मृत्यु अंत नहीं प्रारंभ है। जीवित और मृत भेद मात्र स्थूल जगत तक ही सीमित रहता है। सूक्ष्म जगत में सभी जीवित हैं। जैनैटिक सांइस पर शोध कर्ताओं के अनुसार आज भी हम अपने पूर्वजों से जुड़े हुए हैं। पितरों के डीएनए का विस्तार ही हमारा अस्तित्व है। प्रत्येक शिशु का जुड़ाव उसके पूर्वजों से बना रहता है। क्रोमोजोम्स के माध्यम से वैज्ञानिकों ने प्रमाणित किया है कि नवजात शिशु में कुछ गुण दादा एवं परदादा के और कुछ गुण नानामह तथा नाना के समाहित रहते हैं। पितरों के निमित्त श्राद्ध आदि कर्म करने से पितरों के साथ-साथ स्वयं का भी कल्याण

होता है। पितरों के साथ-साथ स्वयं का भी कल्याण होता है। पितरों का श्राद्ध करने से सकारात्मक वातावरण उत्पन्न होता है और घर की नकारात्मकता दूर होती है।

पितृ प्रसन्न तो घर संपन्न

धर्मशास्त्रों के अनुसार, हमें जो शरीर दिखाई देता है, उसे स्थूल शरीर कहा जाता है और जो शरीर अदृश्य है, वह सूक्ष्म शरीर कहलाता है। स्थूल शरीर पंचतत्व, अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल, आकाश से निर्मित है। आत्मा के साथ पंचतत्व एक-दूसरे में अंतर्निहित होकर मानव पिंड की रचना करते हैं। जब आत्मा भौतिक स्थूल शरीर से निकल जाती है तो पंचतत्व का अपना कोई पृथक अस्तित्व नहीं रहता है। कहा जाता है, एक बार पांचों तत्व- अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल, आकाश के बीच वाद-विवाद होने लगा। वायु ने कहा कि मनुष्य मेरे कारण ही जीवित रहता है, मेरे जाते ही क्षण भर में उसकी जीवन लीला समाप्त हो जाती है। यह सुनकर पृथ्वी तत्व बोला, मेरे कारण ही शरीर अस्तित्व में है, मेरे न होने पर मानव का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। इस पर जल तत्व ने कहा, जीवन का आधार तो जल ही है। अग्नि तत्व ने अपना पक्ष रखते हुए कहा, मैं न रहूं तो यह शरीर क्षण भर में ठंडा हो जाए। आकाश तत्व ने कहा, मेरी उपयोगिता का मूल्यांकन तुम सबकी पहुंच से परे है, समस्त सूक्ष्म शक्तियों का संचालन मैं ही तो करता हूं। पांचों तत्वों का संवाद आत्मा बैठी-बैठी सुन रही थी। आत्मा ने शरीर से जैसे ही पलायन किया, पांचों तत्वों से बना शरीर बिखर गया। पंचतत्व समझ गए कि मानव शरीर में आत्मा ही प्रधान है। मरणोपरांत आत्मा का अस्तित्व यथावत बना रहता है। पितृ आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि और कृतज्ञता व्यक्त करने का पितृ पक्ष महापर्व है।

पितरों की सद्गति से ही आपकी समृद्धि

धर्मशास्त्र के अनुसार, माता-पिता का आशीर्वाद संतान के अनुसार, माता-पिता का आशीर्वाद संतान के साथ हमेशा रहता है। जीवित माता-पिता संतान को प्रत्यक्ष आशीर्वाद देते हैं और दिवंगत आत्माएं पितरों के रूप में तीन पीढ़ियों तक अपनी संतानों का अप्रत्यक्ष मार्गदर्शन तथा सहायता करती हैं। पितृ पक्ष में संतान जब अपने पूर्वजों को याद कर श्राद्ध, तर्पण आदि से संतुष्ट करते हैं तो पूर्वजों की कृपा बरसती है। प्रसन्न होने पर पितृगण अपने वंशजों को विभिन्न बाधाओं से बचाते हैं।

साभार –अमर उजाला

हम तो प्रकृति के उपासक हैं

प्रकृति हमारे लिए ईश्वर द्वारा प्रदत्त अनुपम उपहार है। स्वच्छ एवं सुरक्षित पर्यावरण के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। प्राचीन समय में मनुष्य प्रकृति के करीब था इसलिए स्वस्थ और प्रसन्न रहता था। आज के परिवेश में देखा जाए तो मनुष्य विलासिता पूर्ण जीवन जीने के लिये प्रकृति से दूर होता चला गया और कृत्रिम वातावरण में घिर गया। फलस्वरूप तमाम व्याधियों को आमंत्रित कर लिया। प्रकृति से हमारा कितना प्रगाढ़ सम्बन्ध रहा है, इस बात को सहजता से ही समझा जा सकता है। प्राचीन काल से ही हमारे पूर्वज प्रकृति की पूजा करते आये हैं। घर में तुलसी लगाना, पीपल, बरगद, आंवला जैसे वृक्षों की पूजा करना जो कि प्राणवायु ऑक्सीजन का प्रचुर मात्रा में उत्सर्जन करते हैं। प्राण वायु ही नहीं अपितु असाध्य रोगों को ठीक करने में पौधों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण योगदान है। हमने गाय को माता का दर्जा दिया तो वहीं नदियों में गंगा और यमुना को मां कहा और उनकी आराधना की। हम सूर्य, चन्द्र और पृथ्वी की भी पूजा करते आ रहे हैं। यह हमारा प्रकृति प्रेम ही था।

आरामदायक और शान-शौकत की जिंदगी जीने के लिए हमने पेड़ों को काटकर उनकी जगह ऊंची-ऊंची इमारतें बनाकर कंक्रीट के जंगल खड़े कर दिए। हमने स्वयं ही अपने चारों ओर एक कृत्रिम वातावरण तैयार कर दिया। चाहे वह बातानुकूलित कमरे हों, कारें हों। जीवन जीने के लिए जो भी आवश्यक है, वह सब कुछ हमें प्रकृति प्रदान करती है। हमारा भी कर्तव्य बन जाता है कि हम पर्यावरण को संरक्षित करने में अपना सहयोग करें। सन 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मानव पर्यावरण विषय पर संयुक्त राष्ट्र महासभा का आयोजन स्टॉकहोम स्वीडन में किया गया। जिसमें 119 देशों ने भाग लिया। संयुक्त राष्ट्र ने पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर राजनीतिक और सामाजिक जागरूकता के लिए 5 जून 1974 को

पहला पर्यावरण दिवस मनाया। तब से लगातार विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। विश्व पर्यावरण दिवस 2021 की थीम पारिस्थितिकी तंत्र बहाली थी। पिछले साल पाकिस्तान ने इसकी मेजबानी की। बांग्लादेश सबसे अधिक दस बार विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी कर चुका है। भारत ने 2011 और 2018 में मेजबानी की थी।

हमारे चारों ओर घेरे हुए जो आवरण है, वही पर्यावरण है। जिसकी हिफाजत करना हर एक नागरिक का कर्तव्य है। प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण ही आज परिस्थितियां प्रतिकूल हो गई हैं। तन को जला डालने वाली भीषण गर्मी, भीषण ठंड, सूखा, तूफान, बाढ़, जंगलों की आग यह सब प्रकृति के असंतुलन के कारण पैदा हुई परिस्थितियां हैं। जिसका कारण हम सभी मनुष्य हैं। लगातार बढ़ती जनसंख्या भी पर्यावरण को प्रदूषित करने में अपनी अहम भूमिका निभा रही है। विशाल जनसंख्या के परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है। बहुमंजिली कर बनाते समय बेसमेंट की खुदाई करके लाखों लीटर पानी बर्बाद हो जाता है। औद्योगिक अपशिष्टों का सही से निस्तारण ना होने के कारण हमारा भूमिगत जल भी दूषित हो गया है। धनाढ्य वर्ग दूषित जल की जगह शोधित मिनरल वाटर पीता है। वहीं गरीब आर्सेनिक एवं अन्य विषैले तत्व मिश्रित जल पीकर घातक रोगों की चपेट में आ रहा है। हमारी नदियाँ दूषित हो गई हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि मोक्षदायिनी मां गंगा अब आचमन और स्नान योग्य नहीं रहीं। हालांकि, केंद्र सरकार की गंगा को स्वच्छ करने की अति महत्वाकांक्षी योजना 'नमामि गंगे' चल रही है। जिसमें हजारों करोड़ रुपये खर्च करके भी अपेक्षित परिणाम नही मिले। उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट गंगा को दूषित कर रहे हैं, जब तक पूरी निष्ठा से कार्य नहीं किया जाएगा, गंगा सहित सभी नदियों की यहीं दुर्दशा रहेगी।

पर्यावरण को रक्षा करना स्वयं की रक्षा करना है। प्रकृति का हमने सम्मान नहीं किया तो अस्तित्व ही मिट जाएगा। सेन्टर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट की रिपोर्ट के अनुसार गंगा, यमुना विश्व की दस सबसे प्रदूषित नदियों में हैं। 20 सबसे प्रदूषित शहरों में 13 सिर्फ भारत के शहर हैं। टॉयलेट पेपर के लिए हर वर्ष 27 हजार पेड़ काट दिए जाते हैं। साल 2013 में उत्तराखंड के केदारनाथ में आई भीषण आपदा भी प्रकृति के साथ हुई छेड़छाड़ के कारण आई। मंदाकिनी नदी के विकराल रूप ने हजारों लोगों को मौत के आगोश में ले लिया। वैज्ञानिकों का मानना था कि लोगों ने नदी के रास्ते में होटल, लॉज, छोटे गांव तक बसा लिए थे और परिणामस्वरूप हमें प्रकृति का रौद्र रूप देखने को मिला। भारत में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर पर है, जिससे हर साल लाखों लोग असमय काल के गाल में समा रहे हैं। 'द लैसेन्ट' की रिपोर्ट के अनुसार 2019 में 16.7 लाख मौतें केवल वायु प्रदूषण के कारण हुई, जो कि कुल हुई मौतों का 18 प्रतिशत है इससे अर्थव्यवस्था को करीब 2.6 लाख करोड़ का नुकसान हुआ। वहीं, 2017 में वायु प्रदूषण से 12 लाभ 40 हजार लोग भारत में काल कल्वित हुए थे। वायु प्रदूषण से श्वशन सम्बन्धी बीमारियां, स्ट्रोक, फेंफड़े का कैंसर और डायबिटीज जैसी जमाम बीमारियां जन्म लेती हैं। वायु प्रदूषण डीजल पेट्रोल के उपयोग से, कल कारखानों से निकलने वाले धुंए आदि से बढ़ता है। जिसके कारण वातावरण में कार्बन मोनोऑक्साइड, क्लोरा फ्लोरो कार्बन, सल्फर ऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन की मात्रा बढ़ जाती है, जो तमाम रोगों को जन्म देती है। इन कारणों से ही सूर्य की घातक पराबैंगनी किरणों से हमारी रक्षा करने वाली ओजोन परत भी नष्ट होने लगी है। औद्योगिक अपशिष्टों और खेती में कीटनाशकों के अत्याधिक प्रयोग की वजह से भूमि प्रदूषण हो रहा है, जो कि बहुत घातक है। बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग के कारण असमय बाढ़ और चक्रवात जैसी आपदाएं आ रही हैं। ग्लोबल वार्मिंग का कारण वातावरण में मौजूद मीथेन, कार्बन डाईऑक्साइड,

क्लोरा फ्लोरो कार्बन और ग्रीन हाउस गैसें मौजूद रहती हैं। सूर्य की किरणें वायुमंडल से गुजरती हुई वायुमंडल से गुजरती हुई पृथ्वी की सतह से टकराती हैं और परावर्तित होकर वापस लौट जाती हैं। वायुमंडल कई गैसों से मिलकर बना होता है। जिसमें ग्रीन हाउस गैंसे भी होती हैं, जो पृथ्वी के ऊपर एक आवरण बना लेती हैं। जब ग्रीन हाउस गैसों की सांद्रता बढ़ जाती है तो यह सूर्य से आने वाली किरणों का कुछ हिस्सा रोक लेती हैं। जिससे पृथ्वी का तापमान बढ़ने लगता है। जिसे ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हो रही है, जिससे ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन होता है। पेड़ों के कटने से वातावरण में ग्रीन गैसों की सांद्रता बढ़ जाती है। जिससे पृथ्वी का तापमान बढ़ जाता है। परिणामस्वरूप असमय बाढ़ और चक्रवात जैसी आपदाएं आती रहती हैं। प्रकृति से दूरी ने हमें रोगी बना दिया है। प्रकृति के समीप रहकर ही स्वस्थ और प्रसन्न रहा जा सकता है। हमें संकल्प लेना होगा कि एक पौधा जरूर लगायेंगें और उसका संरक्षण भी करेंगे। बच्चे के जन्मदिन पर बच्चे से एक पौधा लगवाएं। इससे पर्यावरण संरक्षण तो होगा ही साथ में जागरूकता भी आएगी। किसी मृत व्यक्ति की याद में भी पौधा रोपण कर सकते हैं। हम अपने आसपास स्वच्छता रखकर पर्यावरण संरक्षण में अपना सहयोग कर सकते हैं। बहुत से लोग अभी भी पॉलीथिन का प्रयोग करने से बाज नहीं आ रहे हैं। जबकि हम सभी को पता है कि पॉलीथिन पर्यावरण के लिए कितनी खतरनाक है। लोगों को इस पॉलीथिन की जगह पेपर बैग प्रयोग करने के लिए प्रेरित करें। अपने क्षणिक लाभ के लालच में जो हमने गलतियां की हैं, उन्हें प्रकृति से प्रेम करके और संरक्षण करके सुधारा भी जा सकता है। यह सभी को करना होगा। प्रकृति हमारे लिए वरदान है लेकिन अगर इसके साथ छेड़छाड़ की तो इसके दुष्परिणाम को भी भुगतने के लिए हमें तैयार रहना होगा।

–राघवेन्द्र

'जल नहीं, तो कल नहीं' ये बात दिमाग में बैठा लीजिए

जल संरक्षण के देशी जुगाड़ ताल-तलैया, कुएं, पौखर सब गायब हैं। कुछेक बचे हैं तो वह खुद पानी को तरसते हैं, सूखे पड़े हैं। सरकारी आंकड़ों की मानें तो बीते एकाध दशक में करीब दस-पंद्रह हजार नदियां गायब हो गई हैं। करीब इतने ही छोटे-बड़े नालों का पानी सूखा है, जो अब सिर्फ बारिश के दिनों में ही गुलजार होते हैं। नदी-तालाबों के सूखने से बेजुबान जानवरों और पक्षियों को भी भारी नुकसान हुआ है। इसी कारण अब ग्रामीण क्षेत्रों में दुलर्भ पक्षी दिखाई भी नहीं पड़ते। ऐसे पक्षियों की संख्या असंख्य हैं, जो बिन पानी के मर चुके हैं। ऐसी संभावनाएं प्रबल हैं कि निकट भविष्य में कभी कोई युद्ध पानी के लिए भी होगा। पानी के लिए लोग आपस में लड़ते दिखेंगे, महानगरों में तो ऐसे हालात बनने भी लगे हैं। जमीन से पानी के सूखने का सिलसिला तेजी से जारी है, जितना बचा है, वह धीरे-धीरे धरातल में समाता जा रहा है। जिन जगहों पर कभी पानी की बहुतायत होती थी, जैसे तराई क्षेत्र, अब वहां की जमीन भी धीरे-धीरे बंजर होने लगी है। नमीयुक्त तराई क्षेत्र में कभी एकाध फिट नीचे ही पानी दिखता था, वहां का जलस्तर कइयों फीट नीचे खिसक चुका है। राजधानी दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों में पानी का जलस्तर तो पाताल में घुस ही चुका है। ये ऐसा मुद्दा है, जो चुनावी नहीं बनता है। बस, विशेष दिन जैसे 'विश्व जल दिवस' पर लोगों का ध्यान खींचता है। चिंतन, मनन व विमर्श होता है, पर दूसरे ही दिन सब भुला दिया जाता है। ऐसे काम नहीं चलेगा, जीवन को बचाने के लिए पानी अति जरूरी है, इसलिए कोई कारगर विकल्प खोजना ही होगा। पानी की भयावहयता को लेकर किसी को कोई परवाह नहीं। सरकारें आती हैं और चली जाती हैं। कागजो में योजनाएं बनती हैं और 'विश्व जल दिवस' जैसे खास मौकों पर पानी सहेजने के नाम पर लंबे-चौड़े भाषण होते हैं और अगजे ही दिन निल बटे सन्नाटा। इस प्रवृत्ति से बाहर निकलने की जरूरत है, गंभीरता से पानी पर मंथन करना होगा, तभी समस्या का निदान होगा। वरना, वह कहावत कभी भी चरितार्थ हो सकती जो बे-पानी पर कही

गई है। कहावत है, 'रहिमन पानी रखिए, बिन पानी सब सून' पानी गए न उबरे, मोती मानस चून', पानी बचाने और उसे सहजने को जो कुछ साधन हुआ भी करते थे, वह सब चौपट हो गए हैं।

बात ज्यादा पुरानी नहीं है। कोई एकाध दशक पहले तक छोटे-छोटे गांवों में नदी-नाले, नहर, पौखर और तालाब अनायास ही दिखाई पड़ते थे। एक जमाना था जब बारिश हो जाने पर गांववासी उन स्थानों का जलमग्न दृश्य देखा करते थे। गांव के गांव एकत्र हो जाते थे। पर, अब ऐसे दृश्य विलुप्त हो गए हैं। कालांतर से लेकर प्राचीन काल तक दिखाई देने वाले पक्षी बिना पानी के ही मौत के मुंह में समाए हैं। ऐसी प्रजातियों के खत्म होने का दूसरा कोई कारण नहीं है, सिर्फ पानी है। दूषित पानी को लेकर एक हालिया रिपोर्ट बताती है कि स्वच्छ जल के बिना लोग गंभीर बीमारियों से भी घिरते जा रहे हैं जल संरक्षण की जिम्मेदारी सिर्फ सरकारों के भरोसे छोड़ देने से समस्या का समाधान नहीं होगा।

सामाजिक स्तर पर भी हम सबको चेतना जगानी होगी। जल भंडारण की स्थिति पर निगरानी रखने वाले केंद्रीय जल आयोग की रिपोर्ट भी सोचने पर मजबूर करती है। मानसून के मौसम में भी देश के तकरीबन जलाशय सूखे रहे। जबकि, बीते दो वर्षों में बारिश बहुत अच्छी हुई है। वर्षा का पानी भी अगर हम बचा लें, तो संभावित खतरों से लड़ सकते हैं। पर, बात वहीं आकर रूक जाती है कि बिल्ली के गले में घंटी बांधे तो बांधे कौन? पानी अगर यूं ही खत्म होता रहा तो उससे पृथ्वी का वातावरण खराब होगा। वर्षा जल संरक्षण के लिए पूर्ववर्ती सरकारों ने अभियान चलाया भी था, जो बाद में बेअसर साबित हुआ। समूचे हिंदुस्तान के 76 विशालकाय जलाशयों में कुछ को छोड़ दें, वरना बाकी मण्याम् स्थिति में हैं। उत्तर प्रदेश के माताटीला बांध व रिहन्द, मध्य प्रदेश के गांधी सागर व तवा, झारखंड के तेनूघाट, मेथन, पंचेतहित व कोनार, महाराष्ट्र के कोयना, ईसापुर, येलदरी व ऊपरी तापी, राजस्थान का राण प्रताप सागर, कर्नाटक का वाणी विलास सागर, उड़ीसा का रेंगाली, तमिलनाडु का शोलायार, त्रिपुरा का गुमटी और पश्चिम बंगाल के मयुराक्षी व कंग्साबती जलाशय सूखने के एकदम कगार पर हैं।

पूर्व की सरकारों ने जलाशयों से बिजली बनाने की भी योजना बनाई थी, जो कागजों में ही सिमट कर रहा गई। शायद वह वक्त ज्यादा दूर नहीं, जब हमें पानी और बिजली की भयावता से सामना करना पड़ेगा। जल के अक्षय स्त्रोत को एक छोर से दूसरे छोर तक प्रवाहित रखने वाली नदियों का भी अस्तित्व खतरे में पड़ा है। समय रहते गंभीरता को समझना होगा। अगर पानी की कमी होगी तो बिजली उत्पादन भी कम होगा। इसलिए पानी सहेजने के लिए जनजागरण छेड़ना होगा, जिसमें प्रत्येक आम इंसान को ईमानदारी से आहूति देनी होगी। पानी से जीवन किसी एक का नहीं, बल्कि सभी का बचेगा। पानी के लिए अगला विश्व युद्ध न हो, इसके लिए हमें अभी से सतर्क होना होगा।

–डॉ रमेश ठाकुर

सबसे सुन्दर क्या है?

कलाकार को विश्व की सबसे सुन्दर वस्तु का चित्र तैयार करने का मन हुआ। उसने धर्मगुरु से पूछा- "संसार की सुन्दर से सुन्दर वस्तु क्या है?"

"श्रद्धा। उस श्रद्धा का दर्शन तुम्हें प्रत्येक धर्मस्थान में होगा।" कलाकार को सन्तोष न हुआ। एक नव-वधू से उसने प्रश्न किया- दुनिया की सुन्दर से सुन्दर वस्तु क्या है?"

"प्रेम। प्रेम दुनिया की सुन्दर वस्तु है। प्रेम से निर्धनता में भी समृद्धि प्रतीत होती है। प्रेम खारे आंसुओं को मीठा बनाता है। प्रेम जैसा सुन्दर इस जगत में दूसरा नहीं है।"

इससे भी कलाकार का मन नहीं माना। एक सैनिक से उसने पूछा- "इस संसार में सुन्दर से सुन्दर क्या है?" सैनिक ने कहा- "शान्ति जगत की सबसे सुन्दर वस्तु है। युद्ध जगत की सबसे असुन्दर चीज है?"

कलाकार ने तीन वस्तु समझ लीं- श्रद्धा, प्रेम और शान्ति । सोचता- विचारता हुआ घर पहुँचा। वहाँ उसे देखते ही दरवाजे के सामने उसकी सन्तानें और पत्नी दौड़ पड़े। बच्चे लिपट गए और पत्नी मुस्कान बिखेरने लगी।

कलाकार सोचने लगा- "मैं किसकी खोज में निकला था। मैं जिसे ढूँढने निकला था, वह तो मेरे घर में ही है। मेरी सन्तानों की आँखो में श्रद्धा है। पत्नी की आँखों में प्रेम बरस रहा है और मेरा घर तो शान्ति की दिव्य भूमि है।" कलाकार तुरन्त काम में लग गया। उसने विश्व की सबसे सुन्दर वस्तु का चित्र बनाया। उसका शीर्षक दिया "घर-परिवार"।

साभार –योग मंजरी

दिशा

सिविल सेवा के संबंध में जागरूकता

आमतौर पर सिविल सेवा की तैयारी करने वाली 21-22 वर्ष की आयु में अपनी तैयारी शुरू करते थे। प्राय: उन्हें मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि करियरों के लिए जाने के लिए प्रेरित किया जाता था। पर आज इस संबंध में एक चेतना आयी है। आज स्कूली बच्चे और उनका परिवार कम आयु में ही जागरूक हो जाते हैं। 90 प्रतिशत से ज्यादा अंक लेने वाले विद्यार्थी सिविल सेवा के बारे में गंभीरतापूर्वक विचार करने लग जाते हैं। उन्हें सिविल सेवा, उसके पाठ्यक्रम, उसकी तैयारी के तरीके आदि के बारे में जानकारी होती है। वे जानते हैं कि यह विकल्प भी अच्छे स्तर पर व्यक्तिगत करियर और समाज को आगे बढ़ाने वाला हो सकता है। एक ऐसा ही उदाहरण इंदौर की विद्यार्थी का है, जिसने 12वीं कक्षा के बाद बी.कॉम किया। कॉमर्स विषय में तैयारी की और पहले ही प्रयास में आई.ए.एस के लिए उत्तीर्ण किया। यह एक उपलब्धि थी। इसी प्रकार 12वीं कक्षा की विद्यार्थी ने जीव विज्ञान लेकर बारहवीं की परीक्षा 90 प्रतिशत अंकों से पास की। परिवार ने सिविल सेवा की तैयारी की दृष्टि से यह तय किया कि अंग्रेजी (ऑनर्स) विषय उचित रहेगा। इसी विषय में उसने स्नातक किया और इस वर्ष पहले ही प्रयास में सिविल सेवा पास की और 18वां स्थान प्राप्त किया। ऐसा ही एक उदाहरण उज्जैन में ग्रामीण परिवेश से आए हुए एक विद्यार्थी का है जिसने मानविकी संबंधी विषयों से स्नातक किया और पहले ही प्रयास में आई.ए.एस में नामांकन प्राप्त किया। इस रास्ते से उतीर्ण करने वालों की संख्या बढ़ी है। इन विद्यार्थियों का भाषा पर अच्छा अधिकार है। एन.सी.ई.आर.टी की पुस्तकों के माध्यम से उनकी आधारभूत जानकारी बहुत मजबूत होती है। स्नातक स्तर पर उसी विषय को पढ़ने से विषय की गहराई और विस्तार से वे भली-भांति परिचित हो जाते हैं। इससे उनकी सफलता की संभावना बढ़ा जाती है।

विद्यालय स्तर पर जागृति का एक नकारात्मक पक्ष भी है। आज कोचिंग संस्थानों ने इसका व्यवसायीकरण कर दिया है। इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। लोग बड़ी संख्या में पैसे बना रहे हैं। इसी प्रकार देवास में एक विद्यार्थी से पैसे ऐंठे गए। आज दस लाख लोग इन परीक्षाओं में बैठ रहे हैं। जरूरत व्यावसायीकरण (Commercialization) की नहीं बल्कि अभिमुखीकरण (Orientation) की है।

साथ ही यह भी दिलचस्प बात है कि सिविल सेवा में अलग-अलग विषयों की पृष्ठभूमि के लोग आ रहे हैं। अभी नर्सिंग की पृष्ठभूमि के लोग आ रहे हैं। अभी नर्सिंग की पृष्ठभूमि की एक विद्यार्थी आई.पी.एस बनी। इसका लाभ यह है कि इस प्रकार की पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों से सिविल सेवा समृद्ध हो रही है।

इन चुनावों के परिणाम ऐतिहासिक हैं। देश की सोच बदल रही है। देश बदल रहा है। वंचित वर्गों के लिए आंसू बहाने के बजाए सुव्यवस्थित और योजनाबद्ध प्रयास किए गए हैं, इससे स्पष्ट पता चलता है ना केवल प्रभावी योजनाएं बनायीं बल्कि उनके क्रियान्वयन के रास्ते भी तैयार किए। जिस तरह से करोड़ों लोगों के घरों तक बिजली पहुंची। उन्हें गैस कनेक्शन मिला, उससे आम व्यक्ति का देश की सरकार पर विश्वास बना है। हम पूरे देश में जो बदलाव चाहते हैं, तो बहुत सी योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन चाहिए। स्किल इंडिया जैसी योजनाओं पर प्रभावी कार्यान्वयन की आवश्यकता है। देश के इस बदलाव में ब्यूरोक्रेसी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रभावी रूप से काम करने की जरूरत प्राथमिक स्तर पर डिस्पेंसरियों को बेहतर करने की जरूरत है। इसी प्रकार सरकारी स्कूलों की स्थिति को बेहतर करने की जरूरत है। सरकार द्वारा संचालित केवल केंद्रीय विद्यालयों और नवोदय विद्यालयों में ही विद्यार्थी पढ़ना पसंद करते हैं। आज दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि बाकी सरकारी स्कूलों में उन्हीं के बच्चें पढ़ते हैं, जो निजी स्कूलों का खर्चा नहीं उठा पाते। ब्यूरोक्रेसी की प्रतिबद्धता और प्राथमिकता बदलनी चाहिए। शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास जैसे विभागों को चिन्हित कर उन्हें प्रभावी बनाने के लिए काम करना चाहिए। यह बात नए सिविल सेवकों को बतानी होगी। मसूरी और हैदराबाद में उन्हें प्रशिक्षित करना होगा तभी देश में अपेक्षित सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन हो सकेंगे।

आयुष्मान भारत योजना बहुत अच्छी है, परंतु सरकारी अस्पतालों की स्थिति को और बेहतर करने की जरूरत है। प्राथमिक स्तर पर डिस्पेंसरियों को बेहतर करने की जरूरत है। इसी प्रकार सरकारी स्कूलों की स्थिति को बेहतर करने की जरूरत है।

–संतोष कुमार तनेजा, परामर्शदाता, संकल्प

युवाओं के लिए प्रेरणादायक संदेश-

दोस्तों, हमारी लाइफ में बहुत सी चीजें ऐसी होती हैं जिनके बारे में हम कभी किसी को बता नहीं पाते और उन बातों को हमेशा अपने अंदर ही रखते हैं।

आज का युवा वर्ग यानि की हमारी नयी generation, जो कहने को तो social media के जरिये सारी दुनिया से जुड़े रहते हैं लेकिन अपने अंदर की बातों को कभी किसी के सामने बोल नहीं पाते।

बाहरी जिंदगी में तो वो खुद को काफी ब्रेव दिखाते हैं लेकिन अपने अंदर की समस्याओं से खुद को कभी बाहर नहीं निकाल पाते। आज का युवा वर्ग जितना technology के करीब होता जा रहा है, उतना ही वो खुद से दूर भी हो रहा है।

आज मैं दो ऐसी प्रेरणादायक कहानियां युवाओं के लिए (motivational stories for youths) लेकर आया हूँ जो युवाओं (youth) को लाइफ में हमेशा मोटीवेट रखेंगी। जिन्हें पड़कर युवाओं को उनकी जिंदगी में चल रही परेशानियों का हल मिलेगा और साथ ही अपनी जिंदगी को एक अलग नजरिये से देखने की प्रेरणा भी मिलेगी।

1. अशांत मन

"किसी ने क्या खूब लिखा है," अपनी कमियों पर भी नजर रखिये, हर बार गलती दूसरों की नहीं होती।"

एक बार एक मोंक (Monk) अकेले meditation करना चाहते थे। पर परेशानी ये थी की जिस जगह वो रह रहे थे वहां और भी मोंक थे जिनकी वजह से उन्हें एक शांत माहौल नहीं मिल पा रहा था। वो उस शोरगुल से बचने के लिए और ध्यान लगाने के लिए नदी की ओर चले गए।

जब वो नदी के किनारे पर पहुंचे तो वहां भी बहुत से लोग थे, उन्हें जो माहौल चाहिए तो वो वहां भी नहीं मिल पाया। तो वो एक नाव पर सवार हुए और नदी के किनारे से बहुत दूर आ गए। कुछ दूर जाने के बाद उन्हें शांत माहौल मिल गया।

उन्होंने वहां नाव रोक ली और ध्यान करने लगे। सब कुछ सही चल रहा था।

लेकिन तभी उन्हें कुछ हलचल महसूस हुई। उन्हें लगा कि कोई और भी वहां आ गया है और उनकी नाव को हिला रहा है, उस पर बार-बार टक्कर मार रहा है। धीरे धीरे उन्हें गुस्सा आने लगा। उन्होंने अपनी आंखे खोली और देखा की सामने एक खाली नाव खड़ी है।

जो बार बार पानी के बहाव के कारण उनकी नाव को टक्कर मार रही थी। अब उस नाव में कोई होता तो गुस्सा करते, पर अब क्या करें? तभी उन्हें इस बात का एहसास हुवा कि गुस्सा, डर, बेचौनी, अशांति ये सब उनके अपने अंदर हैं, बाहर की नावें तो खाली हैं। उन्होंने खुद को ठीक किया और वापस ध्यान में बैठे गए।

ये छोटी सी मोटिवेशनल कहानी हमे सिखाती है कि जब हमारे चारों ओर हमारे मन के विपरीत बदलाव हो रहा हो, तो गुस्सा आना जायज है। हमें चिंता भी होने लगती है। पर, यहाँ समय होता है, जब हमें उस बदलाव के साथ संतुलन बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

कई बार जरूरत गुस्सा करने के बजाय खुद को बदलावों से जोड़ने और उस बहाव के साथ बहते रहने की होती है। ऐसा कई बार होता है जब हम उन चीजों को control करने की कोशिश करते हैं जो हमारे हाथ में नहीं होती तो हम बेवजह लोगों पर और अपनी परिस्थिति पर गुस्सा करने लगते हैं।

हमे ये लगने लगता है की सारी दुनिया हमारे खिलाफ हो चुकी है। और हम जो कुछ कर रहे हैं दूसरे उसे होने नहीं देना चाहते। आपके साथ जब कभी भी ऐसी परिस्थिति आये तो ये ना सोचें की आप इन चीजों से कैसे दूर भाग सकते हैं बल्कि खुद को उन चीजें के अनुसार ढालने की कोशिश करें क्यूंकि कई चीजें ऐसी होती हैं जिनसे आप दूर नहीं जा सकते।

अगर आप भीड़ में हैं तो उस भीड़ को आप दूर नहीं कर सकते, आपको उसी के अनुसार खुद को ढालना पड़ता है। इसलिए जिस माहौल से आप दूर नहीं भाग सकते उस माहौल में रहना सीखें। ऐसा करने से आपको ज्यादा सुकून मिलेगा।

2. जिंदगी का सफर

किसी ने क्या खूब कहा है,

"सोचने से कहाँ मिलते हैं तमन्नाओं के शहर.... चलना भी जरुरी है मंजिल पाने के लिए..!"

ये कहानी है एक ट्रैवलर की है, जिसे नयी नयी जगह और नए नए गाँवों में घूमने का बहुत शौक था। वो जब भी कहीं जाता तो पूरी तैयारी के साथ जाता। एक बार वो किसी गाँव से गुजर रहा था। सुबह का समय था और मौसम भी थोड़ा खराब था।

तो उसने एक बैल गाड़ी वाले को अपने साथ ले लिया। थोड़ा दूर जाने के बाद उसने उस बैलगाड़ी वाले से पूछा, "तुम्हें क्या लगता है, आज हमे मौसम कैसा मिलेगा..?" बैलगाड़ी वाला बोला, "जैसा मुझे अच्छा लगता है, आज हमे वैसा ही मौसम मिलेगा।"

फिर उस यात्री ने पूछा, "तुम्हें कैसा पता की जो मौसम होगा, वो तुम्हारी पसंद का ही होगा?"

बैलगाड़ी वाला बोला, "बात ये है भाई, मैं यह जानता हूँ कि हमें हर वह चीज नहीं मिल सकती, जो हमें पसंद है। मैंने हमेसा उन चीजों को पसंद करना सीखा है, जो मुझे मिल जाती हैं। इसलिए मुझे पूरा भरोसा है कि हमें वही मौसम मिलेगा जो मुझे पसंद होगा।"

सीख जो हमे इस प्रेरणादायक कहानी से मिलती है-

ये छोटी सी कहानी हमे सिखाती है कि लाइफ में क्या होगा ये कोई नहीं जानता, लेकिन फिर भी हम खुद से और दूसरों से बहुत सारी उम्मीद रखते हैं, और अगर चीजें उम्मीद के अनुसार होती हैं तो हमे खुशी मिलती है, और जब ऐसा नहीं होता तो हमे दु:ख होता है। इसलिए कभी भी खुद से और दूसरों से ऐसी उम्मीदें ना लगाएं जो आपके नियंत्रण में ना हो और जो कुछ भी इस जिंदगी से आपको मिलता है उसे पसंद करना सीखें। और याद रहे की हमारी जिंदगी एक सफ़र है, और उस सफ़र का आनंद ले. ये चिंता कभी ना करें कि आगे मौसम कैसा है, बस आप अपने सफ़र पर चलते रहिये।

अजय जायसवाल - (युवा सचिव, जायसवाल जागृति)
प्रेरक वक्ता और सामाजिक कार्यकर्ता
व्यवसाय - प्रोजेक्ट मैनेजर, आईटी कंपनी
Mobile - 9990372173

सीईओ की पाठशाला

मुश्किल हालात में लीडर की पहचान होती है

1992 की बात है। मैं माइक्रोसॉफ्ट के ऑफिस में नौकरी के लिए इंटरव्यू देने के लिए बैठा था। सभी सवालों के जवाब देने के बाद मैं राहत में था, लेकिन उस आखिरी सवाल ने मुझे चौंका दिया। 'आप एक चौराहे पर खड़े हैं, और एक बच्चे को कुछ ऊंचाई से गिरते हुए देखते हैं, तो आप क्या करेंगे?' मैं इस सवाल के लिए तैयार नहीं था। यह 90 का दशक था और सेलफोन तब आया नहीं था। मैंने जवाब दिया कि मैं निकटतम बूथ पर जाकर 911 पर कॉल करूगां। इंटरव्यू बोर्ड के अध्यक्ष मुझे कक्ष के बाहर तक छोड़ने गए। मेरे पूछने पर उन्होने बताया, 'आपको थोड़ा संवेदनशील होना चाहिए। अगर बच्चा रो रहा, है तो सबसे पहले उसे गोद में लेकर गले लगाना चाहिए। संवेदनशीलता लीडर का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण है।' हालांकि, वह नौकरी मुझे मिली, और 2014 में, माइक्रोसॉफ्ट के 48 साल के इतिहास में स्टीव बाल्मर और बिल गेट्स के बाद मैं तीसरा सीईओ भी बना।

स्पष्ट देखने की काबिलियत

एक लीडर का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण होता है, चीजों को स्पष्ट ढंग से देखने की काबिलियत। लीडर की जरूरत तब नहीं होती, जब सबकुछ व्यवस्थित ढंग से चल रहा हो और कुछ भी नया करने के बजाय सिर्फ बने-बनाए ढर्रे पर चलना हो। लेकिन जब हालात मुश्किल हों, कुछ भी समझ न आ रहा हो, तब लीडर की जरूरत होती है। अस्थिर हालात और अनिश्चित भविष्य के समय में घबरा जाने के बजाय जो टीम में स्पष्टता और भरोसे को भर सके, वही लीडर है।

ऊर्जा पैदा करने की क्षमता

एक लीडर का दूसरा गुण यह है कि वह ऊर्जा पैदा कर सके। कोई अगर यह कहे, 'मैं अच्छा हूं, मेरी टीम बहुत अच्छी है, लेकिन बिजनेस का माहौल बहुत खराब

है।' ऐसा कहकर वह कोई ऊर्जा पैदा नहीं कर रहा। आप भले छोटी कंपनी में हो या फिर कोई स्टार्टअप ही क्यों न हो, लेकिन लोगों से मिलने, नए विचारों पर बात करने और लगातार सक्रिय रहने से वह ऊर्जा पैदा होगी, जब लोग लगातार आपके काम के बारे में बात कर रहे होंगे।

कामयाबी का एहसास

एक लीडर का तीसरी और सबसे महत्त्वपूर्ण गुण है समस्याओं से घिरी दुनिया में कामयाबी का एहसास कराना। जीवन खुद समस्याओं से घिरा है, जिन पर आपका कोई नियंत्रण भी नहीं है। अब अगर कोई लीडर कहे, 'मैं सबकुछ ठीक कर दूंगा, एक बार परिस्थितियां अनुकूल हो जाएं', जो वह लीडर काहे का। जब धाराएं प्रतिकूल हों, तभी नाविक की असल परीक्षा होती है।

लीडर हमेशा ऑन

एक लीडर को हमेशा ऑन रहना होता है। दुनिया में हो रहे हर बदलाव से वह खुद को जोड़े रखता है। यह थका देने वाला काम है, जिसमें ऊर्जा लगती है। इसलिए, जरूरी है कि कुछ समय वह अपने लिए निकाले। वर्तमान क्षण में रहना मुझे अपनी ऊर्जा को रिफ्रेश करने का सबसे अच्छा तरीका लगता है। यह एहसास तब होता है, जब मैं अपने बच्चों के साथ समय बिताता हूं।

सत्या नडेला, सीईओ, माइक्रोसाफ्ट

बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएँ

नवरात्रि पर्व पर नौ देवीयों की जायसवाल जागृति के सुधी पाठकों, संरक्षक, अधिष्ठाता, विज्ञापनदाता तथा शुभचिन्तकों पर अपार कृपा बनी रहे। विजयादशमी, शरद पूर्णिमा, करवा चौथ, अहोई, धनतेरस, दीपावली, भाई दूज, छठ, देव उठावनी, एकादशी तथा गुरु पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएँ।

आप सभी त्यौहारों को हर्षोल्लास से मनाएं तथा ये त्यौहार आप सभी के जीवन में अपार खुशियाँ व समृद्धि लाये। यदि कोई विशेष अनुभव हो तो हमसे साझा भी करने का कष्ट करें।

सम्पादक मण्डल
जायसवाल जागृति

हिंदी: निज भाषा उन्नति अहे...

आज बच्चे बच्चे की जबान पर अंग्रेजी भाषा चढ़ी हुई है। उसको तो यह तक पता नहीं कि वह किस भाषा का प्रयोग कर रहा है। अपनी मातृभाषा को छोड़कर ये कैसा न्याय है? हम भारत के नागरिक हैं और हम अपनी भाषा को राजभाषा कहकर पुकारते हैं। यह ठीक नहीं। हिंदी को राष्ट्र भाषा का दर्जा मिलना चाहिए। हम भारत के लोग हैं और भारत हमारी माता है। जिस प्रकार भूमि को हम मां का दर्जा देते हैं, उसी प्रकार भाषा को भी वही स्थान मिलना चाहिए। हमारे भारत देश में भाषा का बहुत महत्व है। यहां अनेक प्रकार की भाषओं की उत्पत्ति देखने को मिलती है।

प्रारम्भिक काल में पाली, प्राकृत और अपभ्रंश देखने को मिलती है। धीरे-धीरे इसका विकास होता चला जाता है तथा इसका रूप परिवर्तित हो जाता है। जिस भाषा का अधिक वर्चस्व रहा, वह अवधी, ब्रज, राजस्थानी आदि हैं। अवधी भाषा के विकास में गोस्वामी तुलसीदास ने अपना अधिक योगदान दिया। उन्होंने रामचरितमानस, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, राम लला नहछू आदि रचनाओं में अवधि का अधिक प्रयोग किया है। इसी प्रकार ब्रज भाषा में महाकवि सूरदास जी ने सूरसागर, साहित्य लहरी आदि रचनाओं में ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। मीराबाई ने अपनी पदावली में राजस्थानी का प्रयोग किया है। इसी प्रकार आधुनिक काल आते-आते इसके रूप में परिवर्तन होता है और भारतेंदु काल से इसमें खड़ी बोली का विकास हो जाता है। महावीर प्रसाद द्विवेदी इसको परिमार्जित करके शुद्ध रूप प्रदान करते हैं। इसका नाम खड़ी बोली हिन्दी के रूप में रखा जाता है। हिन्दी ने कई काल देखे हैं, न जाने कितने आघात झेले हैं। तब जाकर इसका शुद्ध प्रयोग सम्भव हो सका है। परन्तु हमारी भारतीय संस्कृति और हमारी अनेक प्रकार की परम्पराओ के पांव कमजोर होने लगे हैं। लोग हिंदी भाषा को एक मध्यवर्गीय परिवार की भाषा समझने लगे हैं। जिस भाषा के विकास के लिए न जाने कितने कवियों और लेखकों को जेलों में रात काटनी पड़ी थीं। मैथलीशरण गुप्त जी, जिन्हें राष्ट्र कवि के नाम से जाना जाता है, आज उनकी भाषा को नीचा समझा जाने लगा है। क्या यह हिन्दी भाषा की तौहीन नहीं

? क्यों लोग अंग्रेजी को अधिक महत्व देने लगे हैं और हिंदी को फूहड़ कहने लगे हैं? क्यों संविधान इसको भारत की राष्ट्र भाषा कहने से नकार रहा है? क्या हिंदी राष्ट्र भाषा कहलाने के काबिल नहीं? ऊंचे तबके के लोग इस भाषा का प्रयोग करने में हिचकिचाने लगे हैं। क्या उनको नहीं पता, यह हमारी मातृ भाषा है और हमें इसको संविधान द्वारा राष्ट्र भाषा बनाने के लिए एकजुट होकर कार्य करना चाहिये। आज बच्चे-बच्चे के जबान पर अंग्रेजी भाषा चढ़ी हुई है। उसको तो यह तक पता नहीं कि वह किस भाषा का प्रयोग कर रहा है। अपनी मातृभाषा को छोड़कर ये कैसा न्याय है। हम भारत के नागरिक हैं और हम अपनी भाषा को राजभाषा कहकर पुकारते हैं। यह ठीक नहीं हिंदी को राष्ट्र भाषा का दर्जा मिलना चाहिए। हम भारत के लोग हैं और भारत हमारी माता है। जिस प्रकार भूमि को हम मां का दर्जा देते हैं, उसी प्रकार भाषा को भी वही स्थान मिलना चाहिए।

भारतेंदु हरिश्वंद्र ने कहा है-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिनु निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

किसी भी समाज में अपनी मातृभाषा के ज्ञान के बिना जीना संभव नहीं है, अपने हृदय की पीड़ा को व्यक्त करने के लिए हमें इसका ज्ञान होना अति आवश्यक है। हमें अपनी मातृभाषा को आगे बढ़ाने के विषय में सोचना चाहिये ना कि इसको फूहड़ और गरीब लोगों की भाषा कहकर पुकारना चाहिए द्य हिन्दी में जो लोग बात करते हैं, उन्हें अक्सर लोग गंवार समझ लेते हैं, क्योंकि उनकी उतनी ही सोच होती है। उनको यह नहीं। पता होता कि वह अपनी मातृभाषा से प्रेम करता है। उसका सम्मान करता है। इसलिए ऐसे बोल रहा है। आज हम विश्व हिंदी दिवस मानाते हैं। हिंदी दिवस मानते हैं। लेकिन क्या इसके विकास के बारे में सोचते हैं। कवि या लेखक हम तो बन जाते हैं लेकिन इसको उसकी मंजिल तक नहीं पहुंचा पा रहे हैं। तो इसका विकास कैसे कर पाएंगे? इसको जन-जन के मुख पर पहुंचाना हमारा उद्देश्य होना चाहिए। तभी हम इसको राष्ट्र भाषा का दर्जा दिला पाने में सफल होंगे।

-दिवाकर पाण्डेय

हिन्दी बोलकर देखिए-अच्छा लगेगा

ये उर्दू के वे शब्द हैं जो आप और हम प्रतिदिन प्रयोग करते हैं। इन शब्दों को त्याग कर एक कोशिश राष्ट्रभाषा के शब्दों का प्रयोग करने की करें:

	उर्दू		हिन्दी
1.	ईमानदार	-	सत्यनिष्ठ, सत्य परायण
2.	इंतजार	-	प्रतीक्षा
3.	इत्तेफाक	-	संयोग
4.	सिर्फ	-	केवल, मात्र
5.	शहीद	-	बलिदान
6.	यकीन	-	विश्वास, भरोसा
7.	इस्तकबाल	-	स्वागत
8.	इस्तेमाल	-	उपयोग, प्रयोग
9.	किताब	-	पुस्तक
10.	मुल्क	-	देश
11.	कर्ज	-	ऋण
12.	तारीफ	-	प्रशंसा
13.	तारीख	-	दिनांक, तिथि
14.	इल्जाम	-	आरोप
15.	गुनाह	-	अपराध
16.	शुक्रिया	-	धन्यवाद, आभार
17.	सलाम	-	नमस्कार, प्रणाम
18.	मशहूर	-	प्रसिद्ध
19.	अगर	-	यदि
20.	ऐतराज	-	आपत्ति
21.	सियासत	-	राजनीति
22.	इंतकाम	-	प्रतिशोध
23.	इज्जत	-	मान, प्रतिष्ठा
24.	इलाका	-	क्षेत्र
25.	एहसान	-	आभार, उपकार
26.	अहसानफरामोश	-	कृतघ्न
27.	मसला	-	समस्या
28.	इश्तेहार	-	विज्ञापन
29.	इम्तेहान	-	परीक्षा
30.	कुबूल	-	स्वीकार

31.	मजबूर	–	विवश	66.	कामयाब	–	सफल
32.	मंजूरी	–	स्वीकृति	67.	गुलाम	–	दास
33.	इंतकाल	–	मृत्यु, निधन	68.	जन्नत	–	स्वर्ग
34.	बेइज्जती	–	तिरस्कार	69.	जहन्नुम	–	नर्क
35.	दस्तखत	–	हस्ताक्षर	70.	खौफ	–	डर
36.	हैरानी	–	आश्चर्य	71.	जश्न	–	उत्सव
37.	कोशिश	–	प्रयास, चेष्टा	72.	मुबारक	–	बधाई, शुभेच्छा
38.	किस्मत	–	भाग्य	73.	लिहाजा	–	इसलिए
39.	फैसला	–	निर्णय	74.	निकाह	–	विवाह/शादी
40.	हक	–	अधिकार	75.	बेहद	–	असीम
41.	मुमकिन	–	संभव	76.	तहत	–	अनुसार
42.	फर्ज	–	कर्तव्य	77.	हकीम	–	वैध
43.	उम्र	–	आयु	78.	नवाब	–	राजासाहब
44.	साल	–	वर्ष	79.	रुह	–	आत्मा
45.	शर्म	–	लज्जा	80.	खुदखुशी	–	आत्महत्या
46.	सवाल	–	प्रश्न	81.	इजहार	–	प्रस्ताव
47.	जवाब	–	उत्तर	82.	बादशाह	–	राजा/महाराजा
48.	जिम्मेदार	–	उत्तरदायी	83.	ख्वाहिश	–	महत्वाकांक्षा
49.	फतह	–	विजय	84.	जिस्म	–	शरीर/अंग
50.	धोखा	–	छल	85.	हैवान	–	दैत्य/असुर
51.	काबिल	–	योग्य	86.	रहम	–	दया
52.	करीब	–	समीप, निकट	87.	बेरहम	–	बेदर्द/दर्दनाक
53.	जिंदगी	–	जीवन	88.	खारिज	–	रद्द
54.	हकीकत	–	सत्य	89.	इस्तीफा	–	त्यागपत्र
55.	झूठ	–	मिथ्या, असत्य	90.	रोशनी	–	प्रकाश
56.	जल्दी	–	शीघ्र	91.	मसीहा	–	देवदूत
57.	इनाम	–	पुरस्कार	92.	पाक	–	पवित्र
58.	तोहफा	–	उपहार	93.	कत्ल	–	हत्या
59.	इलाज	–	उपचार	94.	कातिल	–	हत्यारा
60.	हुक्म	–	आदेश	95.	मुहैया	–	उपलब्ध
61.	शक	–	संदेह	96.	फीसदी	–	प्रतिशत
62.	ख्वाब	–	स्वप्न	97.	कायल	–	प्रशंसक
63.	तब्दील	–	परिवर्तित	98.	मुरीद	–	भक्त
64.	कसूर	–	दोष	99.	कीमत	–	मूल्य (मुद्रा)
65.	बेकसूर	–	निर्दोष	100.	वक्त	–	समय

101.	सुकून	-	शाँति
102.	आराम	-	विश्राम
103.	मशरूफ	-	व्यस्त
104.	हसीन	-	सुंदर
105.	कुदरत	-	प्रकृति
106.	करिश्मा	-	चमत्कार
107.	इजाद	-	आविष्कार
108.	जरूरत	-	आवश्यकता
109.	जरूर	-	अवश्य

चीन में चीनी, जापान में जापानी, ब्रिटेन में अंग्रेजी, पाकिस्तान में उर्दू तो हिंदुस्तान में हिन्दी क्यों नहीं?

हिन्दी प्रेमी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि इसे काटकर अपने कार्यालय में लगवाएं और अपने मित्रों, परिचितों और अन्य तक पहुंचाएं।

'हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, आइए इसका सम्मान करें।'

साभार –अंजान

अपनी हिन्दी

डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली

हिन्दी 134 करोड़ लोगों द्वारा बोली और समझी जानेवाली संसार की प्रथम भाषा है। चीन की मण्डारिन भाषा को बोलने वालों की संख्या 110 करोड़ है। चेक गणराज्य के प्रो. ओदोलेन स्मेकल के अनुसार यह संसार की सबसे सरल भाषा है जिसके व्याकरण को पोस्टकार्ड पर लिखा जा सकता है। इसकी करना और होना- दो क्रियाओं द्वारा जीवन के सभी व्यापारों को व्यक्त किया जा सकता है। संसार के लगभग 300 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ने और शोध करने की सुविधा है।

हिन्दी हिन्द की भाषा है। देश के पृथक पृथक् जनपदों में हिन्दी वहाँ की स्थानीय बोली की शैली में हिन्दी बोली जाती है। यह सारे भारत को जोड़नेवाली भाषा हैं। आजादी की लड़ाई में हिन्दी को हथियार बनाया गया था। इसकी भोजपुरी उपभाषा के 7 करोड़ लोग देश के बाहर दूसरे देशों में रहते हैं। वह भी अन्तरराष्ट्रीय भाषा बन गई है।

देश की पंजाबी, गुजराती, मराठी, तमिल और बंगला भाषाएँ भी अन्तरराष्ट्रीय भाषाएँ हैं। हिन्दी की सरलता और लोकप्रियता को देखकर आक्सफोर्ड क्षेत्र में ब्रिटेन ने डेढ़ दर्जन हिन्दी विद्यालय खोले हैं स्मरणीय बात यह है कि ब्रिटेन में 23 गाँव संस्कृत भाषी भी निकले हैं। एँगलोसेक्सन लोगों के बसने के पहले वहाँ भारतीयों की ही बस्तियाँ थीं।

हिन्दी संस्कृत की जेठी बेटी है। संस्कृत में शब्द निर्माण की अद्‌भूत क्षमता है। वह सुविधा हिन्दी को भी अनायास ही मिल गई है। हिन्दी में तत्सम और तद्‌भव के अतिरिक्त देशज शब्दावली भी विद्यमान है। विद्वानों का मानना है कि हिन्दी में स्वराघात बलाघात नहीं है। इस कारण वह प्रान्तीय भाषाओं की किसी भी शैली में बोली जा सकती है।

संस्कृत में व्युत्पत्ति और निरक्ति के आधार पर शब्द की यात्रा चलती है। उसकी शब्दावली अपने शब्दों के अर्थ स्वयं प्रकट कर देती है। हिन्दी के शब्द भी अपना अर्थ स्वयं घोषित कर देते हैं। संस्कृत का प्रभाव होने के कारण ऐसा होता है पर, संस्कृत में देशज शब्दों का सहारा अपवाद शब्द हैं और हिन्दी की अर्थवत्ता में वृद्धि करते हैं। हिन्दी की मौलिकता को उद्‌घोषित भी करते हैं।

अंगरेज चले गये पर अंगरेजी की गुलामी से मुक्ति नहीं मिली। इस कारण हिन्दी की अर्थ सम्पदा और संस्कारवत्ता नष्ट हुई। इस ओर हिन्दी भाषियों ने भी सावधानी नहीं बरती। महात्मा गाँधी ने तो कहा था कि हिन्दी और आजादी में से एक को चुनना पड़ेगा तो मैं हिन्दी को चुनूगाँ। हिन्दी की अवहेलना करने के कारण हमारी आजादी अधुरी रह गई। अवहेलना के कारण ही शुद्ध हिन्दी का स्वरूप ही खोने लगा।

अच्छे-अच्छे हिन्दी के विद्वान् भी हिन्दी के शुद्ध रूप का प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं। भाषा जीवन-साधना का अंग होती है मानवता का आभूषण होती है। उसकी इस गरिमा को सुरक्षित रखने का काम विद्वानों का ही है। जब तक अँगरेजी की गुलामी से मुक्त नहीं होंगे तब तक वह हिन्दी की छाती पर बैठी रहेगी। हिन्दी को केवल अनुवाद की भाषा नहीं समझना चाहिए।

साभार –हिन्दी प्रचार वाणी

महिला को पूर्णता प्रदान करता है 'सिंदूरदान'

हिंदू शादी में 'सिंदूरदान' एक महत्त्वपूर्ण रस्म है। फेरों के बाद दूल्हा दुल्हन की मांग में सिंदूर भरता है, जिसके बाद ही विवाह को पूर्ण माना जाता है।

सनातन संस्कृति में विवाह के दौरान कई ऐसे संस्कार होते हैं, जो जीवन भर पति-पत्नी के संबंधों को अटूट रखते हैं। सिंदूरदान इन्हीं रस्मों में से एक है। इस रस्म में पहली बार शादी के दौरान दुल्हन की मांग में दूल्हा एक सिक्के या अंगूठी से सिंदूर लगाता है। सिंदूरदान के बाद ही एक लड़की विवाहित मानी जाती है। सिंदूर सबसे पहले शादी वाले दिन ही लगाया जाता है और उसके बाद यह दैनिक श्रृंगार का हिस्सा बन जाता है।

प्रेम और शक्ति का प्रतीक है सिंदूर

मान्यता के अनुसार, विवाह के पश्चात मांग में सिंदूर भरने से पति की रक्षा होती है और स्त्री का सौभाग्य भी बना रहता है। सिंदूर का रंग लाल होता है, इसलिए इसे प्रेम और शक्ति का प्रतीक भी माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि सिंदूर लगाने से वैवाहिक रिश्ता मजबूत होता है।

क्या है पौराणिक मान्यता

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, प्रतिदिन मांग भरना अखंड सुहाग का प्रतीक होता है। शास्त्रों के अनुसार, जो सुहागिन स्त्री अपने सिर के बीचो-बीच मांग में सिंदूर भरती है, उसके पति के जीवन की रक्षा स्वयं मां सीता करती है।

साभार –पूनम चौधरी गुप्ता अध्यक्ष,
वैश्य क्रांति मोचा

दया करोः माँः मुझे मत मारो

सो किउ मंदा आखीए जित जमह राजान, महान हैं बेटियाँ

बहन, बेटी, माँ होती हैं ममता, रूप में बस जाता विधाता

दुखः सहकर न करे सुख की आशा, करूणा का भंडारण हैं बेटियाँ

देश की जान हैं बेटियाँ, भारत की शान हैं बेटियाँ।

कन्या से हमें मिलती है एक ऐसी नारी जो भविष्य की माँ, बहन, बेटी, पत्नी बन परिवार, समाज, प्रदेश एवं राष्ट्र को संस्कारवान, सुशिक्षित, सुसंस्कृत बनाती है इसीलिए शास्त्रों में "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि" कहा गया है। भारत के संविधान में निहित है कि किसी का जीवन लेना केवल घोर अपराध ही नहीं अपितु शास्त्रों के अनुसार पाप भी है। जीवन का विधाता केवल एकमात्र ईश्वर ही है जो जीवन को दे सकता है और ले सकता है जिसको श्री गुरुग्रंथसाहिब में प्रमाणित किया गया है– "मारे राखे एकों आप मानुख के किछु नाहीं हाथ" अर्थात् सर्वशक्तिमान ईश्वर ही है जो प्राणों का सम्पूर्ण विधाता है। देश के सर्वोच्चन्यायालय के निर्णयानुसार गर्भाधान के समय से ही भ्रूण एक मानव जीवन होता है इसलिए समस्त छोटे बड़े प्राणियों को अपना जीवन जीने का पूर्ण संवैधानिक अधिकार प्राप्त है। कभी सोचा भी है कि यदि कन्या भ्रूण हत्या का पाप इसी प्रकार से फलता-फूलता रहा तो पुत्र को जन्म देने वाली माँ कहाँ से आएगी, पुत्रवधू कहाँ से मिलेगी, रक्षाबन्धन पर्व का अस्तित्व कहाँ रहेगा क्योंकि भाई को राखी बांधने वाली बहन ही नहीं बचेगी। इस प्रकार सारे का सारा सामाजिक ढाँचा ही चरमरा जाएगा क्योंकि कन्या तो प्रेमरूपा, ज्ञानरूपा, शक्तिरूपा, मातृरूपा होती है।

साभार –सुरजीत सिंह

बेटियों की पुकार

तुम सबने मिलकर है मारा, मैं ऐसे न मरने वाली थी
कुछ समय बाद ही मैं किलकारी भरने वाली थी।
मुझे जन्म नहीं देना माँ, बेटे की इच्छ तुझ पर भारी थी
शिकायत मुझे है माँ तुमसे, नारी होकर भी क्या लाचारी थी।।

बोए जाते हैं बेटे, सहन करती हैं बेटियाँ। खाद पानी बेटों पर उभर आती हैं बेटियाँ।

दु:ख देते हैं बेटे, सहन करती हैं बेटियाँ। भाग्य की राह पर चलते हैं बेटे, अपना भाग्य स्वयं बनाती हैं बेटियाँ।।

झूठे दिलासे देते हैं बेटे, सच्चा आश्वासन देती हैं बेटियाँ। अंधे की लाठी कहलाते हैं बेटे, बुढापे का सहारा बनती हैं बेटियाँ।।

स्कूलों में पढ़ने जाते हैं बेटे, घर के काम में पिसती हैं बेटियाँ। आजादी से घूमते रहते हैं बेटे, पिंजरे में कैद रहती हैं बेटियाँ।।

दहेज की मांग करते हैं बेटे, उस आग में जलती हैं बेटियाँ। स्त्रियों का शोषण करते हैं बेटे, जीते जी मर जाती हैं बेटियाँ।।

बुरी नजर डालते हैं बेटे, अनेक अत्याचार सहन करती हैं बेटियाँ। सजा दी जाए इन दुष्कर्मियों को, तो बचाई जा सकती हैं बेटियाँ।

अभी न रोका गया इन अत्याचारों को, तो कल देखने को भी नहीं होंगी बेटियाँ।

इन्हें बचाने का, क्योंकि कल का भविष्य हैं बेटियाँ।।

बड़ी अच्छी होती हैं बेटियाँ, बड़ी प्यारी होती हैं बेटियाँ।

दुख सहकर भी प्रसन्न रहती हैं बेटियाँ कलियों सी अति कोमल रहती हैं बेटियाँ।

एक ही कुल की पहचान बनता है बेटा, दो दो कुलों की शान बन जाती हैं बेटियाँ।

सूरजनुमा उज्ज्वल प्रकाश देती हैं बेटियाँ, चन्द्रमा सी शीतल छाया बिखेरती हैं बेटियाँ,

पुत्र तो विवाह के बाद अपना घर बसा लेते हैं, माता-पिता के बुढ़ापे का सहारा होती हैं बेटियाँ।

जीवन के आनंद से सर्वथा त्याग दी जाती हैं बेटियाँ,
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी प्रमाणित होती हैं बेटियाँ।

दहेज कुप्रथा अभिशप्त कोख में कत्ल कर दी जाती हैं बेटियाँ।

कत्ल करना पाप है, घोर पाप को भी क्षमा कर जाती हैं बेटियाँ।

वृक्ष बोला पात से, सुन पत्ते मेरी बात,
इस घर की यह रीति है, इक आवत- इक जात।

नारी दुर्दशा

दुर्दशा उस देश में कन्याओं की पहचान है, जिस देश में कन्याओं की पूजा का प्रावधान है।

बाप के घर में पराया धन रही कन्या सदा, पति कब घर से निकाले इसका नहीं अनुमान है।

पोता हो पैदा तो दादी खुब लड्डू बाँटती, पोती हुई तो क्यों लगे ज्यों घर हुआ शमशान है।

पहला बच्चा वह भी कन्या परिवार ने निर्णय लिया, गर्भ गिरवाना या जाना मायके ही निदान है।

सुन्दर सुशिक्षित हो बहू लाई दहेज में कम अगर, जल मरी है स्टोव में कहना हुआ आसान है।

हाँ कमाती भी अगर पत्नी तो कर सकती नहीं, भाई को शिक्षित या रोगी बाप का कुछ ध्यान है।

माँग ली तैंतीस प्रतिशत रिज़र्वेशन जब से है, उठ खड़ा क्यों राजनीति में नया तूफान है।

कार्पोरेट समाज ने नारी को इतना धन दिया, नारी का निर्लज्ज होना हो गया आसान है।

गर्भ में भ्रूणों की हत्या कर बहू कल कहाँ से लाओगे, सरल इस चिन्ता को लेकर हर कोई परेशान है।

कन्या भ्रूण हत्या रूपी पाप में संलिप्त हो पुत्रइच्छा रूपी विकराल लोलुपता के वशीभूत हो हम इतने निष्ठुर, लाचार और स्वार्थी होते जा रहे हैं जहाँ कन्या की करूणामयी पुकार, नेत्रों से बहता ममतामयी जल, सिककियाँ, रूदन हमें न तो सुनाई देता है और न ही दिखाई देता है क्योंकि कानों में रूई ठूंसे हम जान बूझकर बहरे बने बैठे हैं, आँखों पर स्वार्थ रूपी काली पट्टी बांध, अंधे हो हम सच्चाई से मुख फेर रहे हैं, जिव्हा पर लालसा, स्वार्थरूपी ताला लगा रखा है इसलिए सद्भावना के दो शब्द भी नहीं बोल-सुन पा रहे हैं। धिक्कार है हमारे जीवन को एवं हमारी शर्मसार, होती नीच सोच-अवधारणा को।

मैं स्त्री हूँ

मैं स्त्री हूँ, मैं रचयिता की अद्‌भुत कृति हूँ।
जगत जननी हूँ, जीवन देती हूँ, मैं सृष्टि हूँ।।
प्रकृति हूँ, शांति हूँ, मैं एक शीतल छाया हूँ।
जग को साधने को एक मनमोहिनी माया हूँ।।
बेटी, बहन, बहू हूँ, गृहिणी हूँ, गृहलक्ष्मी हूँ।
मैं कर्तव्य हूँ, पुरूषार्थ हूँ, हर क्षेत्र में मैं चमकी हूँ।।
एक मंतव्य हूँ, संकल्प हूँ, दृढ़ इच्छा हूँ।
जगती को मिले सहज जो, अनुपम भिक्षा हूँ।।
भगिनी हूँ, भार्या हूँ, माँ हूँ, मेरे अनेकों रूप हैं।
समृद्धि, शिक्षा, उन्नति, जागृति, मेरे ही तो स्वरूप हैं।।
पराकाष्ठा पराक्रम की और वीरता की संज्ञा हूँ।
दुर्गा हूँ, खप्पर वाली काली हूँ, जगदंबा चामुंडा हूँ।।
पुरुष की सहभागी हूँ, सहधर्मिणी हूँ, अर्द्धांगिनी हूँ।
गृहस्थी का आधार हूँ, कर्तव्य-पथ गामिनी हूँ।।
चेतना हूँ, प्रेरणा हूँ, साध्य और साधन हूँ मैं।
भक्ति हूँ, मुक्ति हूँ, प्रार्थना और उपासना हूँ मैं।।
प्रेम की बहती गँगा हूँ, भक्ति का सागर अपार हूँ।
सौंदर्य की प्रतिमा, कला, कौशल, मैं ही शृंगार हूँ।।
मैं व्यष्टि हूँ, मैं समष्टि हूँ, सब मेरे रूप अलंकार।
मेरे बिना रूखा-सूखा, बेरंग, अधूरा यह संसार।।

–हरि ओम

कहां हूं मैं

रंग बिरंगे फूलों में हूं
पत्तों की हरियाली में हूं
कच्चे-पक्के फलों में हूं
बागों की अमराई में हूं,
गंध-स्वाद है जहां वहां मैं हूं।
पक्षी के कलरव में हूं
भौंरों की गुंजन में हूं
कोयल की कू-कू में हूं
चिड़ियों की चूं-चूं में हूं,
सुनो ध्यान से वहां मैं हूं।
शिशुओं की किलकारी में हूं
बच्चों की खिलखिलाहट में हूं
युवकों की हंसी ठिठोली में हूं
महिलाओं की दबी हंसी में हूं
जीवन जीते हंसकर जो उनकी सेहत का राज हूं मैं।

बांकी चितवन में मैं हूं
उसकी मधुर छुवन में मैं हूं
खुले अधरों के गीत में मैं हूं
महकते खत के मजमून में मैं हूं
बिन कहे जो सब कह दे, ऐसे मौन के मीत में मैं हूं।

माँ की ममता में मैं हूं
बाबू की क्षमता में मैं हूं
दादा-दादी के दुलार में मैं हूं
भाई-बहन का अनुराग मैं मैं हूं
रिश्तों में जहां प्यार बसा, समझो बस वहां मैं हूं।

पिया के मन की प्रीति हूं मैं
प्रियतम का उपहार हूं मैं
कान्हा के अधरों का श्रृंगार हूं मैं
मन-उपवन का बंधन हूं मैं
प्रणय-रीति है जहां, उनके मन आंगन में मैं हूं।

उगते सूरज की लाली में हूं
पर्वत की शिव शिला में हूं
चलती पवन के झकोरे में हूं
सरिता की बहती लहरों में हूं
जीवन का अवलंब जहां, बाहें फैलाए वहां मैं हूं।
गुरुद्वारे के परसादे में हूं
लंगर के हलुवा-पूरी लड्डू में हूं
ईदी सिंवई खीर बतासे में हूं
सूखी रोटी प्याज-नमक में हूं
भूखे की जो भूख मिटा दे खाने का वह दाना हूं मैं।

ठोकर लगे जहां, हाथ बढ़ा कर खड़ा हूं मैं
आंखों से आंसू जो निकले, मुस्काता पीर हटाता हूं मैं
निराशा के सागर में जो डूबे, उसको पार लगाता हूं मैं
जीवन की हर बिगड़ी बात, आकर तुरंत बनाता हूं मैं,
जो करते मुझको मन से याद उनका ही सुखदाता हूं मैं।

–अवधेन्द्र कुमार

मानव मन को बुद्ध करें हम

जल-थल-नभ सब शुद्ध करें हम,
जन-मन पुनः प्रबुद्ध करें हम।

जल न रहा तो कल क्या होगा?
उजड़ रहे जंगल, क्या होगा?
सांसों का संबल क्या होगा?
इन प्रश्नों का हल क्या होगा?
जूझ स्वयं से शुद्ध करें हम...।१।

जल-थल-नभ सब शुद्ध करें हम,
जन-मन पुनः प्रबुद्ध करें हम।

गुरुवाणी में सदियों पहले,
नानक जी ने भी फरमाया,
पवन पिता, धरती को माता,
पानी को गुरु-रूप बताया,
क्यों फिर धर्म विरुद्ध करें हम....।२।

जल-थल-नभ सब शुद्ध करें हम,
जन-मन पुनः प्रबुद्ध करें हम।

सदियों से पूजित हैं नदियां,
हिमगिरि उन्नत शिखर चोटियां,
हरा-भरा वसुधा का आंचल,
करें न इन सबका मन घायल,
कभी न इनको क्रुद्ध करें हम....।३।

जल-थल-नभ सब शुद्ध करें हम,
जन-मन पुनः प्रबुद्ध करें हम।

निर्मल हो नदियों की कल-कल,
खिलें-बढ़ें गिरि-वन नित पल-पल,
हो स्वछंद खग-मृग की हलचल,
खिला रहे यूं जीवन-शतदल*,
पथ न सृष्टि का रुद्ध करें हम...।४।
जल-थल-नभ सब शुद्ध करें हम,
जन-मन पुनः प्रबुद्ध करें हम।

फिर 'दधीचि' हड्डियां गलाएं,
पुनः 'भगीरथ' भू पर आएं,
फिर 'अगस्त्य' संकल्प उठाएं,
'अंगुलिमाल-मन' को समझाएं,
मानव-मन को बुद्ध करें हम...।५।

जल-थल-नभ सब शुद्ध करें हम,
जन-मन पुनः प्रबुद्ध करें हम।

साभार –संकल्प

पथिक हूं मैं

पथिक हूं मैं, दिग्भ्रमित नहीं.
सूक्ष्म अवकाश में हूं, स्थायी विराम में नहीं,
ये जो चंद लम्हे मैं रोया, इसे मेरा अंत न समझ,
जागूंगा मैं, दौड़ूंगा मैं और वीर कर क्षणित तम,
पहुंचूंगा मैं उस मंजिल की ओर,
क्योंकि पथिक हूं मैं, दिग्भ्रमित नहीं,
क्षणिक अवकाश में हूं. स्थायी विराम में नहीं।

हार नहीं मंजूर है

माना की मंजिल दूर है
पर हार नहीं मंजूर है।

मुश्किल तो आम है,
पर पाप तो विश्राम है
ढलना सूरज का काम है,
पर चलना जीवन का नाम है।

अरे बाधाएं भरपूर हैं,
पर हार नही मंजूर है।

एक जीवन मिला है मुझको
कैसे इसे लुटाऊं मैं,

माता पिता और देश के
काम किसी आ जाऊं मैं,

हाँ, नियति सबसे क्रूर है
पर हार नही मंजूर है।

जिद करो मंजिल पाने की
या तो फिर मिट जाने की,
आंख बंद तो अंधकार
जो खुली तो प्रलय मचाने की,

पर्वत वो ऊंचा जरूर है
पर हार नही मंजूर है।

साभार –संकल्प

श्री हरि किशन- जायसवाल समाज के प्रति सर्मपित एक व्यक्तित्व

श्री हरि किशन जायसवाल जी मूलरूप से दिल्ली के लाल कुंआ के निवासी थे। स्वर्गीय श्री हरसरन दास जायसवाल जी, जो जायसवाल बिरादरी के "प्रधान" के रूप में सम्मानित थे, के बड़े पुत्र थे। इनके छोटे भाई रवि भूषण जी का दो वर्ष पहले स्वर्गवास हो जाने के कारण यह बहुत ही व्यथित व दुखी रहते थे। श्री हरि किशन जी दो भाई तथा चार बहने संतोष, सावित्री, चित्रा तथा संदीप के साथ एक आदर्श परिवार के रूप में समाज में प्रतिष्ठित थे। इनका शुभ विवाह सिकारपुर, बुलन्दशहर में श्रीमती आशा जी के साथ हुआ था तथा इनका एक पुत्र अंकुश है जो प्राईवेट सेक्टर में अच्छे पद पर नौकरी कर रहे हैं।

श्री हरि किशन जी बहुत ही निष्ठावान, सौम्य, सरल, ईमानदार तथा मृदुभाषी थे। अखिल भारतीय जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा का लम्बे समय तक कोषाध्यक्ष पद का दायित्व बड़े ही लगन व इमानदारी से निभाया। समाज के काम में कोई व्यवधान न हो इसलिए इन्होंने लकड़ी का व्यवसाय बन्द कर दिया तथा जायसवाल समाज दिल्ली का कोषाध्यक्ष पद पर बड़े ही जिम्मेदारी तथा ईमानदारी से कार्य किया। इनकी लगन व निष्ठा को देखते हुए इन्हे जायसवाल समाज दिल्ली का महासचिव का कार्यभार भी दिया गया। महासचिव के कार्य को भी दीर्घ काल तक करने के बाद अस्वस्थ होने के कारण छोड़ दिया। जायसवाल समाज दिल्ली के प्रति इनकी लगन व तपस्या का सभी प्रशंसा करते हैं।

इनका स्वर्गवास लगभग 80 वर्ष की उम्र में 24 अगस्त 2023 को प्रातः 7 बजे प्रीत बिहार, दिल्ली के निवास स्थान पर हो गया। इनकी अन्त्येष्टी दाह-संस्कार निगम बोध घाट, दिल्ली पर सम्पन्न हुआ। इनकी अन्तयेष्टी में जायसवाल समाज दिल्ली व अखिल भारतीय जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा के श्री अशोक कुमार जायसवाल, श्री रमेश बाबु जायसवाल, श्री छोटे लाल जायसवाल, श्री विजय कुमार जायसवाल, श्री मनोज कुमार जायसवाल, श्री राजेन्द्र कुमार जायसवाल, श्री तरूण जायसवाल, श्री राम प्रकाश जायसवाल, श्री ओम जायसवाल, श्री नमन चौधरी, श्री अवनिश जायवाल, श्री पवन जायसवाल, श्री निखिल जायसवाल, श्री संजय जायसवाल सहित काफी संख्या में रिश्तेदार व कालोनी के लोग उपस्थित हुए। 3 सितम्बर को प्राचीन हुमान मंदिर, शंकर विहार, स्वास्थ विहार, विकास मार्ग पर रस्म पगड़ी, भजन व प्रसाद का वितरण किया गया। रस्म पगड़ी व भजन में स्वजातीय, रिश्तेदार, कालोनी व समाज सेवी संस्थाओं के काफी संख्या में लोग उपस्थित होकर अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित किया। श्रद्धांजलि सभा में श्री वेदकुमार जायसवाल, संरक्षक, भारतीय कलचुरि जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा, अस्वस्थ होने के बावजूद भी आक्सीजन यंत्र के साथ उपस्थित हुए, श्री ब्रजेश जायसवाल, श्री राजीव जायसवाल, श्री उमेश जाससवाल, श्री रमेश बाबू जायसवाल तथा श्री हरिहर प्रसाद सहित अनेक गणमान्य पदाधिकारी जायसवाल समाज दिल्ली तथा श्री कृष्ण कुमार जायसवाल, जायसवाल जागृति एवं श्री रमेश जायसवाल उदयपुर भी अपनी विनम्र श्रद्धांजलि प्रस्तुत की। जायसवाल जागृति संस्था की ओर से भी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की गयी। श्री हरि किशन जी के स्वभाव की एक विशेषता थी कि वे बहुत ही सरल व ईमानदार व्यक्ति थे, किसी काम को ठान लिया तो हर विपरीत परिस्थिति में भी सफल होने का प्रयास करते थे। अखिल भारतीय जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा की बैठकों में देश के कोने-कोने में जाकर सम्मिलित होते थे यहां तक कि मारीशस भी जायसवाल समाज की बैठक में सम्मिलित होने की यात्रा की। श्री हरि किशन जी के असामयिक स्वर्गवास के कारण जायवाल समाज दिल्ली में इनकी कमी हमेशा महसूस होगी। परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि इन्हें मोक्ष की प्राप्ति हो।

प्रधान सम्पादक

जायसवाल जागृति

आजीवन सदस्यता आवेदन पत्र

1. पूरा नाम .....

2. शैक्षिक योग्यता .....

3. आवासीय पता .....

.....

.....

पिन कोड :.....

फोन : .....

4. व्यवसाय / कार्यालय .....

.....

.....

पिन कोड :..... फोन/मो. : .....

5. विशेष सामाजिक कार्य

प्रस्तावक :

आवेदक के हस्ताक्षर

अनुमोदक (महासचिव)-M. 9868241044

आजीवन सदस्यता शुल्क : रू : 1500/-

भुगतान विधि : चेक, ड्राफ्ट, ऑनलाइन

जायसवाल जागृति खाता विवरण :-

Axis Bank खाता संख्या 015010100247337, IFSC UTIB 0000015

ONLINE भुगतान के तुरंत बाद

कुर्यात् सदा मंगलम्

नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य हैं। उचित होगा यदि आप या तो दो मोबाइल नं. दें अथवा एक मोबाइल और एक लैंडलाइन टेलीफोन नम्बर भी अवश्य दें।

वैवाहिकी

नोटः सदस्यों/पाठकों की सुविधा हेतु 'वैवाहिकी' को अंग्रेजी अल्फाबेट्स के क्रम में अर्थात अभिभावकों के नामों के अनुसार (वर्णक्रमानुसार) संकलित/वर्गीकृत किया गया है। मांगलिक एवं सामान्य वर्ग को अलग-अलग शीर्षक के अंतर्गत दर्शाया गया है।

''वैवाहिकी' शुल्क

प्रत्येक अभिभावक / विज्ञापनदाता से अंतिम पृष्ठ पर ग्राहक / सदस्यता के लिए दर्शाए गए 1500/ रु. के शुल्क में वैवाहिक विज्ञापन के प्रकाशन का शुल्क शामिल है। पत्रिका की एक प्रति उन्हें भेजी जाएगी। सुधी एवं सम्मानित विज्ञापनदाताओं से यह भी निवेदन है कि वे पत्रिका में विज्ञापन के माध्यम विवाह तय होने पर मंगल-निधि के रूप में अपनी सामर्थ्य के अनुसार यथेष्ट सहयोग राशि भेजने की कृपा अवश्य करें, क्योंकि इस स्तर की पत्रिका के प्रकाशन पर संस्था को आर्थिक व्यय का भार भी वहन करना पड़ता है।

विवाह सम्बन्ध तय हो जाने पर प्रधान/कार्यकारी संपादक मोबाइल को सम्बन्धित क्रम संख्या की सूचना देते हुए टेलीफोन अथवा कोरियर द्वारा पत्र भेजकर तुरंत सूचित करें। सदस्यता शुल्क अथवा विज्ञापन की राशि नीचे दिए गए पते पर भेजें। हमारे **AXIS Bank** के **A/C No.** 0150101-00247337 **IFSC-UTIB-0000015** में सीधे जमा कराके हमें तदनुसार सूचित करें। स्मरण रहे, **Net-Banking** द्वारा जमा की गई राशि की रसीद या उसकी प्रतिलिपि सलंग्न करना नितान्त अनिवार्य है।

'विशेष सूचना'

''वैवाहिकी स्तम्भ'' के अंतर्गत 'मांगलिक वर्ग' एवं 'सामान्य वर्ग' के अतिरिक्त एक तीसरा वर्ग *''तलाकशुदा (Divorcee) विधुर, विधवा आदि अन्य वर्ग''* भी आरम्भ किया गया है। हालांकि हमारी दृढ़ मान्यता है कि परिवारों में यह स्थिति किसी भी स्थिति में आनी ही नहीं चाहिए। हर स्थिति में विवाह की पवित्र संस्था का प्रत्येक पक्ष को सम्मान देते हुए उसे बनाये रखना चाहिए। किंतु देखा गया है कि कहीं मिथ्या दंभ व **Ego** के कारण तो कहीं अन्य अपरिहार्य कारणों से अलगाव प्रत्येक पक्ष के लिए अवश्यम्भावी हो जाता है। अतः जीवन के बिखरे सूत्रों को नए सिरे से पिरोना भी अनिवार्य हो जाता है। इसलिए इस विशेष वर्ग की आवश्यकता की पूर्ति के लिए यह स्तम्भ आरंभ किया गया है। यदि कोई सज्जन अपना या लड़के-लड़की का नाम गोपनीय रखना चाहते हैं तो इसकी भी व्यवस्था की जा सकती है। ऐसे बंधुगण या तो हमसे या फिर संबंधित क्रमांक विशेष के टेलीफोन नम्बर से सम्पर्क कर सकते हैं। ''सर्वे भवन्तु सुखिनः''। अस्तु।

आजकल समाज का एक बड़ा वर्ग प्रोफेशनल कारणों से विदेशों में स्थायी या अस्थायी रूप से बस गया है। इनकी ओर से भी अपने संतानों के वैवाहिक सम्बन्ध के लिए हमारे पास पूछताछ हो रही है। अतः इस वर्ग विशेष की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अनिवासी भारतीय **(NRI)** वर्ग स्तंम्भ आरंभ किया गया है।

विशेष सूचनाः जिन वैवाहिक विज्ञापनदाताओं का विज्ञापन पिछले तीन वर्षों से लगातार प्रकाशित किया जा रहा था, उनके वैवाहिक विज्ञापन अब प्रकाशित नहीं किए जा रहे हैं। अतः ऐसे जो भी विज्ञापन-दाता पुनः आगे भी अपने वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित कराने के इच्छुक हैं, वे कृपया हमारे कोषाध्यक्ष श्री पंकज जायसवाल अथवा श्री माखन चौधरी, उपाध्यक्ष, (वित्त) मो0-99112113033 से तुरंत सम्पर्क करके **M-9818426123, 011-41687467** *एवं 1500/-रु. का शुल्क प्रषित करके विज्ञापन पुनः प्रकाशित करवाने का कष्ट करें।*

राशि रेखांकित चेक, रेखांकित बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा ''जायसवाल जागृति'' के नाम से देय होना चाहिए। शुल्क भेजते समय अपना पूरा नाम पता, पिन कोड आदि स्पष्ट लिखें ताकि पत्रिका आपको नियमित रूप से मिलती रहे। विशेषः- जिन सज्जनों को डाक से पत्रिका प्राप्त करने में असुविधा हो रही हो, वे कृपया 200 रु. (दो सौ रुपये) वार्षिक शुल्क अलग से प्रेषित कर कोरियर अथवा ***Regd. Post*** *द्वारा पत्रिका मंगवा सकते हैः-*

सम्पादक मण्डल

(कृपया वैवाहिकी सहयोग के लिए अन्तिम पृष्ठ देखें)

अति विनम्र निवेदन

अभिभावकों से यह विनम्र अनुरोध है कि भविष्य में शुभविवाह निश्चित होने अथवा शुभ विवाह सम्पन्न होनें पर जायसवाल जागृति को यथाशीघ्र अवश्य सूचित करें ताकि हम अपनी संस्था की शुभकामना एवं बधाई संदेश वर-वधु के लिए प्रकाशित कर सकें। आप के सहयोग की अपेक्षा में जायसवाल जागृति।

सम्पादक मण्डल

अनिवासी भारतीय (NRI) वर्ग

1. **अभिभावक–**Anil Kumar Jaiswal (Engineer), Prop. Shubham Builders, H.No. 2708, DLF City, Phase-IV, Gurugram, (Near Galaria Market Shopping Complex), M.9811663284, (0124) 2386815

   पुत्र–Abhimanyu Jaiswal, DOB, 27 January 1994, 5'9", MBA Finance (New York USA) Noridian Healthcare Solution, LIC Compensation Consultant, House: West FARGO, North Dakoota, U.S. Phone: (940) 3909979

2. **अभिभावक–डा. देवेन्द्र कुमार जायसवाल (बहरीन के अस्पताल में डॉक्टर) माताजी: प्रीति जायसवाल (बहरीन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की लेक्चरर) फोन न.–91. 9871971380, (+973) 5393228 बहरीन) कोठी C-565 NRI City, Sector Omega-II, Greater Noida, U.P. प्रतिष्ठित परिवार, अधिकांश दिल्ली में प्रतिष्ठित परिवार, अधिकांश दिल्ली में**

   पुत्री–नेहा जायसवाल, जन्मतिथि–23-8-1994, 5'2", साफ रंग गेहुँआ, Doing Master in Computer System in Australia (Final Semester).

3. **अभिभावक :** श्री मनोज कुमार गुप्ता, (Sr. Sec. Officer Afcs) 1240/C-5 प्रीत विहार, चाणक्य अपार्टमेंन्ट के सामने आदर्श नगर, नमोदा रोड, जबलपुर-482001 (मध्यप्रदेश), Ph : 09752418123, 8349231125 **पत्र व्यवहार का पता:** श्री श्रीराम जायसवाल Retd SP/CBI, 10 शांति निकेतन, 89, नर्मदा रोड, जबलपुर (म.प्र.)-482001

   पुत्र : सोमेश कुमार, 22-4-1991, (5:10 AM, जबलपुर) 5'6", सुन्दर स्मार्ट, B.Tech. MS(CS), मोर्गन स्टेनली में Technical Associate, न्यूयार्क (अमेरिका) पैकेज 1 लाख डॉलर +बोनस।

4. **Father-** Dr. K. Kant Jaiswal has his own property with gas station in USA. Contact No. 001-6019544901 (Whatspp)

   Daughter : Unnati Jaiswal, DOB- 16-Oct-2000, Time of Birth-9:50 AM, Birth Place- Sirsa, Qualification-Graducation, now pursuing Master degree in Science education (Biology)

मांगलिक वर्ग

A1. **अभिभावक :** श्री बलजीत कुमार जायसवाल 5/सी, एवन कालोनी, नवीन नगर, सहारनपुर (उ.प्र.)-247001 ड रू 9412453810

   पुत्र : डॉ. कमल जायसवाल (आंशिक मांगलिक), 5'8", 15-9-87, गेहुंआ, B.P.T, MPT (Neuro physiothe rapist नोएडा स्थित Health Care Comp. Pvt में कार्यरत, पैकेज 5 लाख रुपये वार्षिक।

2. **अभिभावक: राजकिशोर जायसवाल,** A-106/1, Fourth Floor, Joshi Colony, I.P. Extension, Delhi-110092, Mob-9717546924, 9810950426

   पुत्री (1)- रीतू जायसवाल (मांगलिक) 11-8-1990, 4'9", colour Normal, B.com (Hons) CA (Inter)

   पुत्री (2)- अल्का जायसवाल (आंशिक मांगलिक) 2-10-1992, 4'9", colour wheatish, B.Com (Hons), CA (Foundation)

3. **अभिभावक- श्रीमती अन्नपूर्णा गुप्ता पत्नी स्व. श्री संतोष कुमार गुप्ता**, म. नं. 1306, गली नं. 23, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, वैस्ट करावल नगर, दिल्ली-110094, M.-9818289471, 011-22933951

   पुत्री- सृष्टि (मांगलिक), जन्म 30-9-1989, जन्म समय शाम 6:00 बजे दिल्ली में, 4'10" गोरी, बी.ए., मास्टर डिग्री माँश कमनिकेशन, रेडियो, टी.वी. जनर्लिज्म डिप्लौमा, सर्विस Asst. Managar Marketing, Salary 20,000 P.M.

4. **अभिभावक: विजयकुमार जायसवाल**-टिम्बर मर्चेन्ट, सी-94/1, चन्द्रपुरी, चांदबाग, भजनपुरा रेडलाइट के पास, दिल्ली-110094 फोन नं. 09999285302

   पुत्री-मेघा, (मांगलिक) जन्मतिथि-04 अगस्त 1989, 7 बजे सायं (दिल्ली), साफ रंग, 5 फिट 2 इंच, शिक्षा-**सी.ए., एम. बी.ए.** प्राइवेट कम्पनी ओखला, दिल्ली में कार्यरत, पैकेज 10-12 लाख वार्षिक। स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

5. **अभिभावक :** अनिल कुमार जायसवाल, 41/1-A/1 गली.14, ईस्ट आजाद नगर, कृष्णा नगर, दिल्ली-110054, M : 9210705572

   पुत्र (1) : हिमांशु जायसवाल **(मांगलिक)**, B.A. 5'8" जन्म 17-2-1993 (9.30 AM, Delhi) गोरा, प्रो. मयंक एंटरप्राइस (Ladies garments & Accessories) तथा Lace के होलसेल व्यवसायी। **आय-2 लाख रुपये मासिक।**

   पुत्री (2) : आकांक्षा **(मांगलिक)**, 5'3" जन्म 17-2-1993 (9.05 AM Delhi) गोरी, MBA (final) from DU.

6. **अभिभावक :** श्री जुगल किशोर जायसवाल (व्यवसायी) मण्डी चौक, विकासनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड)

   पुत्री : स्वप्निल जायसवाल, (आंशिक मांगलिक) M.Tech (Comp. Sc), 5'4", 26-10-1989, (8.35AM, देहरादून) MNC नोएडा में कार्यरत, पैकेज 2.50 लाख रुपये।

7. **अभिभावक–**श्री शिव प्रसाद जायसवाल (दिल्ली सरकार में Class-I अधिकारी) पता–391 F, पॉकेट-2, फेज-I, मयूर विहार, दिल्ली-110091(011)-22753484, **फोन न.–** 9599959013

   पुत्र–अप्रतिम जायसवाल (मांगलिक) जन्मतिथि–4-8-1992, (8.03 PM इलाहाबाद) 6'1', गेहुआ B.Tech, fidelity International, नोएडा में कार्यरत, पैकेज 10 लाख।

8. **अभिभावक-**श्री तेज नारायण जायसवाल (प्रतिष्ठित व्यवसायी) 104A/360, रामबाग, कानपुर-208012(उ.प्र.) M.-9839027212, 9657129022 Email : aalekhjaiwswal@yahoo.com

   पुत्र-आलेख (आशिक मागलिक) एकलौता पुत्र, 23-06-1990, 5'8" गेहुआ आकर्षक एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व प्रशिक्षित B.Tech, Business हेतु प्रोफेशनली क्वालिफाइड या टीचर कन्या को वरीयता।

9. **अभिभावक–**अखिलेश जायसवाल, जायसवाल फार्मा 171ए, ठेठरी बाजार चौक, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश, फोन न.– 9532252230, 9911515253

पुत्री–सुष्मिता जायसवाल, **(मांगलिक)**, जन्मतिथि–11-11-1992, (सुल्तानपुर) 5'3', fair, M.Tech (E.C.) Gold Medalist, Ph.D Ist Year M.N.N.IT. Allahabad U.P.

10. **अभिभावकः** Rajeev kumar Jaiswal, 35 Swami Vivekananda Marg Prayagraj Uttar Pradesh, Mob. 9336901230, 9415238934

पुत्रः Rajat Jaiswal. (Varun Jaiswal), B.tech, DOB. Age 30, (electrical home appliances) wholesale and retail Firm name-shree electrical & Co Prayagraj

11. Father-Shri Dinesh Chandra Jaiswal (Business Man) Address: 113, Lukarganj, Beharikuti, Allahabad (UP) Contact No. 9305094705, 9453993978 Guardian Subhash Jaiswal M.no 9695959000

Daughter-Kr Arpita Shilpi Jaiswal DOB 5th Dec 1985 Birth Time 04:26 AM Place of Birth Allahabad (Uttar Pradesh) Height 5.5" Complexion ' Fair & Charming Nature Religious, Mild, Soft Spoken, Diligent Hobbies 'Reading, Cooking, Listening Music Qualification B.SC, MBA Occupation : Deputy Manager- Operations (Matrix Cellular - Delhi) Language Known ¥ Hindi & English

सामान्य वर्ग

1. **अभिभावक :** श्री अरुण कुमार चौधरी, कोशी एक्सरे क्लिनिक, एम.जी.मार्ग., खगड़िया विहार-851204 M : 9431417963
पुत्री : श्वेता कुमारी, 5'5" जन्म 9-9-1988, (समस्तीपुर) B.C.A, गोरी स्लिम, PNB रायपुर में Probationary Officer.

2. **अभिभावक :** श्री अनिल कु. जायसवाल 160, अनूप नगर रोठा रोड, मेरठ-250001 (उ.प्र.) M : 9219613863
पुत्र : अंकित जायसवाल, 4-11-1993 (9.25 PM मेरठ, 5'6", गेहुँआ, B. Com., ट्रांसपोर्ट व्यवसाय, वार्षिक आय 4 लाख स्मार्ट व्यक्तित्व।

3. **अभिभावक :** श्री ओमप्रकाश जायसवाल (चावल के थोक व्यवसायी) D-II, 397-398, पहली मंजिल, Sector-7 रोहिणी, दिल्ली-110085 M : 9899424368, 8178845541
पुत्र : सुधीर कुमार जायसवाल, 22-2-1988 (7.42 AM सिलीगुड़ी, प. बंगाल), 5'7", IDI MIA, नोएडा में Sr. Software Enginner, B.Tech, साफ, स्मार्ट व्यक्तित्व, Email : Sudhirjustme@gmail.com.

4. **अभिभावक–**श्री अनिल कुमार जायसवाल, (Retd. Supdt. Archeological Survey of India)–74/22, Shipra Path, Mansarovar, Jaipur फोन न.–0759792110, 09929660874
पुत्र–आकाश जायसवाल, जन्मतिथि–5-11-1988, (4.35 AM देहरादून) 5'10', M.Com, MBA (IBS) Credit manager, Barclays Bank) पैकेज 17.5 लाख, शिक्षित परिवार, स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

5. **अभिभावक :** स्व. श्री बिहारी लाल जायसवाल दिल्ली दरवाजे बाहर,दारू गोदाम के पास, कोठिया पावी मोहल्ला, अलवर (राजस्थान) M : 7014453944, 9667152823, 9309232213 **पुत्र (1) :** रिंकू, 10-12-1994, 12th, ITI, self Business. **पुत्र (2) :** पिंकू 6-6-1996, Diploma in mechanical, self business.

6. **अभिभावक :** श्री सी.पी. गुप्ता (Sr. Advocate), 193, कल्पना नगर, सिविल लाइन्स, इटावा-20600। प्रतिष्ठित परिवार (M) 9410485758, 7417715565
पुत्री : डॉ. निधि गुप्ता, जन्म-24-01-1980, (16.20 P.M. इटावा उ.प्र.), MBBS, DOMS, (GRMC ग्वालियर), Pursing MD in Microbiology (BHU), 5 फुट 1 इंच, स्लिम, सुन्दर, गौरवर्ण, आकर्षक, स्मार्ट व्यक्तित्व। पेंटिंग पठन-पाठन, पाक-कला एवं गृह-सज्जा का शौक। चार वर्ष तक Rural PGI, सैफई इटावा के नेत्र विभाग में Sr. Resident, परिवार में अन्य सदस्य सिविल जज अथवा मेडिकल व्यवसाय में संलग्न।

7. **अभिभावकः श्रीमती चंद्रकांता,** 5 जॉली कॉम्प्लेक्स अभियन्ता नगर, नाशिक (महाराष्ट्र)-422008 M. 9871262622, 8983574660
पुत्र- गौरव, 29-04-1982 (04: 16P.M. दिल्ली), 5'8", B.C.A. Deals in Finance and Share Market, Rs 30,000/-P.M. शिक्षक, बड़ी बहिन कनाडा निवासी।

8. **अभिभावक–**श्री देवेन्द्र जायसवाल, पता–D-219 आनंद विहार, दिल्ली-110092, फोन न.–9212725140, 9555541050
भतीजी–मेघा जायसवाल, जन्मतिथि–16-12-1984, 5'2", MA (ECO), B.Ed, Pursuing Ph.D. स्मार्ट fair, Hobbies : Reading, teaching.

9. **अभिभावक**-श्री फुलेन्द्र चौधरी, सम्पर्क डॉ. सत्यदेव गुप्ता जायसवाल L-1/56, श्री कृष्ण पुरी, बोरिंग रोड, पटना-800001 (बिहार) M-9308741023
पुत्री-प्रियंका चौधरी, B.A., 5'6" 4-9-1988 अति सुन्दर गोरी, स्लिम, दिल्ली पब्लिक स्कूल में टीचर, पति की अल्प बीमारी के कारण मृत्यु दो पुत्र क्रमशः 9-10 वर्ष बच्चों को नाना-नानी रखने को तैयार, योग्य संस्कारी वर अपेक्षित विधुर भी मान्य।

10. Father's- Shri G.L. Chouksey, Retd. From Forest dept., M.P. Govt., Bhopal, 43 Prakash Nagar, Ayodhya Bypass road, Piplani, Bhopal-462022 Ph. 7987142364, 9981770414.
Daughter : MEENAL CHOUKSEY, 09-06-1985 (Time 00.10), Prakash Nagar, Bhopal, M.P., Height-5'.3", Fair, B.Sc., MBA (Finance), PGDCA, Manager, F.C.I. (Govt. of India), West Zone, M.P. Region, 10 Lakhs P.A.

11. **अभिभावक-** गंगा राम जायसवाल, **पता:** Station Road, Purani Basti, Near purani Thana Basti, District Basti (UP)-272002 M.-9044015597, 8604262492
पुत्र- विशाल जायसवाल, 5'7" 15-1-1987 Qualification B.A. profession; SBI Life Insurance Advisior + SBI ATM Guard, Income 2.5 Lac.

12. **Fathers:** Girvar Singh Rai- (Railway Contractor) In front of Jamuna bai Temple, 70 Colonypura, Ghasmandi, Gwalior (M.P.) 474003; Mob. 9329092587
Daughter: Neha Rai, DOB: 27.01.1995 (5:00 AM) Place of Birth: Ashok Nagar, Madhya Pradesh, Complexion: Fair Height: 5'7"
Qualification: LL.B, B.A. Programme 12th Standard (M.P. Board) Faculty of Law (University of Delhi) Lady Shri Ram College for Women (University of Delhi)

13. **अभिभावक :** श्री हरि प्रकाश जायसवाल म.न. 1292/28 फ्रेन्डस कॉलोनी, सिद्धेश्वर मंदिर के पास, झांसी (उ.प्र.) -282001 M : 07460000268, 09839419372
पुत्र : विकास जायसवाल, 29 वर्ष, कद 5'8" . B.Arch. Master in Architecture (N.I.T. Bhopal) राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत **आय 1 लाख- रु. प्रतिमाह।**

14. **अभिभावक :** श्री इंदकुमार जायसवाल (B.Tech, MBA)] Asian Paints Ltd, Mumbai में वरिष्ठ पद पर कार्यरत 402 धनशिला अहिंसा मार्ग, खार (पश्चिम) मुंबई-400-052 M. 09820215011/09820194569 (मूल निवास-इलाहाबाद)
पुत्री : स्मृति, 8-9-1985 B.M.S. (Bachelor of Management Science), M.Com, CFA (Leve l I & II), MBA (from Mumbai), 5'2", स्लिम सुंदर आकर्षक मुंबई स्थित बैंक ऑफ अमेरिका में कार्यरत, अच्छा वेतन।

15. **अभिभावक-** श्री कृष्णा प्रसाद एवं सविता चौधरी, F124, पॉडव नगर गली न० 6, दिल्ली- 110092, मो० 919560444808 (सुलतानगंज (बिहार) के रहने वाले हैं।)
पुत्री (1) निक्की, उम्र 31 वर्ष, उजली गोरी 5'10" कम्प्यूटर ग्राफिक्स में कैरियर, बी.ए (अर्थशास्त्र) प्राइवेट कंपनी दिल्ली में नौकरी, पाक कला में प्रवीण।
(2) सोनी, उम्र 28 वर्ष, सुन्दर, गोरी 5'5" कम्प्यूटर ग्राफिक्स की जानकारी। बी.ए. (अर्थशास्त्र) दिल्ली में प्राइवेट नौकरी।

16. **अभिभावक-** मुकेश कुमार जायसवाल, स्टेट बैंक वाली गली, मकान नं. 1597, कच्ची मंडी कोसी कलामथुरा-281403 M.-8533800619, 7906018745
पुत्र- रोहित जायसवाल, 6'1" 27-5-1988 (8:25 PM Kosikalan) B.A. Rajasthan University Exam by D.G.C.A. (all cleared) CPL and PPL, Licence Business Lazy Mozo Back Peeker Foreigners Guest House at Civil Line Jaipur (Rajasthan)

17. **अभिभावक : श्रीमती मीना देवी जायसवाल,** D. 14/88, टेढ़ी नीम, दशाश्वमेघ, वाराणसी (उ.प्र.) M 9935470506
पुत्र- सूरज कुमार जायसवाल 15-07-1989 (6.20 P.M. वाराणसी) 5' 5", स्मार्ट, आकर्षक ग्रेज्युएट, B.H.U में Music Teacher तथा सितार और तबला आदि वाद्य उपकरणों के व्यापारी, स्वयं का मकान।

18. **अभिभावक-**श्री मोहनीश जायसवाल, (व्यवसायी), फोन न. -9654778803
भाई-श्री प्रशान्त जायसवाल, 26-6-1990, (10.33 AM) 5'7', B.Com, spectacle frames wholeseller, स्मार्ट, पैकेज 1 लाख प्रति माह।

19. **अभिभावक :** श्री ओम प्रकाश चौकसे (किसान) एवं श्रीमती आभा चौकसे, करेली, नरसिंहपुर (म.प्र.) M : 9826611582
पुत्री : वसुन्धरा चौकसे, 17.8.1988ए (करेली म.प्र. 6.03 AM) 5'7", B.E. (IT) from LNCT Bhopal. Rank Asstt. इंडियन कोस्ट गार्ड में Commandant, Air station चेन्नई में Logistics office के पद पर तैनात 3-5 वर्ष की service seriority.

20. **अभिभावक :** श्री ओम प्रकाश जायसवाल Prop. Navjoyti Enterprises, ब्लॉक UP, प्लाट नं. 55 प्रथम मंजिल पीतमपुरा, दिल्ली-110034, M : 9810562034 Email : rahul.regard@gmail.com.
पुत्र (1) : राहुल, 02-01-1989, (5.35,pm कोलकाता), 5'7" गौरवर्ण, स्मार्ट, MBA, स्वयं का व्यवसाय (Electrical Accessories)
पुत्र (2) : विनय, 26-05-1990, (4.17,pm दिल्ली) MCA, 5'8", MNC में Software Engineer, अच्छा पैकेज, गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।
पुत्री (1) : नमिता, 24-08-1992, (8.15,am कोलकात), 5'2", B.Tech (MDU University), MNC में Software Engineer, अच्छा पैकेज गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।

21. **अभिभावक :** प्रदीप कुमार जायसवाल (Business man), मकान नं. 1076, Ward No. 3 कैनाल रोड, हर्बटपुर (देहरादून)-248142, M : 91-7017792611, 91-9412150835
पुत्री : कनिका जायसवाल, 5'2" जन्म 16-7-1990, M.Com, वर्तमान में Del. Ed. कर रही है तथा विद्यालय में पढ़ा भी रही है। तथा बैंक की तैयारी भी कर रही है। गोरी, इकहरा वदन, सुन्दर।

22. **अभिभावक:** प्रमोद कुमार (सुपुत्र डॉ. सत्यदेव गुप्ता) C/o L-1/56 श्री कृष्णापुरी बोरिंग रोड, पटना-800001 (बिहार) फोन 9430060645, 9308741023, 0612-2541587
पुत्री-मुदिता 15-3-89, 5'4" B.A. (Hons. Eng.) PGDM, सुंदर, गोरी, आत्मनिर्भर संस्कारी वर अपेक्षित।

23. **अभिभावक :** श्री प्यारे लाल जायसवाल, (व्यवसायी), 176, मूनगली, गार्डन, साहुकार लाइन, हलद्वानी (नैनीताल) उत्तर प्रदेश
पौत्र : आकाश कुमार, पारिवारिक कारोबार में सलग्न सुंदर, स्वस्थ, स्मार्ट, आकर्षक, 25 वर्ष, B.Tech, जन्म 15-8-1991, (02:42 pm हलद्वानी)।

24. **अभिभावक :** श्री पी.सी. जायसवाल, 23/47/111 महादेवी भवन, किदवई नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश-211006 Mob. : 0532-2500624, 09415702805, Email: abhishekjaiswal128@gamil.com
पुत्र : अन्शुल जायसवाल 10-04-1987, 5'10" Fair, Slim, Handsome, कॉनवेन्ट एजुकेटेड, B.Tech (Electronics Communication) राष्ट्रीयकृत बैंक में असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत, Civil Services के लिए प्रयासरत।

25. **अभिभावकः प्रदीप कुमार जायसवाल,** नियर सागर आर्ट, P.O. Kharmanchak, Bhagalpur (Bihar) Pin-812001 फोन-8709162766, 8252924240
Email=rimajaiswal64@gmail.com
पुत्री- रीमा जायसवाल : 30-3-1991, 5'1", रंग- साफ, M.Com, (ACCT) Diploma in Computer Application. Banking. संगीत व पाकशास्त्र की रूचि।

26. **अभिभावक :** श्री रमेश बाबू जायसवाल (Ex-Air India), गौत्र-सौगारा, सी-7/207, यमुना विहार, दिल्ली-110053 (M) 9818970975
पुत्री : शिल्पा जायसवाल 26-11-1995, (7.00 A.M. Delhi) 5'3", B.A. (History Hon.), Doing D.I.E.T. from Gwalior in 2nd year, सुंदर, आकर्षक, स्मार्ट।

27. **अभिभावक :** श्री राकेश जायसवाल (Own two renowned Hotels at Moga, Real Estate Business, and Rental Income), M : 9316273798, 9888043798
पुत्र : शुभम जायसवाल, B.A, LL.B, Preparing for Judicial, 5'8", 26-1-1991, (3.11PM, मोगा) गोरा, आकर्षक।

28. **अभिभावक :** श्री राजेश कुमार, 56/L-I, कृष्णापुरी, साउथ बोरिंग रोड, पटना-800001, M-9234757531, 8521342371.
पुत्रीः मुदिता जायसवाल 15-3-89 5'4", Fair, B.A, PDGM, Comp. Sc., सम्पन्न परिवार अपेक्षित वर, बिहार पटना के समीप और सर्विस या व्यवसाय हो।

29. **अभिभावक :** श्री सुरेन्द्र कुमार जायसवाल (Engineer), D-3, Rachna Vihar, Borkute Layout, Narendra Nagar, Nagpur-440015 (M) 09595483195, 09372718546,
Email : skjaiswal5@rediffmail.com
पुत्र : अनुराग जायसवाल, जन्म 28.2.1980, (5'9")] रंग-गेहुँआ, B.Com (Computer Application), Nagpur University, Working as Accountant with M/s GAMON India Ltd., Posted at Mumbai.

30. **अभिभावक :** श्री संतोष कुमार जायसवाल (प्रसिद्ध व्यवसायी) जायसवाल निवास, सोना बाबू का गैरेज, हाजीगंज, पटना सिटी पटना (बिहार) M : 8252518584, (0612)-2616236, Whatsapp : 9835298796
पुत्र : हितेष जायसवाल, 5'8", जन्म 19-9-1989 (पटना), LL.B., B.Com., NSSL लिमिटेड, नागपुर में Asstt. G.M. पैकेज 12 लाख रुपये; वर्तमान पता : 101F, Block 5, रिंग रोड त्रिमूर्ति नगर, नागपुर (महाराष्ट्र), सुंदर, अत्यंत स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

31. **अभिभावकः श्री सुरेशचंद जायसवाल,** प्रो. रामचंद्र शिव रेवडध अलवर, मकान नं. 710, आबकारी गोदाम के सामने, ईव्ज चौराहा, मेरठ शहर M. 9837426871, 9808114635
पुत्र- अनुज कुमार जा., (ऐडवोकेट) आयु 32 वर्ष, 5'8", B.Com., LL.B. मेरठ कोर्ट में वकालत कर रहे हैं।

32. **अभिभावक-** राजकुमार वालिया, (Rd. JE) H.No. 473 Dalima Vihar, Rajpura, Dist. Patiala (Pb.)-140401 M.-9888027110
पुत्र- अमित कुमार वालिया, 5'7", 12-8-1975 (05:45am S Nabha Pb) Australia Citizen, Fiar Taxi operator, 40 lac package

33. **अभि०–** डा. एस.डी. घनेटवाल (जायसवाल), B-1/8 गांधी पथ चित्रकूट योजना वैशाली नगर जयपुर (राज.) -302021, M 09413900991, 0141-4020789
पुत्र– सिद्धार्थ घनेटवाल (जायसवाल) (15-2-1992 जयपुर, राजस्थान), B.Tech. com. Science Software Engineer in HPE Bangalore 6', अच्छा पैकेज बी.टेक. तथा कार्यरत कन्या अपेक्षित।

34. **अभिभावक–**श्री सुरेश कुमार जायसवाल (सरकारी सेवा) वार्ड नं. 4, लक्ष्मीबाई मार्ग, खाटी कुंडी चौक, खिलचीपुर जिला-रायगढ़ (म.प्र.) फोन न.–7879161099, 9669401914
पुत्री–आस्था जायसवाल, जन्म–6-12-1992, 26 वर्ष (19.55 खिलचीपुर) 5'6', M.Tech (IT), T.C.S. इंदौर में सेवारत पैकेज 5.6 लाख

35. **अभिभावक–** प्रोफेसर डा० टी० एन० चौधरी (रिटायर्ड प्रोफेसर ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट) जवाहर लाल रोड (चैम्बर ऑफ कामर्स के पास) सरैयागंज, मुजफ्फरपुर (बिहार) 842001 मोबाइल नं०. 9835229883, (0621)-2246105
पुत्र– यशस्वी आलोक 38 वर्ष गोरा 5'7", MBA, MCA एवं M.Tech निदेशक कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एंड टेकनोलाजी। आय 15 लाख प्रतिवर्ष गोरी टेक ग्रेजुएट कन्या अपेक्षित।
पुत्री– डा० रजनी जायसवाल BHMS, MBA गोरी 5'2" HR Manager in MNC नई दिल्ली, 36 वर्ष, पैकेज 10 लाख।
नातिन– मुदिता जायसवाल (पटना निवासी) अत्यंत गोरी सुन्दर 5'5" बी.ए. (इंगलिश) एम.बी.ए. की छात्रा पिता रि० शिक्षक श्री प्रमोद कुमार निवासी L1/56 श्रीकृष्णापुरी, पटना-8001

36. **अभिभावकः वीरेन्द्र कुमार जायसवाल (बिजनेसमैन),** Sumrit Mandal Campus, Jail Road, Tikamanhji, Bhagalpur M.: 943121533, 8969255995
पुत्र- आदित्य जायसवाल, 27-5-1988, (5.15 pm) 5'2", milky white, MBA, Asst. Manager, Canara Bank.

37. **अभिभावक–**श्रीमती विभा देवी (पत्नी स्व. ध्रुव नारायण प्रसाद गुप्ता) फोन न.–7488196750, 9560290732, 9911515253 (श्री सुनील, मामाजी)

पुत्री–राधा, जन्मतिथि–17-2-1989, (वेतिया पश्चिम चम्पारण) 5'4', fair, B.Sc. (Hons) in Zology.

38. **अभिभावक–**श्री किशन लाल राय, फोन न.–925056773, 9990252526 Redt. from DDA, Sultan puri, Delhi

पुत्र–संदीप राय, जन्मतिथि–12-7-1990, (दिल्ली) 5'8", B.A. दिल्ली सिविल डिफेंस में जाब, 25,000/- मासिक स्मार्ट, साफ रंग।

39. **अभिभावक :** Om Praksah Jaiswal, A cropolis flat no. 206, J-block Gothapatna, Odisha. Pincode-751003; Mob : 7750982025; E-mail : ajoytce@gmail.com, ssuniti1286@gmail.com

पुत्री: Omrita Jaiswal : DOB : 26/10/1990, Time : 7:30 pm, place : Pallahara (Odisha) Height : 5'5", complexion : fair, Education : MSc agriculture (Agronomy) BSc agriculture, Professional details : Working in Odisha govt. in Horticulture department as a Gazetted rank officer posted near Bhubaneshwar.

40. **अभिभावक :** Chanderkanta 5, Jooly Complex Abhiyanta Nagar, Nashik (Maharastra)-422008, Mob : 9871262622, 8983574660

पुत्र: Gaurav, DOB : 29/4/1982, Time 4:16 PM Delhi, Height : 5'8", Qualification : BCA, professtion ; Deals in finance and share market, Income : Rs 30,000/-pm, Mother Teacher, Elder sister settled in Canada.

41. **अभिभावक :** Rakesh Prasad Jaiswal () (Retired from Air Force, Maternal Grand Parent - Rajendra Nagar, Patna, Bihar, Mobile No. 9818780624, 9910174532; Email ID - rakesh@basawatech.com

पुत्री: Sakshi Jaiswal: DOB - 18th Sep 1993, Qualification - MA in English, B. Ed, CTET (Part I & II) Cleared. Advanced Diploma in Italian Language. schooling from Air Force Bal Bharati School, Lodhi Road, New Delhi. BA English (Hons) from Delhi University, B. Ed from IP University, Advanced Diploma in Italian Language from Daulat Ram College, DU, MA in English.

42. **Father:** Santosh Jaiswal (Dy. Director, ECS), (Home Town Gorakhpur, U.P.) D-2/10, Phase-I DRDO Township, CV Raman Nagar, Banglore, Karnataka Mob- 9958014369, 9873341668

Son: Rishabh Jaiswal, DOB 16-10-1997, B. Tech. from (BHU) Varanasi, Software Development Salary Package - 12 Lacs /p.a

43. **Father:** Ramesh Chandra Jaiswal, Rupani Sarees, Ambedkar Chowk Waidhan, Dist. Singrauli (MP) - 486886 Phone:- 9425389974

Daughter: Mansi Jaiswal, DOB 1-1-1994, 5ft 4-Inch, Complexion Fair, B. Tech. from IIT Allahabad, Working as Software Engineer in Microsoft. Salary Package - 18 Lacs /p.a

44. **अभिभावक–**श्री शैलेश राज मेवाड़ा, ACB, Office Street, आदिनाथ नगर, टैगोर नगर पाली, राजस्थान मो. न.–9462998760

पुत्र–मुकेश मेवाडा, जन्मतिथि–28-4-1989, 5'8", सायं 4.15 बजे, पावी, B.. LLB. साफ रंग।

45. **अभिभावक :** श्री के.के. जायसवाल व्यवसायी म.न. 2838, सै-15, सोनीपत, हरियाणा M : 9354824454

पुत्र : सिद्धार्थ जायसवाल, 10-9-1990 New Delhi, 6", 10 to 15 वार्षिक आय sale, purchases and aMC's of industries Genset, सुन्दर, पढ़ी लिखी, गृहकार्य में दक्ष कन्या चाहिए।

46. **अभिभावक:** श्री दिनेश कुमार जयसवाल Geology Dept. University of Allahabad, **Mob.** 9452695293, Address-21 A/1 केसरिया रोड़ चकिया इलाहाबाद,

पूत्री: आयुशी जायसवाल, DOB-24-02-1997, 7:45AM इलाहाबाद, 5'1", B.Com, MBA GB bykgkckn Working as a Enquiry officer, cahspor Microcredit Ltd, Varanasi, Package 5 Lakh/P.A.

47. **अभिभावक:** श्री राधेश्याम जायसवाल, सोती चौराहा, बड़हलगंज, जिला गोरखपुर पिन 273402, **मो.** 9935572972, 8527394426

पुत्र: अतुल कुमार जायसवाल, रंग साफ़, 5'7", जन्म वर्ष 1990, B.Com, M.Com, CA Final, M P में फाइनेंस मैनेजर.

48. **अभिभावक:** Sunil Kumar Gupta-ASC/RPSF; 204/148, Allen Ganj Prayagraj (U.P.) 211002; **Mob.** 7376484177, 8887842502, 9450181498

पुत्र: Siddharth Gupta, B. Tech. C.S., Age: 26 years; Hight:5'4"; Working in NMC, Required Graduate Virgo. Working/ Nonworking.

49. **अभिभावक:** Awadhendra Kumar (Retired from GAIL India Ltd as Dy. Gen. Manager.) Mob. 8826700440, 7081907573 Email ID: anujjaisal.101455@gmail.com Address: A-40, GAIL apartment, sector-62, NOIDA Distt: Gautam Budh Nagar, Uttar Pradesh- 201309

पुत्र: Anuj Jaiswal 29 Years, DOB:15 July 1992, Time:07:30 AM, Place: Allahabad, Uttar Pradesh, Gotra: Kashyap, Height: 5'5" Complexion: Medium, Body Structure: Normal, Educations B. Tech Chemical Engineering. Professions Manager (E3) Brahmaputra cracker and polymer Ltd. Income: INR 1700000 / Year

50. **अभिभावक : श्री आनन्द कुमार जायसवाल, 28/A, 40 फीट रोड, पटेल नगर, मुगलसराय, चन्दौली, पिन 232101. मोबाइल न.–7376552127, 7007097405**

पुत्र : कौशल जायसवाल 5'10'', 29 वर्ष, सुन्दर, स्मार्ट, आकर्षक, ग्रेजुएट, एम.बी.ए. नरसीमुंजी से पत्राचार माध्यम, पैकेज 6 रु. लाख

51. **अभिभावक–**सुरेश शाह Businessman (Proprietor at Shah Electronics, Lajpat Rai Market, Delhi)
मोबाइल न.–9818625007
पुत्र–सिद्धार्थ शाह
जन्मतिथि–04-April-1992, 5'7', Pursuing CFA (Chartered Fianancial Analyst) Graduation : B.Com(Hons.) from B.R. Ambedkar College,University of Delhi, Occupation : Propriator at Fans Manufacturing Business in Moti Nagar, Delhi (Also works in family owned business)

52. **अभिभावक :** C.P. Antal (रिटार्यड Escutive Engg. (PWD) President Esstt. New Delhi, B-3/728 एकता गार्डन, पटपड गंज, दिल्ली
मोबाइल न.–9760666029
भतीजे : लव कर्णवाल, कुश कर्णवाल जन्मतिथि 10/12/93 AM, 5'7'', B.Com.+Diploma in Engineering, Working Service Engineering ICU Ventilater

53. **अभिभावकः** Anil Kumar Jaiswal- Electronic Engineer, 122A/11, Gautam Nagar, New Delhi-110049, Mob. 98106 01579;E-Mail:jkanil@hotmail.com
पुत्रीः Mayuri Jaiswal, B. Tech. Bio-Technology, DOB. 13-06-1993, Time: 01:47 AM; Place: Bareilly; Height: 5' 6"; Deputy Manager in reputed company of Noida.

54. **अभिभावक :** श्री कृष्ण कुमार जायसवाल, (Retd Delhi Govt.) 1/11445, Subhash Park Shahadara Delhi-32 Ph : 9818655927, 9250134627
पुत्र : तुषार जायसवाल, 13-5-1992, Delhi, 5'10", सुन्दर स्मार्ट, MBA (IT) B.Tech Engineer Noida vegetarian family, 5 Lac P/A

55. **अभिभावक :** श्री सुरेश कुमार जायसवाल, (Business man) R-5/114 Raj Nagar Gzb.-201002 UP Ph : 9313546502, 9927752659
पुत्री : रिचा जायसवाल, 15-1-1998, (7:12 PM, दिल्ली) 5'4", BBA (GGSIPU Delhi) Advance Diploma in culinary Arts, APCA Bangalore.

56. **दिल्ली स्थित प्रसिद्ध NIFT (National Institute of Fashion Technology) से 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के माध्यम से Leather Fashion Technology में दक्षता प्राप्त 24 वर्षीय (13-2-1997) ग्रेज्युएट सुन्दर गौरवर्ण, सुशील सुयोग्य स्मार्ट कन्या के लिये प्रतिष्ठित परिवार के सुशिक्षित, सुस्थापित योग्य वर की आवश्यकता है। कृपया सम्पर्क करें: दिल्ली M-9013262811**

57. **अभिभावकः** Mr Ranjit Choudhary, Surya Nagar, Ramprastha Colony, Delhi, India Phone no: +91 9717405875
पुत्रः Rishabh Choudhary, Philadelphia/ New York DOB & Place of Birth: 04/11/1993: 21.45, Alwar, Rajasthan Height: 5.7" Education: MS in Business Analytics from Drexel University, Philadelphia, USA - 2021 B.Tech in Electronics & Electrical Engineering from Rajasthan Technical University, India - 2017.

58. **अभिभावक :** भोला नाथ जायसवाल (सरकारी नौकरी), F-83 कुंवर सिंह नगर, दिल्ली-41
मोबाइल न.–9968936545
पुत्री : सुनीता जायसवाल 5'2'', 04 -01- 1995, सुन्दर, गोरा, 12वी पास / दिल्ली डिप्लोमा - नर्स (G N M) पश्चिम विहार प्राइवेट हॉस्पिटल मे कार्यरत ।

59. **Father-** Late Mr Devesh Kumar Jaiswal Mother's Meenu Jaiswal (Rtd School Principal) Contact - 9899289937
Son : Harsh Vardhan Jaiswal, DOB: 18th April 1994 Birth Time: 5:30 AM, Height: 5'8" Qualification- B.Tech from IIIT-Delhi Working in a MNC in Delhi, Package: 37 lacs

60. **Father-**Madan Lal Jaiswal S/O late Murli Chand Jaiswal from Lodha Mandi Peeth Bazar Jwalapur Haridwar (Uttrakhand) 249407 Ph. No.- 9012654987
Daughter-Khushboo Jaiswal, Date of birth-1 July 1993, Birth place-Jwalapur Hridwar, Height- 5'2'' Colour complextion- fair yellowish Qualification- graduate with B.A, knowledge of basic computer with tally Work experience- teaching and accounting work.

61. **Father-**Shri Jai Prakash Jaiswal, Retired, 163, Panchwati enclave, Sector 4A , Shatabdi Nagar, Delhi road, Meerut. Contact Number : 9759913561.
Son. Sanchit Jaiswal, Date of Birth : 22 April 1993 Time of Birth : 7:18 AM Place of Birth : Modinagar, Uttar Pradesh Rashi : Varishabha (Taurus) Complexion : Wheatish Height : 5 feet 9 inches Education : Master of Business Administration from Arunachal University. Bachelors of Hotel Management & Technology from AKTU, Lucknow. Job/Occupation : Brand Ambassador for Brown Forman at T-3 IGI Itnl Airport, New Delhi. Salary : 7-8 lacs.

62. **Father-**Mr. Alok Kumar Gupta, Retired (Indian Air Force) Delhi Contact : 9711289365, 9654122623
Son-Ragesh Jaiswal, D.O.B : Sep,1995, Height : 6'0" Graduation : BTech from IP University (2015-2019) Designation : Currently working as

Senior Business Analyst in Polestar Solution, Noida (It's been 3 Years) Salary : 30 L.P.A.

63. **Father-**Sh. Kishan Lal Rai, Retired From (DDA), Sultan Puri New Delhi, Contact No : 9990252526, 7015301485, 7027064031
Son-Sandeep Rai (Sonu) Dob :12/07/1990 (12:12PM) Birth Place : Delhi Height :5'8 Manglik :Yes Education : B.A (Delhi University) Delhi Transport Corporation (Govt) Salary : 30000/-

64. **Father-**Piyush Singh Jaiswal, Service, now started his own business Indirapuram, Delhi/NCR
Son-Kshitij Singh, Dob : 08/11/1994(non-maglik) Time: 5:54 am (Rourkela) Height: 5°10" Phone: 8376915924 Qualification- B.E. (IIT Gandhinagar-Electrical) MBA (IIM Lucknow) Job: Searce, Pune, 27 Lakhs(present), RELIANCE JIO (R&D), MUMBAI (previous)

65. **Father-**Dr Avneesh Jaiswal, MD in Pediatric private practitioner, 759 Civil Lines, Opposite distt Judge, Sitapur Phone no: 9335156018(Mama) 9236036557(Mother)
Son-Dr. Satvik Jaiswal. Age:29years Height: 6 feet Weight: 80 kg Education: MBBS, MD in Pediatrics English, Hindi Birthdate: September 21,1993 non medico will be also considered.

66. **Fathers:** Dr Ram kumar Jaiswal MBBS MS (Optha) HOD BRD Medical college Gorakhpur. Mobile no 9452450502(mother)
Daughter: Dr Nikita jaiswal MBBS Currently Preparing For Neet Pg And Non PG JR 28years medium built and fair. Preferably looking for doctor only (postgraduate) pursuing or completed.
Son: Dr Nikhar jaiswal MBBS preparing for NEET PG 29 years medium built and fair. Mobile:- 9452450502 (mother).
Preference Medico girl pursuing or completed post graduation

67. **Fathers:** Anil Jaiswal (BusinessMan), Buxar, Bihar
Daughter: Ekta Jaiswal, D.O.B - 21/01/1999, Height:- 5.2, Complexion:- Fair
Education: Post Graduate (MBA), Working as HR in MNC (Birlasoft Ltd.) M:- 7761962755

68. **Fathers:** Ram Swaroop Prasad Jaiswal, Obra, Aurangabad, Bihar
Son: Krishna Jaiswal, D.O.B-22/05/1993, Height:- 5.9, Complexion Fair, Education: Graduate History Hons. from Delhi University, Persuing M.C.A from (IGNOU) Occupation: Family Business, Brother :- Ajay Jaiswal (Dwarka, Delhi) Mobile:- 9990372173, 9798498982

69. **Fathers:** Virender Chaudhary Business Man in Trading of electrical and electronics industry (Manufacturing /Import/Export) Own Company: - M/s Chaudhary enterprises, Delhi
Son: Shravan Kumar Chaudhary, D.O.B - 19.08.1991, Gotar- Kashyap Height:- 5.8
Education: B.Tech. Electrical and Electronics from Guru gobind singh university, Delhi (Regular) Occupation: Business Man in Trading of electrical and electronics industry (Manufacturing /Import/Export) Own Company: M/s Daksh Enterprises, Delhi
Mobile:- 9811243318/ 9899955473

70. **Fathers:** Arun Jaiswal, Post AGM in Yamaha moter cycle Live in Faridabad, Haryana, Mobile No 9971240907, 9999450614
Son: Kshitij Jaiswal, Date of birth 9-3-1995 3:10 P.M. Height 6' feet Complexion. Wheatish B. Tech in Computer Science, Jaypee institute of Technology Noida, Job Nice Technology pune, Package 25 lac +

71. **Mama :** Sunil Kumar Jaiswal B-749, New Ashok Nagar, Gali No. 22 East Delhi-96 M. 9911515253
Daughter: RADHA SONI, Height: 5' 3" Complexion: Fair Birth Details: 17 February 1989 Bettiah (West Champaran, Bihar) B.Sc. (Honors) in Zoology from Delhi University.

72. **अभिभावक: ममता जायसवाल** w/o स्व. श्याम जी जायसवाल (शिक्षा विभाग में सरकारी जॉब) हनुमत नगर कालोनी साकेत हॉस्पिटल के पीछे आयोध्या (फैजाबाद) मो. न.–9793465640
पुत्री- सौम्या जायसवाल (आंशिक मांगलिक) 5'1" 23-04-1995 रंग साफ, स्मार्ट, सुन्दर B.Sc., B.T.C. (Up Tet, C.Tet Qualification हेतु सरकारी जॉब या प्राइवेट जॉब वाला वर की आवश्यकता है लोकल शहर और सरकारी जॉब को प्राथमिकता।

73. **Father- Dharmendra Jaiswal**, Address-UP Chitrakoot karwi, Contact-73795 97331/ 73790 35195
Daughter- Anchal jaiswal, Birth date-10/12/ 1997, Birth Time-10:10 pm, Birth place-Chitrkoot karwi UP, Height-5'3", Education-M. S. C in (chemistry), Complexion-Fair, Diet-Vegetarian.

74. **Father- Shri Sudhakar Jaiswal**, Business man Address-Civil line ITI road Fatehpur UP, Contact-9169809259
Son- ABHISHEK JAISWAL, Mangalik, Birth date-19-09-90, Birth Time-10:10 pm, Height-5.11, Education-Graduation Kirori Mal College University of Delhi, Occupation: Manager (Scale 2) in IDBI Bank, Income : 14 lakhs pa.

75. **Father- Sh. Rajendra Kumar Jayaswal**, PA to Collector(Rtd) Gwalior M.P Govt. Address: Main Road Daulatganj Lashkar Gwalior, M.P-474001 , Contact-9425336094, 9425745385
Son- Mr. Aditya Jayaswal, Birth date-06.09.1989, Birth Place: Gwalior, M.P, Birth Time-09:16 am, Height-5'6.5'', Education: B.E (Electronics & Communication), Schooling-KV NO.1 , Occupation: Govt. Job, JTO BSNL, Income : 10 lacs p.a.

76. **Father- Dinesh Chandar Jaiswal**, 113 Bihari Kuti lukarganj, Contact-9305094705
Son- Sudhakar Jaiswal, Education: MA, Civil Line ITI Road-Fatehpur UP, Pin code 212601, Contact:9169809259

तलाक शुदा (Divorces'sr), विधवा (Widow)

1. **अभिभावक-** श्री आनन्द स्वरूप जायसवाल, 10/26, सेक्टर-3, राजेन्द्र नगर साहिबाबाद 201005 (गाजियाबाद) उ.प्र., M.-9871262622
पुत्र- उत्तम कुमार, 35 वर्ष, **तलाकशुदा,** कोई संतान नहीं है, जन्म 23-07-1977 (मथुरा, 10.10 P.M)

2. **अभिभावक :** श्री श्यामसुंदर जायसवाल, ठाकुर विलेज, कांदिवली (East) Ph 400101
पुत्र : Divorcee 38 वर्ष, 5'8" सुन्दर, स्लिम, स्मार्ट, आकर्षक, प्रतिभाशाली, कांवेंट प्रशिक्षित, B.Com, LL.B. व्यवसाय में सुस्थापित, **विवाह के बहुत थोड़े समय पश्चात ठोस कारणों से अलगाव हो गया।** सुन्दर, शिक्षित अच्छे परिवार की कन्या अपेक्षित। विवरण प्रेषित करें E-mail : vivah6@hotmail.com

3. **अभिभावक :** स्व0 रमेश सिंह वर्मा, H.No. 12, आनंद गार्डन, राजेन्द्र पार्क पुलिस स्टेशन के पास, रेलवे स्टेशन के पास गुड़गांव-122001, M : 9136760393
पुत्र : राकेश सिंह **(तलाकशुदा)**, 34 वर्ष, मैट्रिक पास, 5'5", स्वस्थ, गेहुआ रंग, अपना मकान, अपनी किराने की दुकान।

4. **अभिभावक :** श्री अजय कुमार जायसवाल H.No. 485 मेसर्स आयुष फ्लोर मिल्स पोस्ट घोड़ासहन जिला पूर्वी चम्पारण (बिहार)-845303
पुत्री : अर्पिता जायसवाल (तलाकशुदा), 32, वर्ष 5'5", रंग गोरा सुंदर सुशील ग्रेजुएट मानसिक तनाव के कारण संबंध विच्छेद सुंदर शिक्षित परिवार, संतान रहित वर अपेक्षित।
Email: Subu4u87@gmail.com, Mob. No. 9560356897

5. **अभिभावक :** श्री रामचन्द्र चौधरी, (Acctt, Hotel Midway), A-1/231, सेक्टर-4, रोहिणी, दिल्ली-110085, M-9211098672, Email : dchoudhary90@gmail.com
पुत्री : ज्योति चौधरी **(तलाकशुदा)**, PGDFT, M.Com (Du), Adriel High School, Delhi में शिक्षिका, जन्म 12-1-1988, 5'4" वेतन 15000/- प्रतिमाह, अन्य शिक्षेतर गतिविधियों में सक्रिय भाग।

6. **अभिभावक: श्रीमती मीना जायसवाल,** (W/o स्व. राजेन्द्र जायसवाल) संस्कृति अपार्टमेंट Upper Ground Floor, 4, Plot No. 225, Niti Khand-I, Indirapuram संस्कृति रेंजीडेंसी गाजियाबाद-201010 (यू.पी.) फोन-8448219160, 9415132661
पुत्री- सुमन (तलाकशुदा) 27-08-1988 (वाराणसी, 3 AM), 29 वर्ष, 5'3", साफ रंग, एम.ए. (इंग्लिश)।

7. **अभिभावक:** Sh. Y.P. Ahluwalia, 109 Nimri Colony Ashok Vihar Phase-IV Delhi-110052, M : 9868704809
पुत्र- Aman Walia, (7th Ocober 1974,) Govt Service in M.C.D. as Astt Sanitary Inspector (Pure Vegitarian) **तलाकशुदा,** Height 5'8", fair, salary 50,000 + स्मार्ट।

8. **अभिभावक: श्रीमती सम्पूरन जायसवाल,** (W/o स्व. सुरेश कुमार जायसवाल) G-194-195, जहांगीर पुरी, दिल्ली-33 फोन-9873809288, 9684750486
पुत्री- अंजू जा. (तलाकशुदा कोई बच्चा नहीं) 28-07-1979 (दिल्ली, 7 AM), 5'3", M.B.A., गेहूंआ रंग, प्राइवेट सर्विस 15,000/- मासिक।

9. **अभिभावक: रिटायर्ड इंजीनियर वेस्टर्न रेलवे, Pelican-15, Aakriti Eco city, Bhopal-462039 7666933311; sjaiswal69@yahoo.co.in**
सुनील जायसवाल (तलाकशुदा), 23-7-1969, 6'1", complexion very fair, MBA (Finance) from Institute for Technology and Management, Mumbai, BE(CS) from Nagpur University. Annual Income 25 lacs to Rs. 30 lacks per annum.

10. **अभिभावक: डा. शीतल पी. जायसवाल,** (Chief Excutive & President Mehta Group of Campanies, 2/92, Liberty Grandionagar, Ghatkopar (E) Mumbai-400077, M.-7758970403, 9869461650, Email: krs3ram@gmail.com
पुत्र- संदीप जायसवाल (तलाकशुदा) 2-08-1972 (वाराणसी, युपी, 5'11", B.E. (Production), MS(USA) Fair & Handsome, AS (Applied Science, USA) presently working at US Multinational in Mumbai, package 48 Lac p/a.

जायसवाल जागृति के संस्थापक

श्रद्धेय स्वर्गीय श्री पन्ना लाल जायसवाल, श्रद्धेय स्वर्गीय श्री बाल्मिकी चौधरी, श्रद्धेय स्वर्गीय श्री राजा राम जायसवाल

जायसवाल जागृति के पदाधिकारी (2021-2023)

डॉ अशोक चौधरी (अध्यक्ष): 9810056923
श्री बृजमोहन जायसवाल (महासचिव) : 9868241044
श्री माखन चौधरी (वित्त व्यवस्था) : 9911213033
श्री पंकज जायसवाल (कोषाध्यक्ष) : 9818426123
श्री अशोक कुमार जायसवाल : 9818581776
श्री नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल 9582793033

जायसवाल जागृति संस्था नीति निर्धारण/प्रबन्ध समिति

श्री कृष्णदास चौधरी : 9868801751
श्री कैलाशनाथ गुप्त : 8882019312

व्यवस्था एवं सहयोग

श्री बृजमोहन जायसवाल (प्रत्रिका प्रेषण प्रभारी) 9868241044
श्री हरिशंकर जायसवाल (छायाकार) : 9811131914
श्री शीतल प्रसाद जायसवाल (वैवाहिकी व कार्यक्रम व्यवस्था): 7827621475
श्री अजय जायसवाल (Website + संयोजक युवा मंच):
9990372173, 9818389050

महत्त्वपूर्ण सूचना (1)
'जायसवाल जागृति' सदस्यता-शुल्क

सदस्यता शुल्क की दरें इस प्रकार हैं:

संरक्षक सदस्य : **11,000/-** रु. (परिचय रंगीन फोटो सहित)
अधिष्ठाता सदस्य : **5,100/-** रु. (विस्तृत परिचय फोटो सहित)
सम्मानित सदस्य : **2,500/-**रु. (संक्षिप्त परिचय फोटो सहित)
आजीवन सदस्य : **1500/-** रु. (7 वर्ष के लिए)

विज्ञापन-दरें

आवरण (कवर) चौथा पृष्ठ	: **5,100/-** रु.
आवरण (कवर) द्वितीय पृष्ठ (संरक्षक)	: **11,000/-** रु.
आवरण (कवर) तृतीय पृष्ठ	: **3,000/-** रु.
विशेष रंगीन पृष्ठ	: **2,500/-** रु.
साधारण पृष्ठ	: **1,500/-** रु.
साधारण आधा पृष्ठ	: **750/-** रु.
साधारण चौथाई पृष्ठ	: **400/-** रु.

ध्यानाकर्षण : जिन माननीय सदस्यों की वार्षिक सदस्यता पूर्णतः समाप्त हो गई है, सदस्यगण कृपया **1500/-** रु. का शुल्क पत्र प्रेषित करके आजीवन सदस्य बन जाएं, अन्यथा उनकी सदस्यता स्वयमेव समाप्त हो गई है। नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य कर दिया गया हैं। ध्यान रखें। जिन सदस्यों को हमारे प्रामाणिक प्रयासों के बावजूद डाक से पत्रिका नहीं मिल पाती है, वे कृपया एक वर्ष का 200 रुपये का अग्रिम कोरियर-शुल्क प्रेषित करके कोरियर से पत्रिका मंगा सकते है। राशि हमारे कोषाध्यक्ष के निम्नलिखित पते पर प्रेषित की जा सकती है।

महत्वपूर्ण सूचना (2)
जायसवाल जागृति वेबसाइट

Jaiswal Jagriti Has Launched It's Own Website

कम्प्यूटर क्रान्ति एवं सूचना-विस्फोट **Computer Revolution & Information Explosion** के इस युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना किसी भी जीवन्त संस्था के लिए अनिवार्य हो गया है। फलतः स्वजाति बंधुओं के लाभार्थ **www.jaiswaljagriti.com** नामक वेबसाइट का शुभारंभ किया गया है। हमारा **Email; jaiswaljagrity@gmail.com** है। आप इससे सम्बन्धित किसी भी जानकारी के लिए हमारे युवा मंच के सचिव, तथा वेबसाइट प्रबंधक श्री अजय कुमार जायसवाल *(Sr. Software Engineer)* से उनके **Email:ajayjaiswal.india@gmail.com** तथा मो. न. 9990372173 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं।

बन्धुवर, समाज के हर तबके के लोगों को अपने लड़के-लड़कियों के लिए योग्य सम्बन्धों के चयन में कुछ न कुछ कठिनाइयाँ तो अवश्य पेश आती हैं, चाहे उसका सामाजिक अथवा आर्थिक स्तर कुछ भी हो। अतः अब आपकी सुविधा के लिए आप हमारे वेबसाइट में आपके विवाह योग्य लड़के-लड़कियों का फोटो सहित विवरण प्रकाशित करा सकते हैं। इसके लिए फिलहाल मात्र 500 रु (पांच सौ रुपये) का शुल्क रखा गया है। आप शुल्क की यह राशि निम्नलिखित दो में से किसी भी एक पते पर डिमांड ड्राफट / चेक या मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते है।

आप अपनी राशि हमारे **AXIS Bank** के **A/C no. 015010100247337, IFSC-UTIB-0000015** में भी सीधे जमा करा सकते हैं। किंतु इसकी रसीद अथवा इसकी फोटोप्रति हमारे पास निम्नलिखित में से किसी एक पते पर अवश्य भेंजें, अन्यथा यह पता लगाना मुश्किल होगा कि यह राशि किसने प्रेषित की है।

टाइपसेटिंग : शुभम् ग्राफिक्स : 9811021617 प्रभास गुप्ता
Email : shubhamprabhas@gmail.com

सम्पादकीय पत्र व्यवहार
नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल
विश्वनाथ भवन, बी-36, सैक्टर 23, नौएडा-201301
मोबाइल नं. 9582793033

कोषाध्यक्ष, जायसवाल जागृति
पंकज जायसवाल
17-डी, एम आई जी, डी.डी.ए. फ्लैटस्,
गुलाबी बाग, नई दिल्ली-110007
दूरभाष: 011-41687487 मोबाइल : 9818426123